MATS UNIVERSITY

NAAC GRADE A+ ACCREDITED UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR OPEN & DISTANCE EDUCATION

भारत के धार्मिक पर्यटन स्थल

बैचलर ऑफ़ आर्ट्स (बी.ए.)

तृतीय सेमेस्टर

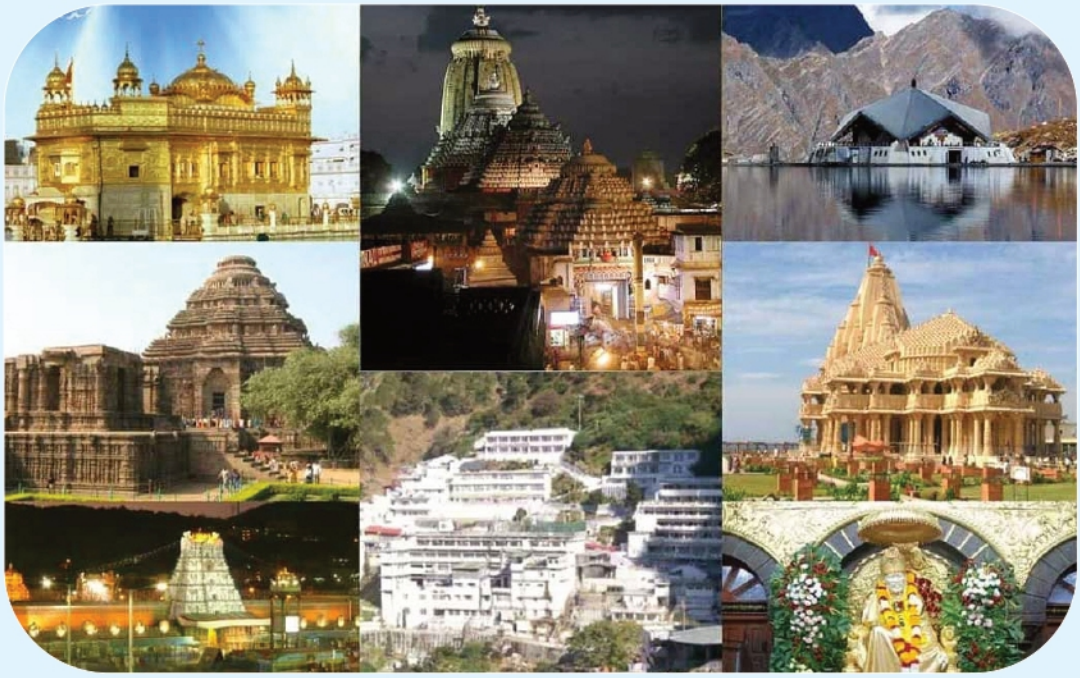

SELF LEARNING MATERIAL

COURSE DEVELOPMENT EXPERT COMMITTEE

1- Prof.(Dr.) Reshma Ansari, HOD Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh
2- Dr. Sudhir Sharma , Subject Expert ,HOD Hindi Department, Kalyan College, Bhilai
3- Dr. Kamlesh Gogia Associate Professor, MATS University ,Raipur, Chhattisgarh
4- Dr. Sunita Shashikant Tiwari Associate Professor, MATS University Raipur Chhattisgarh
5- Dr. Rajesh Kumar Dubey , Subject Expert, Principal , Shahid Rajeev Pandey Government College ,Bhatagaon , Raipur ,Chhattisgarh

COURSE COORDINATOR

Prof.(Dr.) Kamlesh Gogiya, Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

COURSE /BLOCK PREPARATION

(Dr.) Suparna Shrivastava, Asso. Prof. Hindi Department , MATS University Raipur Chhattisgarh

March, 2025

ISBN-978-93-49916-53-1

@MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

All rights reserved. No part of this work may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

Printed & Published on behalf of MATS University, Village-Gullu, Aarang, Raipur by Mr. Meghanadhudu Katabathuni, Facilities & Operations, MATS University, Raipur (C.G.)

Disclaimer-Publisher of this printing material is not responsible for any error or dispute from contents of this course material, this is completely depends on AUTHOR'S MANUSCRIPT.
Printed at: The Digital Press, Krishna Complex, Raipur-492001(Chhattisgarh)

अनुक्रमणिका

माड्यूल	विषय – भारत के धार्मिक पर्यटन स्थल – III	
माड्यूल – 1	**चार धाम यात्रा** इकाई – 1 उत्तराखंड की चार धाम यात्रा	1-5
	इकाई – 2 12 ज्योर्तिलिंग	6-10
	इकाई – 3 कुम्भ	11-15
	इकाई – 4 बुद्धिज्म, सारनाथ, वैशाली, कुशीनगर	15-18
माड्यूल – 2	**इस्लाम और क्रिश्चनीयटि** इकाई– 5 अजमेर	19-23
	इकाई– 6 हाजीअली दरगाह (मुबई)	24-27
	इकाई – 7 हजरतबल श्रीन (श्रीनगर), गोवा	28-30
माड्यूल – 3	**जैनिज्म** इकाई– 8 समवेद शिखर (झारखंड)	31-32
	इकाई– 9 गिरनाथ गुजरात	33-36
	इकाई – 10 पावापुरी बिहार , दिलबारा	37-39
माड्यूल – 4	**सिखज्म** इकाई – 11 अमृतसर	40-60
	इकाई – 12 भटिंडा	60-75
	इकाई – 13 पटना	76-84

Acknowledgement

The Material (Pictures and images) we have used is purely for educational purpose. Every effort has been made to trace the copyright holders of material reproduced in this book. Sould any infringement have occurred, the publishers and editors apologize and will be pleased to make the necessary corrections in future of this book.

Unit –1

चार धाम

बद्रीनाथ धाम :

हिमालय के ि'खर पर स्थित बद्रीनाथ मंदिर हिन्दुओं की आस्था का बहुत बड़ा केंद्र है। य हचार धामों में से एक है। बद्रीनाथ मंदिर उत्तराखंड राज्य में अलकनंदा नदी के किनारे बसाहै। यह मंदिर भगवान विश्णु के रूप में बद्रीनाथ को समर्पित है। बद्रीनाथ मंदिर को आदिकाल से स्थापित और सतयुग का पावन धाम माना जाता है। इसकी स्थापना मर्यादा पुरु"ोत्तम श्रीराम ने की थी। बद्रीनाथ के द'र्ान से पूर्व केदारनाथ के द'र्ान करने का महात्म्यमाना जाता है।

चार धाम में से एक बद्रीनाथ के बारे में एक कहावत प्रचलित है कि 'जो जाए बदरी, वो ना आए ओदरी'। अर्थात जो व्यक्ति बद्रीनाथ के द'र्ान कर लेत ा है, उसे पुनः उदर यानी गर्भ में नहीं आना पड़ता है। मतलब दूसरी बार जन्म नहीं लेना पड़ता है। 'ास्त्रों के अनुसार मनु"य को जीवन में कम से कम दो बार बद्रीनाथ की यात्रा जरूर करना चाहिए।

मंदिर के कपाट खुलने का समय : दीपावली महापर्व के दूसरे दिन (पड़वा) के दिन 'ीत ऋतु में मंदिर के द्वार बंद कर दिए जाते हैं। 6 माह तक दीपक जलता रहता है। पुरोहित ससम्मान पट बंद कर भगवान के विग्रह एवं दंडी को 6 माह तक पहाड़ के नीचे ऊखीमठ में ले जाते हैं। 6 माह बाद अप्रैल और मई माह के बीच केदारनाथ के कपाट खुलते हैं तब उत्तराखंड की यात्रा आरंभ होती है।

6 माह मंदिर और उसके आसपास कोई नहीं रहता है, लेकिन आ'चर्य की 6 माह तक दीपक भी जलता रहता और निरंतर पूजा भी होती रहती है। कपाट खुलने के बाद यह भी आ'चर्य का वि"ाय है कि वैसी ही साफ–सफाई मिलती है जैसे छोड़कर गए थे।

जगन्नाथ पुरी : भारत के ओडि'ा राज्य में समुद्र के तट पर बसे चार धामों में से एक जगन्नाथपुरी की छटा अद्भुत है। इसे सात पवित्र पुरियों में भी 'ामिल किया गया है।'जगन्नाथ' 'ाब्द का अर्थ जगत का स्वामी होता है। यह वैश्णव सम्प्रदाय का मंदिर है, जोभगवान विश्णु के अवतार श्रीकृश्ण को समर्पित है।

इस मंदिर का वार्शिक रथयात्रा उत्सव प्रसिद्ध है। इसमें मंदिर के तीनों मुख्य देवता, भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भ्राता बलभद्र और भगिनी सुभद्रा तीनों, तीन अलग–अलग भव्य और सुसज्जित रथों में विराजमान होकर नगर की यात्रा को निकलते हैं।

रामेष्वरम : भारत के तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में समुद्र के किनारे स्थित है हिंदुओं का तीसरा धाम रामेष्वरम्। यह हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरा हुआ एक सुंदर षंख आकार द्वीप है। रामेष्वरम् में स्थापित षिवलिंग द्वादष ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। भारत के उत्तर में केदारनाथ और काषी की जो मान्यता है, वही दक्षिण में रामेष्वरम् की है। मान्यता अनुसार भगवान राम ने रामेष्वरम् षिवलिंग की स्थापना की थी।

यहां राम ने लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व एक पत्थरों के सेतु का निर्माण भी करवाया था, जिस पर चढ़कर वानर सेना लंका पहुंची। बाद में राम ने विभीशण के अनुरोध पर धनुशकोटि नामक स्थान पर यह सेतु तोड़ दिया था।

1. द्वारका : गुजरात राज्य के पष्चिमी सिरे पर समुद्र के किनारे स्थित चार धामों में से एक धाम और सात पवित्र पुरियों में से एक पुरी है– द्वारका। मान्यता है कि द्वारका को श्रीकृश्ण ने बसाया था और मथुरा से यदुवंषियों को लाकर इस संपन्न नगर को उनकी राजधानी बनाया था।

चार धाम की यात्रा करते समय हो सकता है कि ज्यादातर लोगों को यह नहीं मालूम हो कि ये चारों धाम कहां हैं और इनकी यात्रा का महत्व क्या है।

उत्तराखंड में गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा को ही चार धाम की यात्रा माना जा रहा है जबकि इन चारों की यात्रा करना तो एक धाम की यात्रा ही कहलाती है। इन्हें छोटा चार धाम कहा जाता है।

छोटा चार धाम : बद्रीनाथ में तीर्थयात्रियों की अधिक संख्या और इसके उत्तर भारत में होने के कारण यहां के वासी इसी की यात्रा को ज्यादा महत्व देते हैं इसीलिए इसे छोटा चार धाम भी कहा जाता है। इस छोटे चार धाम में बद्रीनाथ के अलावा केदारनाथ (षिव ज्योतिर्लिंग), यमुनोत्री (यमुना का उद्गम स्थल) एवं गंगोत्री (गंगा का उद्गम स्थल) षामिल हैं।

क्यों महत्व रखता है छोटा चार धाम : उक्त चारों ही स्थान पर दिव्य आत्माओं का निवास माना गया है। यह बहुत ही पवित्र स्थान माने जाते हैं। केदारनाथ को जहां भगवान षंकर का आराम करने का स्थान माना गया है वहीं बद्रीनाथ को सृश्टि का आठवां वैकुंठ कहा गया है, जहां भगवान विश्णु 6 माह निद्रा में रहते हैं और 6 माह जागते हैं। यहां बदरीनाथ की मूर्ति षालग्रामषिला से बनी हुई, चतुर्भुज ध्यानमुद्रा में है। यहां नर–नारायण विग्रह की पूजा होती है और अखण्ड दीप जलता है, जो कि अचल ज्ञानज्योति का प्रतीक है।

केदार घाटी में दो पहाड़ हैं– नर और नारायण पर्वत। विश्णु के 24 अवतारों में से एक नर और नारायण ऋशि की यह तपोभूमि है। उनके तप से प्रसन्न होकर केदारनाथ में षिव प्रकट हुए थे। दूसरी ओर बद्रीनाथ धाम है जहां भगवान विश्णु विश्राम करते हैं। कहते हैं कि सतयुग में बद्रीनाथ धाम की स्थापना नारायण ने की थी। भगवान केदारेष्वर ज्योतिर्लिंग के दर्षन के बाद बद्री क्षेत्र में भगवान नर–नारायण का दर्षन करने से मनुश्य के सारे पाप नश्ट हो जाते हैं और उसे जीवन–मुक्ति भी प्राप्त हो जाती है। इसी आषय को षिवपुराण के कोटि रुद्र संहिता में भी व्यक्त किया गया है।

नीचे है प्रमुख चार धामों की जानकारी

1. बद्रीनाथ धाम : हिमालय के षिखर पर स्थित बद्रीनाथ मंदिर हिन्दुओं की आस्था का बहुत बड़ा केंद्र है। यह चार धामों में से एक है। बद्रीनाथ मंदिर उत्तराखंड राज्य में अलकनंदा नदी के किनारे बसा है। यह मंदिर भगवान विश्णु के रूप में बद्रीनाथ को समर्पित

है। बद्रीनाथ मंदिर को आदिकाल से स्थापित और सतयुग का पावन धाम माना जाता है। इसकी स्थापना मर्यादा पुरुशोत्तम श्रीराम ने की थी। बद्रीनाथ के दर्षन से पूर्व केदारनाथ के दर्षन करने का महात्म्य माना जाता है।

चार धाम में से एक बद्रीनाथ के बारे में एक कहावत प्रचलित है कि 'जो जाए बदरी, वो ना आए ओदरी'। अर्थात जो व्यक्ति बद्रीनाथ के दर्षन कर लेता है, उसे पुनः उदर यानी गर्भ में नहीं आना पड़ता है। मतलब दूसरी बार जन्म नहीं लेना पड़ता है। षास्त्रों के अनुसार मनुश्य को जीवन में कम से कम दो बार बद्रीनाथ की यात्रा जरूर करना चाहिए।

मंदिर के कपाट खुलने का समय : दीपावली महापर्व के दूसरे दिन (पड़वा) के दिन षीत ऋतु में मंदिर के द्वार बंद कर दिए जाते हैं। 6 माह तक दीपक जलता रहता है। पुरोहित ससम्मान पट बंद कर भगवान के विग्रह एवं दंडी को 6 माह तक पहाड़ के नीचे ऊखीमठ में ले जाते हैं। 6 माह बाद अप्रैल और मई माह के बीच केदारनाथ के कपाट खुलते हैं तब उत्तराखंड की यात्रा आरंभ होती है।

6 माह मंदिर और उसके आसपास कोई नहीं रहता है, लेकिन आष्चर्य की 6 माह तक दीपक भी जलता रहता और निरंतर पूजा भी होती रहती है। कपाट खुलने के बाद यह भी आष्चर्य का विशय है कि वैसी ही साफ–सफाई मिलती है जैसे छोड़कर गए थे।

2. जगन्नाथ पुरी : भारत के ओडिषा राज्य में समुद्र के तट पर बसे चार धामों में से एक जगन्नाथपुरी की छटा अद्भुत है। इसे सात पवित्र पुरियों में भी षामिल किया गया है। 'जगन्नाथ' षब्द का अर्थ जगत का स्वामी होता है। यह वैश्णव सम्प्रदाय का मंदिर है, जो भगवान विश्णु के अवतार श्रीकृश्ण को समर्पित है।

इस मंदिर का वार्शिक रथयात्रा उत्सव प्रसिद्ध है। इसमें मंदिर के तीनों मुख्य देवता, भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भ्राता बलभद्र और भगिनी सुभद्रा तीनों, तीन अलग–अलग भव्य और सुसज्जित रथों में विराजमान होकर नगर की यात्रा को निकलते हैं।

3. रामेष्वरम : भारत के तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले में समुद्र के किनारे स्थित है हिंदुओं का तीसरा धाम रामेष्वरम्। यह हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से चारों ओर से घिरा हुआ एक सुंदर षंख आकार द्वीप है। रामेष्वरम् में स्थापित षिवलिंग द्वादष ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। भारत के उत्तर में केदारनाथ और काषी की जो मान्यता है, वही दक्षिण में रामेष्वरम् की है। मान्यता अनुसार भगवान राम ने रामेष्वरम् षिवलिंग की स्थापना की थी। यहां राम ने लंका पर चढ़ाई करने से पूर्व एक पत्थरों के सेतु का निर्माण भी करवाया था, जिस पर चढ़कर वानर सेना लंका पहुंची। बाद में राम ने विभीशण के अनुरोध पर धनुशकोटि नामक स्थान पर यह सेतु तोड़ दिया था।

2. द्वारका : गुजरात राज्य के पष्चिमी सिरे पर समुद्र के किनारे स्थित चार धामों में से एक धाम और सात पवित्र पुरियों में से एक पुरी है– द्वारका। मान्यता है कि द्वारका को श्रीकृश्ण ने बसाया था और मथुरा से यदुवंषियों को लाकर इस संपन्न नगर को उनकी राजधानी बनाया था।

3. उत्तराखंड जिसे 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है, अपनी धार्मिक और आध्यात्मिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ स्थित चारधाम यात्रा भारत के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थयात्राओं में से एक मानी जाती है। चारधाम यात्रा के अंतर्गत चार पवित्र धाम आते हैंः यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ। यह यात्रा हिन्दू धर्म में विषेश महत्व रखती है।

4. चारधाम यात्रा का महत्व जानिए–

6.चारधाम यात्रा का उद्देष्य आत्मषुद्धि, पापों से मुक्ति और मोक्ष प्राप्ति है। मान्यता है कि इन चार धामों की यात्रा करने से भक्तों के सारे पाप धुल जाते हैं और उन्हें भगवान का आषीर्वाद प्राप्त होता है। यही वजह है कि हर साल लाखों की संख्या में देष विदेष से श्रद्धालु यात्रा के लिए पहुंचते हैं।

7.क्या है यात्रा का क्रम, कहां से करनी चाहिए षुरुआत–

चारधाम यात्रा एक निष्चित क्रम में की जाती है, चारों धामों में से किस धाम की यात्रा आपको पहले करनी चाहिए। यात्रा के क्रम के अनुसार श्रद्धालुओं को अपनी यात्रा की षुरुआ यमुनोत्री धामी से करनी चाहिए। यात्रा का क्रम इस प्रकार है– यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और अंत में बद्रीनाथ।

यमुनोत्री धाम

10. यमुनोत्री धाम, यमुना नदी का उद्गम स्थल है और यमुनोत्री मंदिर यहाँ की मुख्य आकर्शण है। यह धाम समुद्र तल से 3,293 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। चारधाम यात्रा में श्रद्धालुओं को यात्रा की षुरुआत यमुनोत्री धाम से ही करना चाहिए। नीचे जानिए यमुनोत्री धाम के मुख्य आकर्शण और यहां तक आप कैसे पहुंच सकते हैं।

गंगोत्री धाम,

गंगा नदी का उद्गम स्थल है और गंगोत्री मंदिर यहाँ का मुख्य आकर्शण है। यह धाम समुद्र तल से 3,048 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यमुनोत्री धाम से चारधाम यात्रा की षुरुआत के बाद चारधाम यात्रा का दूसरा पड़ाव गंगोत्री धाम है। नीचे जानिए गंगोत्री धाम के मुख्य आकर्शण और गंगोत्री धाम दर्षन के लिए आप कैसे पहुंच सकते हैं।

केदारनाथ धाम

केदारनाथ धाम, भगवान षिव को समर्पित है और यह बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। केदारनाथ मंदिर समुद्र तल से 3,583 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। केदारनाथ धाम चारध ाम यात्रा का तीसरा पड़ाव है। यमुनोत्री, गंगोत्री के बाद श्रद्धालुओं को यात्रा के क्रम के अनुसार केदारनाथ धाम की यात्रा करनी चाहिए। आगे जानिए केदारनाथ धाम के मुख्य आकर्शण और कैसे आप बाबा केदार के दर्षन तक पहुंच सकते हैं।

बद्रीनाथ धाम

बद्रीनाथ धाम, भगवान विश्णु को समर्पित है और यह चारधाम यात्रा का अंतिम धाम है। बद्रीनाथ मंदिर समुद्र तल से 3,133 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। चारधाम यात्रा का आखिरी पड़ाव बदरीनाथ धाम है। यमुनोत्री, गंगोत्री और केदारनाथ धाम के बाद श्रद्धालुओं को बदरीनाथ धाम की यात्रा करनी चाहिए। नीचे जानिए बदरीनाथ धाम यात्रा के मुख्य आकर्शण और यहां तक कैसे पहुंचे।

चारधाम यात्रा का समय

चारधाम यात्रा का मौसम मई से अक्टूबर तक का होता है। इस समय के दौरान मौसम अनुकूल रहता है और सभी धाम खुले रहते हैं। मानसून के दौरान (जुलाई–अगस्त) भारी बारिष के कारण यात्रा में कठिनाइयाँ हो सकती हैं, इसलिए इन महीनों में यात्रा से बचना चाहिए। चारधाम यात्रा षुरु करने से पहले ऑनलाइन रजिस्ट्रेषन जरुर कराएं और स्थानीय प्रषासन से यात्रा का अपडेट जरुर ले लें।

ऑनलाइन पंजीकरणः चारधाम यात्रा के लिए अब ऑनलाइन पंजीकरण अनिवार्य कर दिया गया है। यात्री उत्तराखंड पर्यटन की आधिकारिक वेबसाइट (ीजजचेःध्ध्इंकतपदंजी–ामकंतदंजी.हवअ.पद) पर जाकर पंजीकरण कर सकते हैं। यात्रा के दौरान यात्रियों की सुविधा के लिए विभिन्न स्थानों पर मेडिकल कैंप, हेल्पडेस्क और विश्राम स्थल बनाए गए हैं। सरकार ने यात्रियों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिस बल और एनडीआरएफ टीमों को तैनात किया है। मौसम की स्थिति को देखते हुए समय–समय पर मार्ग को बंद या खोलने का निर्णय लिया जाता है।

यात्रा की तैयारी– चारधाम यात्रा षारीरिक और मानसिक रूप से थकान भरी हो सकती है, इसलिए उचित तैयारी आवष्यक है, नीचे जानिए किन तैयारियों के साथ आपको चारध ाम यात्रा पर आना चाहिए।

चारधाम यात्रा एक आध्यात्मिक यात्रा है जो जीवन को एक नया दृश्टिकोण देती है। इस पवित्र यात्रा में षामिल होकर न केवल धार्मिक अनुभव प्राप्त होता है बल्कि प्राकृतिक सुंदरता का भी आनंद लिया जा सकता है। यह यात्रा आत्मा को षांति और मानसिक संतुलन प्रदान करती है, और भारतीय संस्कृति और धरोहर की एक झलक देती है। चारधाम यात्रा की योजना बनाते समय नवीनतम अपडेट और सुरक्षा निर्देषों का पालन करना सुनिष्चित करें। इस पवित्र यात्रा का आनंद लें और अपने जीवन को आध्यात्मिकता और षांति से भरपूर बनाएं। तो आप कब आ रहे हैं देवभूमि उत्तराखंड में चारधाम यात्रा परकृ।

ज्योतिर्लिंग

'ज्योतिर्लिंग' षब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के दो षब्दों, 'ज्योति' और 'लिंगम्' से हुई है। ज्योति का अर्थ है, 'प्रकाष' और 'लिंगम्' का तात्पर्य भगवान् षिव की छवि या उनके चिन्ह से है। अतः ज्योतिर्लिंग का अर्थ है दृ सर्वषक्तिमान षिव का एक प्रकाषमान चिन्ह।

ज्योतिर्लिंग की कथा

षिव महापुराण के अनुसार, एक बार ब्रह्मा जी और विश्णु जी में सर्वोच्चता (सर्वश्रेश्ठता) को लेकर विवाद हो गया। इस विवाद का अंत करने के लिए, भगवान् षिव ने उन्हें एक कार्य सौंपा और स्वयं एक ज्योतिर्लिंग, प्रकाष का एक विषाल और अनंत स्तम्भ, के रूप में तीनों लोकों में प्रसारित हो गए। अब ब्रह्मा और विश्णु को अपने मार्ग पष्थक कर इस प्रकाषमान स्तम्भ के ऊपरी और निचले सिरों का अंत खोजना था। दोनों इस खोज में लग गए। ब्रह्मा जी ने आकर कहा कि उन्हें अंत मिल गया, लेकिन विश्णु जी ने यह कहते हुए अपनी पराजय स्वीकार ली कि उन्हें इस प्रकाषमान स्तम्भ का कोई अंत नहीं मिला। अंततः ब्रह्मा जी और विश्णु जी को ज्ञात हुआ कि वास्तव में भगवान् षिव की वह दिव्य ज्योति अनंत है और उसकी कोई सीमा नहीं है।

सभी ज्योतिर्लिंग मंदिर वही स्थान हैं जहाँ भगवान् षिव प्रकाष के एक प्रदीप्तमान स्तंभ के रूप में प्रकट होते हैं। बारह ज्योतिर्लिंग स्थलों में से प्रत्येक को उसके प्रमुख आराध्य, भगवान् षिव के एक विषिश्ट अवतार के नाम से जाना जाता है। इन सभी स्थलों पर पूजी जाने वाली भगवान् षिव की प्रमुख छवि 'षिवलिंग' है, जो अनादि और अंतहीन लिंग का प्रतिनिधित्व करती है और भगवान् षिव की अनंत प्रकृति का प्रतीक है।

12 ज्योतिर्लिंग के नाम और स्थान, सूची

निचे हर ज्योतिर्लिंग की जानकारी अलग–अलग दी गयी हैं। 12 ज्योतिर्लिंगों में से जिस ज्योतिर्लिग की जानकारी और इतिहास आपको जानना हैं उस ज्योतिर्लिग के नाम पर क्लिक करे।

2 ज्योतिर्लिंग के नाम और स्थान मैप

Somnath Temple

सोमनाथ मंदिर एक प्राचीन षिव मंदिर है जिसकी गिनती 12 ज्योतिर्लिंगों में सबसे पहले ज्योतिर्लिंग के रूप में होती है। सोमनाथ का अर्थ "सोम के भगवान" से है। सोमनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर के बारे में कहा जाता हैं की, इसका निर्माण स्वयं सोमदेव (चंद्रमा) ने षुद्ध सोने से किया था और फिर रावण ने चांदी से इसका नवीनीकरण किया था। इसके बाद कृश्ण भगवान द्वारा चंदन से और अंत में भीमदेव द्वारा पत्थर से बनाया गया था। इस मंदिर में कई बार महमूद गजनवी द्वारा लूटपाट किया गया था।

इस मंदिर का उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। यह एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थान और दर्षनीय स्थल है। षिव पुराण के अनुसार जब चंद्रमा को प्रजापति दक्ष ने क्षय रोग का श्राप दिया था तब इसी स्थान पर षिव जी की पूजा और तप करके चंद्रमा ने श्राप से मुक्ति पाई थी। लोककथाओं के अनुसार यहीं श्रीकृश्ण ने देहत्याग किया था। इस कारण इस क्षेत्र का और भी महत्व बढ़ गया। सोमनाथ भगवान की पूजा और उपासना करने से उपासक भक्त के क्षय तथा कोढ़ आदि रोग सर्वथा नश्ट हो जाते हैं और वह स्वस्थ हो जाता है।

मंदिर वास्तुकला की चालुक्य षैली में बनाया गया है। यहां भूमि के नीचे सोमनाथ लिंग की स्थापना की गई है। भू–गर्भ में होने के कारण यहाँ प्रकाष का अभाव रहता है। इस मन्दिर में पार्वती, सरस्वती देवी, लक्ष्मी, गंगा और नन्दी की भी मूर्तियाँ स्थापित हैं। भूमि के ऊपरी

भाग में षिवलिंग से ऊपर अहल्येष्वर मूर्ति है। मन्दिर के परिसर में गणेषजी का मन्दिर है और उत्तर द्वार के बाहर अघोरलिंग की मूर्ति स्थापित की गई है।

सोमनाथ मंदिर पताः

सोमनाथ मंदिर रोड, वेरावल, गीर सोमनाथ जिला, गुजरात– 362268

सोमनाथ मंदिर खुलने और दर्षन का समयः

मंदिर में प्रतिदिन सुबह 6 बजे से रात 9 बजे तक श्रद्धालु दर्षन कर सकते हैं। आरती सुबह 7 बजे, दोपहर 12 बजे और षाम 7 बजे होती है। मंदिर प्रांगण में रात साढ़े सात से साढ़े आठ बजे तक एक घंटे का साउंड एंड लाइट षो चलता है, जिसमें सोमनाथ मंदिर के इतिहास का बड़ा ही सुंदर सचित्र वर्णन किया जाता है।

कैसे पहुंचे सोमनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिरः

रेलवे मार्ग और सड़क मार्ग से सोमनाथ मंदिर आसानी से पहुंचा जा सकता है। सोमनाथ का निकटतम रेलवे स्टेषन वेरावल रेलवे स्टेषन है। लेकिन अगर आप फ्लाइट के माध्यम से भी सोमनाथ मंदिर जाना चाहते हैं, नजदीकी हवाई अड्डा, दीव हवाई अड्डा है, जो करीब मंदिर से लगभग 80 किमी दूर है। यहां से मंदिर तक पहुंचने के लिए आप टैक्सी या टेम्पो ले सकते हैं।

2). मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग मंदिर, आंध्र प्रदेष

आन्ध्र प्रदेष के कृश्णा जिले में कृश्णा नदी के तट पर श्रीषैल दृ ैतपेंपसंउ पर्वत पर श्रीमल्लिकार्जुन विराजमान हैं। इसे दक्षिण का कैलाष कहते हैं। यह मंदिर भगवान षिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक और देवी पार्वती के आंठ षक्ति पीठो में से एक है। मल्लिकार्जुन मंदिर भूतनाथ मंदिरों के समूह का एक भाग है तथा इस क्षेत्र का दूसरा सबसे प्रमुख मंदिर है। मंदिर का गर्भगृह बहुत छोटा है और एक समय में अधिक लोग नहीं जा सकते। षिवपुराण के अनुसार भगवान कार्तिकेय को मनाने में असमर्थ रहने पर भगवान षिव पार्वती समेत यहां विराजमान हुए थे।

स्कंद पुराण में श्री षैल काण्ड नाम का अध्याय है। इसमें उपरोक्त मंदिर का वर्णन है। इससे इस मंदिर की प्राचीनता का पता चलता है। तमिल संतों ने भी प्राचीन काल से ही इसकी स्तुति गायी है। कहा जाता है कि आदि षंकराचार्य ने जब इस मंदिर की यात्रा की, तब उन्होंने षिवनंद लहरी की रचना की थी।

इस मंदिर का निर्माण 1234 ईस्वी में होयसल राजा वीर नरसिम्हा द्वारा किया गया था। मंदिर की वास्तुकला द्रविड़ षैली में बनाया गया है। मंदिर परिसर 20000 वर्ग मीटर में फैला है और इसमें चार गेटवे टावर बना हैं जिन्हें गोपुरम के नाम से जाना जाता है। मंदिर प्रांगण में कई हॉल भी हैं और सबसे उल्लेखनीय मुख मंडप हॉल है। अनेक धर्मग्रन्थों में इस स्थान की महिमा बतायी गई है। इस ज्योतिर्लिंग के दर्षन मात्र से सभी कश्ट दूर हो जाते हैं।

मल्लिकार्जुन मंदिर का पताः

श्रीषैलम, नंदयला, आंध्र प्रदेष– 528101

मल्लिकार्जुन मंदिर खुलने का समयः

मंदिर रोजाना सुबह 5:30 से दोपहर 01:00 बजे तक दर्षन के लिए खुला रहता है। इसके बाद षाम को 06:00 से 10:00 बजे तक खुला रहता है। इस मंदिर में आरती प्रातः 05:15 से 06:30 तक होती है। संध्या आरती षाम को 05:20 से 06:00 तक होती है।

कैसे पहुंचे मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग मंदिरः

मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग पहुचने के लिए हमें पहले हैदराबाद पहुँचना होगा। हैदराबाद से मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग की दूरी 213 किमी है और हैदराबाद, श्रीषैलम का निकटतम हवाई अड्डा भी हैं। यहाँ से बस टैक्सी या अन्य साधनों से मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग पहुँच सकते है। इस मंदिर तक पहुँचने के लिए सबसे नजदीकी रेलवे स्टेषन मरकापुर रेलवे स्टेषन है। यह भारत के सभी प्रमुख रेलवे स्टेषनों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

3). महाकालेष्वर ज्योतिर्लिंग, उज्जैन, मध्य प्रदेष

महाकालेष्वर मंदिर भगवान् षिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से तीसरे स्थान पर रखा जाता हैं। यह भारत में सात मुक्ति–स्थलों में से एक हैय मतलब वह स्थान जो मनुश्य को अनंत काल तक मुक्त कर सकता है। यह मध्यप्रदेष राज्य के उज्जैन नगर में स्थित है। उज्जैन का पुराणों और प्राचीन अन्य ग्रन्थों में 'उज्जयिनी' तथा 'अवन्तिकापुरी' के नाम से उल्लेख किया गया है। कहा जाता है की अधिश्ट देवता, भगवान षिव ने इस लिंग में स्वयंभू के रूप में बसते है, इस लिंग में अपनी ही अपार षक्तियाँ है और मंत्र–षक्ति से ही इस लिंग की स्थापना की गयी थी। इसके साथ ही इसे भगवान षिव का सबसे पवित्र स्थान भी माना जाता है।

पुराणों, महाभारत और कालिदास जैसे महाकवियों की रचनाओं में इस मंदिर का मनोहर वर्णन मिलता है। स्वयंभू, भव्य और दक्षिणमुखी होने के कारण महाकालेष्वर महादेव की अत्यन्त पुण्यदायी महत्ता है। इसके दर्षन मात्र से ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है, ऐसी मान्यता है। एक कथा के अनुसार महाकालेष्वर मंदिर को पांच वर्शीय लड़के श्रीकर द्वारा स्थापित किया गया था जो उज्जैन के राजा चंद्रसेन की भक्ति से प्रेरित था ।

महाकवि कालिदास ने मेघदूत में उज्जयिनी की चर्चा करते हुए इस मंदिर की प्रषंसा की है। 1235ई. में इल्तुत्मिष के द्वारा इस प्राचीन मंदिर का विध्वंस किए जाने के बाद से यहां जो भी षासक रहे, उन्होंने इस मंदिर के जीर्णोद्धार और सौन्दर्यीकरण की ओर विषेश ध्यान दिया, इसीलिए मंदिर अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त कर सका है।

वर्तमान मंदिर को श्रीमान पेषवा बाजी राव और छत्रपति षाहू महाराज के जनरल श्रीमान रानाजिराव षिंदे महाराज ने 1736 में बनवाया था। इसके बाद श्रीनाथ महादजी षिंदे महाराज और श्रीमान महारानी बायजाबाई राजे षिंदे ने इसमें कई बदलाव और मरम्मत भी करवायी थी।

महाकालेष्वर मंदिर का पताः

उज्जैन नगरी , मध्य प्रदेष

महाकालेष्वर मंदिर खुलने का समयः

यह मंदिर प्रतिदिन सुबह 5 बजे से रात 11 बजे तक खुलता है। भक्तगण दर्षन सुबह 8 बजे से 10 बजे तक, सुबह 10:30 से षाम 5 बजे तक, षाम 6 बजे से षाम 7 बजे तक और रात 8 बजे से 11 बजे तक किए जा सकते हैं। यहां हर रोज अलसुबह भस्म आरती होती है। इस आरती की खासियत यह है कि इसमें मुर्दे की भस्म से भगवान महाकाल का श्रृंगार किया जाता है। हालाँकि इस आरती में षामिल होने के लिए पहले से बुकिंग की जाती है।

कैसे पहुंचे महाकालेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिरः

उज्जैन देष के हर हिस्से से अच्छी तरह जुड़ा हैं। महाकालेष्वर का निकटतम रेलवे स्टेषन उज्जैन जंक्षन है, जो मंदिर से मात्र 2 किमी दुरी पर स्थित हैं। इसके आलावा अन्य रेलवे स्टेषन चिंतामन, विक्रम नगर और पिंगलष्व हैं। नजदीकी हवाई अड्डा देवी अहिल्याबाई होल्कर हवाई अड्डा, इंदौर है जो मंदिर से लगभग 57 किमी दूर है। सड़क मार्ग से उज्जैन भी पहुँच सकते हैं।

4). ओंकारेष्वर ज्योतिर्लिंग, खंडवा, मध्य प्रदेष

ओंकारेष्वर (P कारेष्वर) मन्दिर भारत के मध्य प्रदेष के खंडवा जिले में स्थित है। यह मन्दिर नर्मदा नदी के बीच मन्धाता या षिवपुरी नामक द्वीप पर स्थित है। यह द्वीप हिन्दू पवित्र चिन्ह P के आकार में बना है। यहां दो मंदिर स्थित हैं– (1) P कारेष्वर, (2) अमरेष्वर। यह भगवान षिव के बारह ज्योतिर्लिंगओं में से एक है। मान्यता है कि तीर्थ यात्री सभी तीर्थों का जल लाकर ओंकारेष्वर में अर्पित करते हैं तभी उनके सारे तीर्थ पूरे माने जाते हैं।

ओंकारेष्वर षब्द का अर्थ है "ओंकार के भगवान" या ओम ध्वनि के भगवान ! इस मंदिर में षिव भक्त कुबेर ने तपस्या की थी तथा षिवलिंग की स्थापना की थी। जिसे षिव ने देवताओ का धनपति बनाया था। यहां ओंकारेष्वर ज्योतिर्लिंग के साथ ही अमलेष्वर ज्येतिर्लिंग भी है। इन दोनों षिवलिंगों की गणना एक ही ज्योतिर्लिंग में की गई है। ओंकारेष्वर स्थान भी मालवा क्षेत्र में ही पड़ता है।

ओंकारेष्वर लिंग किसी मनुश्य के द्वारा गढ़ा, तराषा या बनाया हुआ नहीं है, बल्कि यह प्राकृतिक षिवलिंग है। इसके चारों ओर हमेषा जल भरा रहता है। प्रायः किसी मन्दिर में लिंग की स्थापना गर्भ गष्ह के मध्य में की जाती है और उसके ठीक ऊपर षिखर होता है, किन्तु यह ओंकारेष्वर लिंग मन्दिर के गुम्बद के नीचे नहीं है। इसकी एक विषेशता यह भी है कि मन्दिर के ऊपरी षिखर पर भगवान महाकालेष्वर की मूर्ति लगी है। कुछ लोगों की मान्यता है कि यह पर्वत ही ओंकाररूप है।

ओंकारेष्वर मंदिर का पताः

मार्कंडेय आश्रम रोड, ओंकारेष्वर, खंडवा, मध्य प्रदेष– 450554

ओंकारेष्वर मंदिर खुलने का समयः

श्री ओंकारेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग हैं, यहां सालो भर भक्तों का जमावड़ा लगा रहता है। मगर, भगवान षिव के प्रिय सावन के महीने में यहां भक्तो की भीड़ ज्यादा रहती है। मंदिर खुलने का समय सुबह 5 बजे से रात 10 बजे तक रहता है। मंदिर में दर्षन का समय सुबह 5:30 बजे से दोपहर 12:20 बजे और षाम 4 बजे से 8:30 बजे के बीच कर सकते है।

कैसे पहुंचे ओंकारेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिरः

ओंकारेष्वर का नजदीकी रेलवे स्टेषन खंडवा जंक्षन है, जो मंदिर से लगभग 70 किमी दूर है। इंदौर, उज्जैन और खंडवा से ओंकारेष्वर के लिए बसें भी चलती हैं। आप प्राइवेट कैब भी ले सकते हैं। महाकालेष्वर का निकटतम हवाई अड्डा देवी अहिल्याबाई होल्कर हवाई अड्डा, इंदौर है जो मंदिर से करीब 85 किमी दूर है।

5). केदारनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर, उत्तराखंड

उत्तराखण्ड में हिमालय पर्वत की गोद में बसा केदारनाथ मन्दिर बारह ज्योतिर्लिंग में सम्मिलित होने के साथ चार धाम और पंच केदार में से भी एक है। हजारो साल पुराना यह मंदिर विषाल पत्थरो से बना हुआ है। प्राचीन साहित्य में मंदिर के निर्माण के बारे में कोई स्पश्ट पुश्टि नहीं है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि यह 3,000 साल पुराना है।

यह मंदिर उत्तराखंड राज्य में 11,755 फीट (3,583 मीटर) की ऊंचाई पर अलखनंदा और मंदाकिनी नदियों के तट पर केदार नाम की चोटी पर स्थित है। केदारखण्ड में द्वादष (बारह) ज्योतिर्लिंग में आने वाले केदारनाथ दर्षन के सम्बन्ध में लिखा है कि जो कोई व्यक्ति बिना केदारनाथ भगवान का दर्षन किये यदि बद्रीनाथ क्षेत्र की यात्रा करता है, तो उसकी यात्रा निश्फल अर्थात व्यर्थ हो जाती है।

केदारनाथ ज्योतिर्लिंग को हिंदू धर्म के 4 धामों में से एक माना जाता है। अत्यधिक ठंड के मौसम और बर्फबारी के कारण, मंदिर सर्दियों के दौरान 6 महीने के लिए बंद रहता है और केवल अप्रैल से नवंबर तक खुला रहता है। पत्थरों से बने कत्यूरी षैली से बने इस मन्दिर के बारे में कहा जाता है कि इसका निर्माण पाण्डव वंष के जनमेजय ने कराया था। यहाँ स्थित स्वयम्भू षिवलिंग अति प्राचीन है। आदि षंकराचार्य ने इस मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया।

केदारनाथ के रास्ते में तीर्थयात्री, पवित्र जल लेने के लिए पहले गंगोत्री और यमुनोत्री जाते हैं, जो वे केदारनाथ षिव लिंग को चढ़ाते हैं। मन्दिर के अन्दर गर्भगष्ह है जहाँ भगवान की पूजा की जाती है। मन्दिर परिसर के अन्दर ही एक मम्डप स्थित है जहाँ पर विभिन्न धार्मिक समारोहों का आयोजन होता है। यह मंदिर 3584 मीटर की ऊंचाई पर बना हुआ है, सीध ो रास्ते से आप इस मंदिर में नही जा सकते और गौरीकुंड से मंदिर तक जाने के लिए आपको 21 किलोमीटर की पहाड़ी यात्रा करनी पड़ती है। मंदिर तक जाने के लिए गौरीकुंड

में टट्टू और मेनन की सेवाए भी प्रदान की जाती है। साथ ही यह मंदिर 275 पादल पत्र स्थलों में से भी एक है।

केदारनाथ मंदिर पताः

केदारनाथ, रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड दृ 246445

केदारनाथ मंदिर खुलने का समयः

जैसे की ऊपर पहले ही बताया गया हैं केदानाथ दर्षन के लिए साल में 6 महीने खुला रहता हैं। यह मंदिर अप्रैल मई में अक्षय तष्तीया के दिन खोला जाता है और ऑक्टूबर, नवंबर में कार्तिक पूर्णिमा के दिन केदरनाथ मंदिर का कपाट बंद कर दिया जाता है। मंदिर में दर्षन का समय सुबह 4 बजे से दोपहर 12 बजे तक और दोपहर 3 से रात 9 बजे तक खुला रहता है। मंदिर का खुलना भी मौसम की परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है।

कैसे पहुंचे केदारनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर :

केदारनाथ मंदिर तक पहुंचने के तीन रास्ते हैं। जो हरिद्वार, ऋशिकेष और देहरादून है। केदारनाथ हरिद्वार से 247 किमी दूर है। और केदारनाथ देहरादून से 256 किमी दूर है। लेकिन सबसे नजदीकी षहर ऋशिकेष हैं, जो केदारनाथ से सिर्फ 105 किमी दूर है। आप ट्रैन, हवाई, बस और निजी वाहन से पहुँच सकते हैं। नजदीकी रेलवे स्टेषन ऋशिकेष रेलवे स्टेषन है, जो गौरीकुंड से लगभग 210 किमी दूर है। मंदिर जाने के लिए आप हेलिकॉप्टर की सवारी भी कर सकते हैं। केदारनाथ जाने के लिए सबसे नजदीकी एयरपोर्ट देहरादून एयरपोर्ट हैं। भारत के लगभग सभी षहरों विमान यहां आते हैं। इसके बाद आपको बाकी की यात्रा बस या टैक्सी से करनी होगी।

6). भीमाषंकर ज्योतिर्लिंग मंदिर, पुणे, महाराश्ट्र

भीमाषंकर मंदिर पुणे के पास खेड के उत्तर–पष्चिम से 50 किलोमीटर की दुरी पर स्थित है। यह मंदिर पुणे के षिवाजी नगर से 127 किलोमीटर की दुरी पर सह्याद्री पहाडियों की घाटी में बना हुआ है। यह षिवलिंग काफी मोटा है, इसलिए इसे मोटेष्वर महादेव भी कहा जाता है। भीमषंकर मंदिर बहुत ही प्राचीन है, लेकिन यहां के कुछ भाग का निर्माण नया भी है। इस मंदिर के षिखर का निर्माण कई प्रकार के पत्थरों से किया गया है। यह मंदिर मुख्यतः नागर षैली में बना हुआ है। मंदिर में कहीं–कहीं इंडो–आर्यन षैली भी देखी जा सकती है।

18वीं षताब्दी में भीमाषंकर मंदिर नाना फडणवीस ने बनवाया था। भीमषंकर मंदिर से पहले ही षिखर पर देवी पार्वती का एक मंदिर है। इसे कमलजा मंदिर कहा जाता है। मान्यता है कि इसी स्थान पर देवी ने राक्षस त्रिपुरासुर से युद्ध में भगवान षिव की सहायता की थी। युद्ध के बाद भगवान ब्रह्मा ने देवी पार्वती की कमलों से पूजा की थी।

भीमाषंकर मंदिर का पताः

भीमाषंकर मंदिर, खेड़, पुणे, महाराश्ट्र 410509

भीमाषंकर मंदिर खुलने का समयः

इस मंदिर में दर्षन का समय सुबह 5 बजे से षुरू होकर रात 9:30 बजे तक है। दोपहर में आरती के दौरान 45 मिनट के लिए दर्षन बंद कर दिए जाते हैं। पुरे सफ्ताह दर्षन के लिए मंदिर खुला रहता हैं। इस दौरान भक्तगण भगवान भोलेनाथ के दर्षनों के लाभ उठा सकते हैं।

कैसे पहुंचे भीमाषंकर ज्योतिर्लिंग मंदिर :

मंदिर का नजदीकी रेलवे स्टेषन कर्जत और पुणे जंक्षन है, जो मंदिर से लगभग 147 किमी दूर है। मंदिर तक पहुंचने के लिए आप टैक्सी किराए पर ले सकते हैं। निकटतम हवाई अड्डा पुणे अंतर्राश्ट्रीय हवाई अड्डा है, जो मंदिर से लगभग 109 किमी दूर है।

7). काषी विष्वनाथ मन्दिर, वाराणसी, उत्तर प्रदेष

काषी विष्वनाथ मंदिर का हिंदू धर्म में एक विषिश्ट स्थान है। ऐसा माना जाता है कि एक बार इस मंदिर के दर्षन करने और पवित्र गंगा में स्नान कर लेने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। कहते हैं, काषी तीनों लोकों में न्यारी नगरी है, जो भगवान षिव के त्रिषूल पर विराजती है। यह ज्योतिर्लिंग मंदिर विष्व के सर्वाधिक पूजनीय और प्रसिद्ध स्थल काषी में स्थित है। यह पवित्र षहर बनारस (वाराणसी) की भीड़–भाड़ वाली गलियों के बीच स्थित है।

गंगा नदी के तट पर स्थित है बाबा विष्वनाथ का मंदिर। ऐसी मान्यता है कि कैलाष छोड़कर भगवान षिव ने यहीं अपना स्थाई निवास बनाया था। ऐसा भी माना जाता है कि जब पष्थ्वी का निर्माण हुआ था तब प्रकाष की पहली किरण काषी की धरती पर पड़ी थी।

इस मंदिर के मुख्य देवता को विष्वनाथ या विष्वेष्वर नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है पूरे ब्रह्मांड का षासक। यह काफी पुराना और एक भव्य मंदिर है, जो पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। मंदिर की वर्तमान संरचना का निर्माण मराठा षासक महारानी अहिल्याबाई होल्कर ने वर्श 1780 में किया था। बाद में महाराजा रणजीत सिंह ने 1853 में 1000 किलो षुद्ध सोने से इसे बनवाया था। काषी विष्वनाथ मंदिर के कारण वाराणसी को बाबा भोले की नगरी या षिव नगरी कहा जाता है।

विष्वनाथ मंदिर का पताः

विष्वनाथ मंदिर, लाहौरी टोला, वाराणसी, उत्तर प्रदेष दृ 221001

विष्वनाथ मंदिर खुलने का समयः

दर्षन के लिए सुबह 2.30 बजे काषी विष्वनाथ मंदिर के कपाट खुलते हैं, पहली आरती सुबह 3 बजे की जाती है। यहां दिन में पांच बार भगवान षिव की आरती होती है और आखिरी आरती 10.30 बजे की जाती है।

कैसे पहुंचे काषी विष्वनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर :

वाराणसी एक प्रसिद्ध षहर हैं, और काषी विष्वनाथ मंदिर यही स्थित हैं। इस कारण देष के अन्य हिस्सों से मंदिर जाने का रास्ता अच्छी तरह जुड़ा हैं। वाराणसी सिटी स्टेषन मंदिर से केवल 2 किलोमीटर दूर है, जबकि वाराणसी जंक्षन लगभग 6 किलोमीटर दूर है। काषी विष्वनाथ मंदिर का नजदीकी हवाई अड्डा, बाबतपुर में लाल बहादुर षास्त्री अंतर्राश्ट्रीय हवाई अड्डा है जो मंदिर से मात्र 25 किमी दूर है।

8). त्र्यंबकेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर, नासिक, महाराश्ट्र

त्र्यम्बकेष्वर ज्योर्तिलिंग मन्दिर महाराश्ट्र राज्य के नासिक षहर से तीस किलोमीटर पष्चिम में अवस्थित है। इसे त्रयम्बक ज्योतिर्लिंग, त्र्यम्बकेष्वर षिव मन्दिर भी कहते है। यह एक प्राचीन मंदिर हैं। गोदावरी नदी के किनारे स्थित यह मंदिर काले पत्थरों से बना है। गौतम ऋशि तथा गोदावरी के प्रार्थनानुसार भगवान षिव इस स्थान में वास करने की कृपा की और त्र्यम्बकेष्वर नाम से विख्यात हुए।

त्र्यंबकेष्वर एक प्रमुख आध्यात्मिक महत्व भी रखता है क्योंकि यह उन चार हिंदू षहरों में से है जहां हर 12 साल में कुंभ मेला आयोजित किया जाता है। इस प्राचीन मंदिर का पुनर्निर्माण तीसरे पेषवा बालाजी अर्थात नाना साहब पेषवा ने करवाया था। एक कथा के अनुसार निर्माण से पहले पेषवा ने एक षर्त लगाई थी कि ज्योतिर्लिंग में लगा पत्थर अंदर से खोखला है या नहीं। पत्थर खोखला साबित हुआ और इस तरह षर्त हारने पर पेषवा ने वहां मंदिर पुनर्निर्माण कराया।

मंदिर का आकार बहुत ही अनोखा है और यह पूरे विष्व में प्रसिद्ध है। इस मंदिर में भगवन षिव को विष्व प्रसिद्ध नासक डायमंड से बनाया गया। हालाँकि मंदिर को तीसरे एंग्लो–मराठा युद्ध में अंग्रेजों ने लूट लिया था। लूटा गया हीरा अभी भी ग्रीनविच, कनेक्टिकट, यूएसए के ट्रकिंग फर्म के कार्यकारी एडवर्ड जे हैंड के पास है।

इस मंदिर का जीर्णोद्धार 1755 में षुरू हुआ था और 31 साल के लंबे समय के बाद 1786 में जाकर पूरा हुआ। कहा जाता है कि इस भव्य मंदिर के निर्माण में करीब 16 लाख रुपए खर्च किए गए थे, जो उस समय काफी बड़ी रकम मानी जाती थी।

भगवान षिव को समर्पित यह मंदिर है और साथ ही भगवान षिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है, जहाँ हिन्दुओ की वंषावली का पंजीकरण भी किया जाता है। यहां के निकटवर्ती ब्रह्म गिरि नामक पर्वत से गोदावरी नदी का उद्गम है। इन्हीं पुण्यतोया गोदावरी के उद्गम–स्थान के समीप असस्थित त्रयम्बकेष्वर–भगवान की भी बड़ी महिमा हैं।

त्र्यंबकेष्वर मंदिर का पताः

त्र्यंबकेष्वर, नासिक, महाराश्ट्र –422212

त्र्यंबकेष्वर मंदिर खुलने का समयः

त्र्यम्बकेष्वर मंदिर सप्ताह के प्रत्येक दिन खुला होता है। मंदिर भक्तों के दर्षन के लिए सुबह 5 बजे खुलता है और रात्रि में 9 बजे बंद हो जाता है।

कैसे पहुंचे त्र्यंबकेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर :

त्र्यंबकेष्वर गाँव नासिक से काफी नजदीक है। नासिक पूरे देष से रेल, सड़क और वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। इसके आलावा त्र्यंबकेष्वर मंदिर ठाणे से 157 किलोमीटर, मुंबई से 178 किलोमीटर और औरंगाबाद से 224 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

मंदिर का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेषन गतपुरी है, जो मंदिर से मात्र 28 किमी दूर है। मंदिर तक पहुंचने के लिए आप किसी टैक्सी या ऑटो किराए पर ले सकते हैं। एक अन्य प्रमुख रेलवे स्टेषन नासिक रोड है जो मंदिर से लगभग 38 किमी दूर है।

नजदीकी हवाई अड्डा की बात करि जाएँ तो, नासिक हवाई अड्डा है जो मंदिर से लगभग 50 किमी दूर है। आप नासिक पहुँचकर वहाँ से त्र्यंबक के लिए बस, ऑटो या टैक्सी ले सकते हैं। अंतरराश्ट्रीय हवाई अड्डा छत्रपति षिवाजी अंतर्राश्ट्रीय हवाई अड्डा, मुंबई है जो मंदिर से 166 किमी दूर है।

9). श्री बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर, देवघर, झारखण्ड

श्री बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग मंदिर भारत का एक अति प्राचीन मंदिर है जो भारत के झारखंड में अतिप्रसिद्ध देवघर नगर में अवस्थित है। पवित्र तीर्थ होने के कारण लोग इसे "बाबा वैद्यनाथ धाम" भी कहते हैं। जहाँ पर यह मन्दिर स्थित है उस स्थान को "देवघर" अर्थात देवताओं का घर कहते हैं। कहा जाता है कि एक बार रावण ने तप के बल से षिव को लंका ले जाने की कोषिष की, लेकिन रास्ते में व्यवधान आ जाने से षर्त के अनुसार षिव जी यहीं स्थापित हो गए।

यह ज्योतिर्लिंग एक सिद्धपीठ है। कहा जाता है कि यहाँ पर आने वालों की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। इस कारण इस लिंग को "कामना लिंग" भी कहा जाता हैं। मंदिर के परिसर में बाबा बैद्यनाथ के मुख्य मंदिर के साथ–साथ दुसरे 21 मंदिर भी है। बैद्यनाथ धाम मंदिर कमल के आकार का है और 72 फीट लंबा है। मंदिर में प्राचीन और आधुनिक दोनों प्रकार की स्थापत्य कला देखने को मिलती है। खुलासती–त–त्वारीख में लिखी गयी जानकारी के अनुसार बाबाधाम के मंदिर को प्राचीन समय में भी काफी महत्त्व दिया जाता था। बैद्यनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण 1596 में राजा पूरन मल द्वारा किया गया था, जो गिद्दौर के महाराजा के पूर्वज थे। बाबा बैद्यनाथ धाम मंदिर में हर साल श्रावण मेले के दौरान लाखों भक्त आते हैं।

बैद्यनाथ मंदिर का पताः

षिवगंगा गली, देवघर, झारखंड दृ 814112

बैद्यनाथ मंदिर दर्षन का समयः

प्रतिदिन मंदिर दर्षन के लिए प्रातः 4:00 बजे से 3:30 बजे तक तथा सायं 6:00 से 9:00 बजे तक खुला रहता है। मंदिर प्रांगण में प्रवेष के लिए मंदिर सुवह 4:00 बजे से रात 9:00 बजे तक खुला रहता है। महा षिवरात्रि जैसे विषेश धार्मिक अवसरों के दौरान, दर्षन का समय बढ़ाया जाता है।

बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग देवघर, झारखंड कैसे पहुंचेः

देवघर भारत के सभी से अच्छी तरह सड़क मार्ग से जुड़ा हैं। बैद्यनाथ धाम का नजदीकी रेलवे स्टेषन जसीडीह जंक्षन (हावड़ा–पटना–नई दिल्ली रेल मार्ग) है, जो मंदिर से लगभग 7 किमी दूर है। देवघर और बैद्यनाथ धाम रेलवे स्टेषन दो अन्य स्थानीय स्टेषन हैं। निकटतम हवाई अड्डा अंतर्राश्ट्रीय हवाई अड्डा देवघर है, जो मंदिर से लगभग 4 किमी दूर है, इसके आलावा पटना हवाई अड्डा 230 किमी की दूरी पर स्थित है।

10). नागेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर, द्वारका, गुजरात

भगवान षिव के मंदिरों में यह पहला मंदिर है जिसका विवरण षिवपुराण में किया गया है। इस मंदिर में पाए जाने वाले पिण्ड को भगवान षिव को नागेष्वर महादेव कहा जाता है और यह मंदिर हजारो तीर्थयात्रियो को आकर्शित करता है। कहा जाता है की जो लोग नागेष्वर महादेव की पूजा करते है वे विश से मुक्त हो जाते है। नागेष्वर मंदिर गुजरात में बड़ौदा क्षेत्र में गोमती द्वारका के करीब स्थित है।

नागेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर जिसे नागनाथ मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। धार्मिक पुराणों में भगवान षिव को नागों का देवता बताया गया है और नागेष्वर का अर्थ होता है नागों का ईष्वर कहते हैं कि भगवान षिव की इच्छा अनुसार ही इस ज्योतिर्लिंग का नामकरण किया गया है।

नागेष्वर ज्योतिर्लिंग, मंदिर परिसर के पास ही भगवान षिव की 80 फीट की ऊंचाई वाली मूर्ति स्थापित की गई है। इस मूर्ति में षिव भगवान् पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए है। कहा जाता हैं नागेष्वर ज्योतिर्लिंग के दर्षन मात्र से ही मनुश्य के पाप और दुश्कर्म धुल जाते हैं।

मंदिर गुलाबी पत्थर से बनाया गया है और मूर्ति दक्षिणामूर्ति है। वही मंदिर के गर्भगष्ह में स्थित ज्योतिर्लिंग सामान्य रूप से बने ज्योतिर्लिंगों से थोड़ा बड़ा है, और ज्योतिर्लिंग के ऊपर चांदी की परत चढ़ाई गई है। इस ज्योतिर्लिंग के ऊपर एक चांदी का नाग भी बना हुआ है।

नागेष्वर मंदिर का पताः

नागेष्वर ज्योतिर्लिंग, दारुकवनम, गुजरात 361345

नागेष्वर मंदिर खुलने का समयः

पुराणों में वर्णित नागेष्वर ज्योतिर्लिंग के बारे में कहा गया है कि अगर सावन के महीने में इस ज्योतिर्लिंग का दर्षन और पूजन किया जाए, तो इसका विषेश लाभ मिलता है, एवं

मनुश्य षिव धाम को प्राप्त होता है। इसलिए सावन के महीने में नागेष्वर ज्योतिर्लिंग के पास काफी भीड़ रहती है। मंदिर प्रतिदिन सुबह 5 बजे से दोपहर 1 बजे तक और दोपहर 3 बजे से 9 बजे तक खुला रहता है । रात 8 बजे तक दर्षन की अनुमति है।

कैसे पहुंचे नागेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर :

श्री नागेष्वर ज्योतिर्लिंग गुजरात प्रान्त के द्वारकापुरी से लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। मंदिर का नजदीकी रेलवे स्टेषन द्वारका रेलवे स्टेषन है जो मंदिर से लगभग 16 किमी दूर है। नागेष्वरम मंदिर का निकटतम हवाई अड्डा जामनगर हवाई अड्डा है जो मंदिर से 127 किमी दूर है। आप बस या ट्रेन से मंदिर पहुंच सकते हैं।

11). रामेष्वरम ज्योतिर्लिंग, रामेष्वरम, तमिलनाडु

रामेष्वरम या श्रीरामलिंगेष्वर ज्योतिर्लिंग हिंदुओं का सबसे पवित्र स्थानों में से एक माना जाता है, इसे चार धाम की यात्राओं में से एक स्थल माना जाता है। इसके साथ ही यहां स्थापित षिवलिंग बारह द्वादष ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है।

ऐसी मान्यता है कि रावण की लंका पर चढ़ाई से पहले भगवान राम ने जिस षिवलिंग की स्थापना की थी, वही रामेष्वर के नाम से विष्व विख्यात हुआ। यह मंदिर समुद्र से घिरा हुआ है और इसकी सुंदर वास्तुकला और सजाए गए गलियारों देखने लायक है। रामेष्वरम वह स्थान है जहां भगवान राम ने अपने सभी पापों का प्रायष्चित करने का निर्णय लिया।

रामेष्वरम में 64 तीर्थ या पवित्र जल के स्त्रोत है इनमें से 24 को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत के उत्तर मे काषी की जो मान्यता है, वही दक्षिण में रामेष्वरम् की है। मंदिर का विस्तार 12 वीं षताब्दी के दौरान पांड्य राजवंष द्वारा किया गया था और इसके प्रमुख मंदिरों के गर्भगृह का जीर्णोद्धार जयवीरा सिंकैरियान और जाफना साम्राज्य के उनके उत्तराधिकारी गुणवीरा सिंकैरियान द्वारा किया गया था।

श्री रामेष्वर जी का मन्दिर एक हजार फुट लम्बा, छः सौ पचास फुट चौड़ा तथा एक सौ पच्चीस फुट ऊँचा है। इस मन्दिर में प्रधान रूप से एक हाथ से भी कुछ अधिक ऊँची षिव जी की लिंग मूर्ति स्थापित है। इसके अतिरिक्त भी मन्दिर में बहुत–सी सुन्दर–सुन्दर षिव प्रतिमाएँ हैं।

रामेष्वरम मंदिर का पताः

रामेष्वरम, तमिलनाडु 623526

रामेष्वरम मंदिर खुलने का समयः

रामेष्वरम मंदिर को सुबह 5 बजे से दोपहर 1 बजे तक और दोपहर 3 बजे से 9 बजे तक खुला रहता है। रात आठ बजकर पैंतालीस मिनट पर पल्लीयाराई पूजा(च्ंसपलंतंप च्वरं) होती है।

रामेष्वरम ज्योतिर्लिंग मंदिर कैसे पहुंचे :

मदुरै रामेष्वरम से 163 किलोमीटर की दूरी पर है जो रामेष्वरम का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है। यदि आप फ्लाइट से जाना चाहते हैं तो मदुरै के लिए मुंबई, बंगलूरू और चेन्नई से फ्लाइट पकड़ सकते हैं। मंदिर का निकटतम रेलवे स्टेषन रामेष्वरम रेलवे स्टेषन है जो मंदिर से लगभग 1.5 किमी दूर है। यह चेन्नई सहित कई प्रमुख दक्षिण भारतीय षहरों से रेलवे द्वारा भी जुड़ा हुआ है।

12). घष्श्णेष्वर ज्योतिर्लिंग, महाराश्ट्र

घष्श्णेष्वर मंदिर को कभी–कभी घर्नेष्वर ज्योतिर्लिंग और धुष्मेष्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है और साथ ही षिव पुराण में वर्णित भगवान षिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से यह एक है। इस मंदिर का निर्माण देवी अहिल्याबाई होल्कर ने करवाया था। मंदिर का निर्माण लाल और काले पत्थरों से षानदार ढंग से किया गया है।

र्नेष्वर षब्द का अर्थ 'करुणा के स्वामी' से है। यह मंदिर हिन्दुओ की षाव्यवाद परंपरा के अनुसार महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में से एक है। इस ज्योतिर्लिंग को भगवान षिव का बारहवां और अंतिम ज्योतिर्लिंग भी कहा जाता है।

प्राचीन हिन्दू धर्मग्रंथों में इसे कुम्कुमेष्वर के नाम से भी संदर्भित किया गया है। इस मंदिर को इसके चित्ताकर्शक षिल्प के लिए भी जाना जाता है। यदि क्रम की बात करें तो हिन्दुओं के लिए घष्श्णेष्वर ज्योतिर्लिंग की यात्रा का मतलब होता है बारह ज्योतिर्लिंग यात्रा का समापन।

मंदिर में कोई भी प्रवेष कर सकता है लेकिन गर्भ–गष्ह में प्रवेष करने के लिए हिन्दू परंपराओ का पालन करना अनिवार्य है, यहाँ केवल खुले बदन वाले व्यक्तियों को ही प्रवेष दिया जाता है।

यह मंदिर 240 ′ 185 फीट में बना भारत का सबसे छोटा ज्योतिलिंग भी है। मंदिर के बीच में भगवान विश्णु के दषावतार का चित्रण भी किया गया है। मंदिर के हॉल का निर्माण 24 पिल्लरो से किया गया है। यह मंदिर यूनेस्को की विष्व धरोहर स्थल एलोरा की गुफाओं के करीब स्थित है ।

घष्श्णेष्वर मंदिर का पताः

एलोरा, औरंगाबाद, पोस्ट दृ ग्रिषनेष्वर, महाराश्ट्र दृ 431102

घष्श्णेष्वर मंदिर खुलने का समयः

घष्श्णेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर दर्षन का समय सुबह 5:30 बजे से षाम को 9 बजे तक होता हैं। लेकिन श्रवण माह में (अगस्त से सितम्बर माह) में सुबह 3 बजे से रात के 11 बजे तक मंदिर यहां आने वाले भक्तो के लिए खुला रहता हैं।

घष्श्णेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर कैसे पहुंचे :

घष्णेष्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर का सबसे नजदीकी षहर औरंगाबाद से 30 कि.मी. दुरी पर स्थित है। और औरंगाबाद देष के अन्य हिस्सों से अच्छी तरह जुड़ा हैं। औरंगाबाद से बस टैक्सी या ऑटो से घष्णेष्वर ज्योतिर्लिंग पहुँच सकते है। निकटतम हवाई अड्डा औरंगाबाद हवाई अड्डा है जो मंदिर से लगभग 41 किमी दूर है।

1. भारत में कितने ज्योतिर्लिंग हैं?

भारत में 12 ज्योतिर्लिंग हैं।

2. 12 ज्योतिर्लिंग में से पहला ज्योतिर्लिंग कौन सा है?

सोमनाथ ज्योतिर्लिंग को पहला ज्योतिर्लिंग कहा जाता हैं।

3. भारत में 12 ज्योतिर्लिंग कहाँ हैं?

12 ज्योतिर्लिंग भारत के विभिन्न राज्यों जैसे गुजरात, महाराश्ट्र, झारखंड, मध्य प्रदेष, उत्तर प्रदेष, उत्तराखंड, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेष में फैले हुए हैं।

4. ज्योतिर्लिंगो के नाम क्या हैं?

सोमनाथ, नागेष्वर, भीमाषंकर, त्र्यंबकेष्वर, ग्रिषनेष्वर, बैद्यनाथ, महाकालेष्वर, ओंकारेष्वर, काषी विष्वनाथ, केदारनाथ, रामेष्वरम और मल्लिकार्जुन हैं।

5. महाराश्ट्र में कितने ज्योतिर्लिंग हैं?

भारत में कुल 12 ज्योतिर्लिंगों हैं, जिसमे 3 ज्योतिर्लिंग महाराश्ट्र में स्थित हैं।

6. 12 ज्योतिर्लिंग के नाम लेने से क्या होता है?

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, जो व्यक्ति प्रतिदिन इन 12 ज्योतिर्लिंगों के नाम जपता है, वह सभी कश्टों से मुक्त हो जाता है।

Unit– 2

बौद्ध धर्म

बौद्ध धर्म बुद्ध की षिक्षाओं पर आधारित एक भारतीय दार्षनिक परंपरा है।ख्1, इसे बुद्ध धर्म भी कहा जाता है।ख्2, गौतम बुद्ध को ६वीं सदी ईषा पूर्व से ५वीं सदी ईषा पूर्व का माना जाता है।ख्3, यह विष्व का चौथा सबसे बड़ा धर्म है,ख्4,ख्5, जिसके ५२ करोड़ से अधिक अनुयायी (बौद्ध) हैं, जो वैष्विक आबादी का सात प्रतिषत हैं। ख्6,ख्7,ख्8, भगवान बुद्ध और गौतम बुद्धअलग अलग है

षब्द

बौद्ध धर्म एक भारतीय धर्म ख्9, या दर्षन है। बुद्ध (''जागष्त व्यक्ति'') एक श्रमण थे जो दक्षिण एषिया में छठी या पाँचवीं षताब्दी ईसा पूर्व रहते थे।

बौद्ध धर्म के अनुयायी, जिन्हें हिन्दी में बौद्ध कहा जाता है, प्राचीन भारत में खुद को षाक्य –एस या षाक्यभिक्षु कहते थे। ख्12, ख्13, बौद्ध विद्वान डोनाल्ड एस. लोपेज का दावा है कि उन्होंने भी बौद्ध षब्द का इस्तेमाल किया था, ख्14, हालांकि विद्वान रिचर्ड कोहेन का दावा है कि उस षब्द का इस्तेमाल केवल बाहरी लोगों द्वारा बौद्धों का वर्णन करने के लिए किया गया था।

थाईलैंड में एक भिक्षु, बुद्ध की प्रतिमा को नमस्कार करते हुएषाक्यमुनि बुद्ध, अभय मुद्रा में (हांगकांग)

गौतम बुद्ध

बुद्ध की पत्थर की मूर्ति

गौतम बुद्ध षाक्य कोलिय के जीवन के विशय में प्रामाणिक सामग्री विरल है। इस प्रसंग में उपलब्ध अधिकांष वृत्तान्त एवं कथानक भक्तिप्रधान रचनाएँ हैं और बुद्धकाल के बहुत बाद के हैं। प्राचीनतम सामग्री में पालि त्रिपिटक के कुछ स्थलों पर उपलब्ध अल्प विवरण उल्लेख्य हैं, जैसे – बुद्ध की पर्येशणा, संबोधि, धर्मचक्रप्रवर्तन एवं महापरिनिर्वाण के विवरण। बुद्ध की जीवनी के आधुनिक विवरण प्रायः पालि की निदानकथा अथवा संस्कृत के महावस्तु, ललितविस्तर एवं अष्वघोश कृत बुद्धचरित पर आधारित होते हैं। किंतु इन विवरणों की ऐतिहासिकता वहीं तक स्वीकार की जा सकती है जहाँ तक उनके लिए प्राचीनतर समर्थन उपलब्ध हों।

ईसा पूर्व 563 के लगभग षाक्यों की राजधानी कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी वन में गौतम बुद्ध का जन्म प्रसिद्ध है। यह स्थान वर्तमान नेपाल राज्य के अंतर्गत भारत की सीमा से 7 किलोमीटर दूर है। यहाँ पर प्राप्त अषोक के रुम्मिनदेई स्तंभलेख से ज्ञात होता है 'हिद बुध ो जाते' (= यहाँ बुद्ध जन्मे थे)। सुत्तनिपात में षाक्यों को हिमालय के निकट कोषल में रहनेवाले गौतम गोत्र के क्षत्रिय कहा गया है। कोषलराज के अधीन होते हुए भी षाक्य

जनपद स्वयं एक गणराज्य था। इस प्रकार के राजा षुद्धोदन बुद्ध के पिता एवं मायादेवी उनकी माता प्रसिद्ध हैं। जन्म के पाँचवे दिन बुद्ध को 'सिद्धार्थ' नाम दिया गया और जन्मसप्ताह में ही माता के देहांत के कारण उनका पालन–पोशण उनकी मौसी एवं विमाता महाप्रजापती गौतमी द्वारा हुआ। बहुत से लोगों का मानना है कि उनका बचपन का नाम 'सुकित' था।

बुद्ध के षैषव के विशय में प्राचीन सूचना अत्यंत अल्प है। सिद्धार्थ के बत्तीस महापुरुशलक्षणों को देखकर असित मुनि ने उनके बुद्धत्व की भविश्यवाणी की, इसके अनेक वर्णन मिलते हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि एक दिन जामुन की छाँह में उन्हें सहज रूप में प्रथम ध्यान की उपलब्धि हुई थी। दूसरी ओर ललितविस्तार आदि ग्रंथों में उनके षैषव का चमत्कारपूर्ण वर्णन प्राप्त होता है। ललितविस्तर के अनुसार जब सिद्धार्थ को देवायतन ले जाया गया तो देवप्रतिमाओं ने स्वयं उठकर उन्हें प्रणाम किया। उनके षरीर पर सब स्वर्णाभरण मलिन प्रतीत होते थे, लिपिषिक्षक आचार्य विष्वामित्र को उन्होंने 64 लिपियों का नाम लेकर और गणक महामात्र अर्जुन को परमाणु–रजः प्रवेषानुगत गणना के विवरण से विस्मय में डाल दिया। नाना षिल्प, अस्त्रविद्या, एवं कलाओं में सहज–निश्णात सिद्धार्थ का कोलिय नरेष दंडपाणि की पुत्री गोपा यषोदारह कोलिय साथ परिणय संपन्न हुआ। पालि आकरों के अनुसार सिद्धार्थ की पत्नी सुप्रबुद्ध की कन्या थी और उसका नाम 'भद्दकच्चाना', भद्रकात्यायनी, यषोधरा, बिंबा, अथवा बिंबासुंदरी था। विनय में उसे केवल 'राहुलमाता' कहा गया है। बुद्धचरित में यषोधरा नाम दिया गया है।

सिद्धार्थ के प्रव्राजित होने की भविश्यवाणी से भयभीत होकर षुद्धोदन ने उनके लिए तीन विषिश्ट प्रासाद (महल) बनवाए – ग्रैश्मिक, वार्शिक, एवं हैमंतिक। इन्हें रम्य, सुरम्य और षुभ की संज्ञा भी दी गई है। इन प्रासादों में सिद्धार्थ को व्याधि और जन्म–मरण से दूर एक कृत्रिम, नित्य मनोरम लोक में रखा गया जहाँ संगीत, यौवन और सौंदर्य का अक्षत साम्राज्य था। किंतु देवताओं की प्रेरणा से सिद्धार्थ को उद्यानयात्रा में व्याधि, जरा, मरण और परिव्राजक के दर्षन हुए और उनके चित्त में प्रव्राज्या का संकल्प विरूढ़ हुआ। इस प्रकार के विवरण की अत्युक्ति और चमत्कारिता उसके आक्षरिक सत्य पर संदेह उत्पन्न करती है। यह निष्चित है कि सिद्धार्थ के मन में संवेग संसार के अनिवार्य दुःख पर विचार करने से उत्पन्न हुआ। उनकी ध्यानप्रवणता ने, जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है, इस दुःख की अनुभूति को एक गंभीर सत्य के रूप में प्रकट किया होगा। निदानकथा के अनुसार इसी समय उन्होंने पुत्रजन्म का संवाद सुना और नवजात को 'राहुल' नाम मिला। उसी अवसर पर प्रासाद की ओर जाते हुए सिद्धार्थ की षोभा से मुग्ध होकर राजकुमारी कृषा गौतमी ने उनकी प्रषंसा में एक प्रसिद्ध गाथा कही जिसमें 'नुबुत्त' (निर्वृत्त, प्रषांत) षब्द आता है।

निब्बुता नून सा माता निब्बुतो नून सो पिता।

निब्बुता नून सा नारी यस्सायमीदिसो पतिe

(अवष्य ही परम षांत है वह माता, परम षांत है वह पिता, परम षांत है वह नारी जिसका ऐसा पति हो।)

सिद्धार्थ को इस गाथा में गुरुवाक्य के समान गंभीर आध्यात्मिक संकेत उपलब्ध हुआ। उन्होने सोचा कि इसने पाप और पुनर्जन्म से मुक्ति के लिए मुझे संदेष दिया है। इसके साथ ही उन्होने मोतियों का अपना हार उतारकर उस युवती को दे दिया।

आधी रात के अंधकार में सोती हुई पत्नी और पुत्र को छोड़कर सिद्धार्थ कंथक पर आरूढ़ हो नगर से और कुटुंबजीवन से निश्क्रांत हुए। उस समय सिद्धार्थ 29 वर्श के थे। निदानकथा के अनुसार रात भर में षाक्य, कोलिय और मल्ल (राम ग्राम) इन तीन राज्यों को पार कर सिद्धार्थ 30 योजन की दूरी पर अनोमा नाम की नदी के तट पर पहुँचे। वहीं उन्होंने प्रव्राज्या के उपयुक्त वेष धारण किया और छन्दक को विदा कर स्वयं अपनी अनुत्तर षांति की पर्येशणा (खोज) की ओर अग्रसर हुए।

आर्य पर्येशणा के प्रसंग में सिद्धार्थ अनेक तपस्वियों से मिले जिनमें आलार कालाम (आराड़) एवं उद्दक रामपुत्त (रुद्रक) मुख्य हैं। ललितविस्तर में आलार कालाम का स्थान वैषाली कहा गया है जबकि अष्वघोश के बुद्धिचरित में उसे विंध्य कोश्ठवासी बताया गया है। पालि निकायों से विदित होता है कि कालाम ने बोधिसत्व को 'आर्किचन्यायतन' नाम की 'अल्प समापत्ति' सिखाई। अष्वघोश ने कालाम के सिद्धांतों का सांख्य से सादृष्य प्रदर्षित किया है। ललितविस्तर में रुद्रक का आश्रम राजगष्ह के निकट कहा गया है। रुद्रक के 'नैवसंज्ञानासंज्ञायतन' के उपदेष से भी बोधिसत्व असंतुश्ट रहे। राजगष्ह में उनका मगधराज बिंबिसार से साक्षात्मार सुत्तनिपात के पब्बज्जसुत्त, ललितविस्तर और बुद्धचरित में वर्णित है।

गया में बोधिसत्व ने यह विचार किया कि जैसे गीली लकड़ियों से अग्नि उत्पन्न नहीं हो सकती, ऐसे ही भोगों में स्पष्हा रहते हुए ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। अतएव उरुविल्व के निकट सेनापति ग्राम में निरंजना नदी के तटवर्ती रमणीय प्रदेष में उन्होंने कठोर तपष्चर्या (प्रधान) का निष्चय किया। किंतु अंततोगत्वा उन्होंने तप को व्यर्थ समझकर छोड़ दिया। इसपर उनके साथ कौंडिन्य आदि पंचवर्शीय परिव्राजकों ने उन्हें तपोभ्रश्ट निष्चित कर त्याग दिया। बोधिसत्व ने अब षैषव में अनुभूत ध्यानाभ्यास का स्मरण कर ध्यान के द्वारा ज्ञानप्राप्ति का यत्न किया। इस ध्यानकाल में उन्हें मार सेना का सामना करना पड़ा, यह प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित है। स्पश्ट ही मार घर्शण को काम और मष्त्यु पर विजय का प्रतीकात्मक विवरण समझना चाहिए। आर्य पर्येशणा के छठे वर्श के पूरे होने पर वैषाखी पूर्णिमा को बोधिसत्व ने संबोधि प्राप्त की। रात्रि के प्रथम याम में उन्होंने पूर्वजन्मों की स्मषति रूपी प्रथम विद्या, द्वितीय याम में दिव्य चक्षु और तष्तीय याम में प्रतीत्यसमुत्पाद का ज्ञान प्राप्त किया। एक मत से इसके समानांतर ही सर्वधर्माभिसमय रूप सर्वाकारक प्रज्ञा अथवा संबोधि का उदय हुआ।

संबोधि के अनंतर बुद्ध के प्रथम वचनों के विशय में विभिन्न परंपराएँ हैं जिनमें बुद्धघोश के द्वारा समर्थित 'अनेक जाति संसार संघाविस्सं पुनप्पुनं' आदि गाथाएँ विषेशतः उल्लेखनीय हैं। संबोधि की गंभीरता के कारण बुद्ध के मन में उसके उपदेष के प्रति उदासीनता स्वाभाविक थी। संसारी जीव उस गंभीर सत्य को कैसे समझ पाएँगे जो अत्यंत सूक्ष्म और अतर्क्य है? बुद्ध की इस अनभिरुचि पर ब्रह्मा ने उनसे धर्मचक्र–प्रवर्तन का अनुरोध किया जिसपर दुःखमग्न संसारियों को देखते हुए बुद्ध ने उन्हें विकास की विभिन्न अवस्थाओं में पाया।

सारनाथ के ऋशिपत्तन मषादान में भगवान बुद्ध ने पंचवर्गीय भिक्षुओं को उपदेष देकर ध र्मचक्रप्रवर्तन किया। इस प्रथम उपदेष में दो अंतों का परिवर्जन और मध्यमा प्रतिपदा की आश्रयणीयता बताई गई है। इन पंचवर्गीयों के अनंतर श्रेश्ठिपुत्र यष और उसके संबंधी एवं मित्र सद्धर्म में दीक्षित हुए। इस प्रकार बुद्ध के अतिरिक्त 60 और अर्हत उस समय थे जिन्हें बुद्ध ने अलग–अलग दिषाओं में प्रचारार्थ भेजा और वे स्वयं उरुवेला के सेनानिगम की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में 30 भद्रवर्गीय कुमारों को उपदेष देते हुए उरुवेला में उन्होंने तीन जटिल काष्यपों को उनके एक सहस्र अनुयायियों के साथ चमत्कार और उपदेष के द्वारा धर्म में दीक्षित किया। इसके पष्चात राजगष्ह जाकर उन्होंने मगधराज बिंबिसार को धर्म का उपदेष दिया। बिंबिसार ने वेणुवन नामक उद्यान भिक्षुसंघ को उपहार में दिया। राजगष्ह में ही संजय नाम के परिव्राजक के दो षिश्य कोलित और उपतिश्य सद्धर्म में दीक्षित होकर मौद्गल्यायन और सारिपुत्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। विनय के महावग्ग में दिया हुआ संबोधि ा के बाद की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण यहाँ पूरा हो जाता है।

इस प्रकार अस्सी वर्श की आयु तक धर्म का प्रचार करते हुए उन क्षेत्रों में भ्रमण करते रहे जो वर्तमान समय में उत्तर प्रदेष और बिहार के के अंतर्गत आते हैं। श्रावस्ती में उनका सर्वाधि ाक निवास हुआ और उसके बाद राजगष्ह, वैषाली और कपिलवस्तु में।

प्रसिद्ध महापरिनिर्वाण सूत्र में बुद्ध की अंतिम पदयात्रा का मार्मिक विवरण प्राप्त होता है। बुद्ध उस समय राजगष्ह में थे जब मगधराज अजातषत्रु वषजि जनपद पर आक्रमण करना चाहता था। राजगष्ह से बुद्ध पाटलि ग्राम होते हुए गंगा पार कर वैषाली पहुँचे जहाँ प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली ने उनको भिक्षुसंघ के साथ भोजन कराया। इस समय परिनिर्वाण के तीन मास षेश थे। वेलुवग्राम में भगवान ने वर्शावास व्यतीत किया। यहाँ वे अत्यंत रुग्ण हो गए। वैषाली से भगवान भंडग्राम और भोगनगर होते हुए पावा पहुँचे। वहाँ चुंद कम्मारपुत्त के आतिथ्य ग्रहण में 'सूकर मद्दव' खाने से उन्हें रक्तातिसार उत्पन्न हुआ। रुग्णावस्था में ही उन्होंने कुषीनगर की ओर प्रस्थान किया और हिरण्यवती नदी पार कर वे षालवन में दो षालवष्क्षों के बीच लेट गए। सुभद्र परिव्राजक को उन्होंने उपदेष दिया और भिक्षुओं से कहा कि उनके अनंतर धर्म ही संघ का षास्ता रहेगा। छोटे मोटे षिक्षापदों में परिवर्तन करने की अनुमति भी इन्होंने संघ को दी और छन्न भिक्षु पर ब्रह्मदंड का विधान किया। पालि परंपरा के अनुसार भगवान के अंतिम षब्द थे 'वयधम्मा संखारा अप्पमादेन संपादेथ।' (वयधर्माः संस्काराः अप्रमादेन संपादयेत – सभी संस्कार नाषवान हैं, आलस्य न करते हुये संपादन करना चाहिए।) लेखक–पीयुश कुमार षर्मा (गनेड़ी)

बुद्ध के समकालीन

- बुद्ध के प्रमुख गुरु थे – आदिगुरु, आलार कालाम, उद्दक रामपुत्त, सूरज आजाद आदि। उनके प्रमुख षिश्य थे– आनंद, अनिरुद्ध, महाकष्यप, रानी खेमा (महिला), महाप्रजापति (महिला), भद्रिका, भष्गु, किंबाल, देवदत्त, उपाली, अंगुलिमाल आदि।ख16,

- गुरु आलार कालाम और उद्दक रामपुत्त : ज्ञान की तलाष में सिद्धार्थ घूमते–घूमते आलारा कालाम और उद्दक रामपुत्त के पास पहुँचे। उनसे उन्होंने योग–साधना सीखी। कई

माह तक योग करने के बाद भी जब ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई तो उन्होंने उरुवेला पहुँच कर वहाँ घोर तपस्या की। छः साल बीत गए तपस्या करते हुए। सिद्धार्थ की तपस्या सफल नहीं हुई। तब एक दिन कुछ स्त्रियाँ किसी नगर से लौटती हुई वहाँ से निकलीं, जहां सिद्धार्थ तपस्या कर रहे थे। उनका एक गीत सिद्धार्थ के कान में पड़ा– 'वीणा के तारों को ढीला मत छोड़ दो। ढीला छोड़ देने से उनका सुरीला स्वर नहीं निकलेगा। पर तारों को इतना कसो भी मत कि वे टूट जाएँ।' बात सिद्धार्थ को जंच गई। वह मान गए कि नियमित आहार–विहार से ही योग सिद्ध होता है। अति किसी बात की अच्छी नहीं। किसी भी प्राप्ति के लिए मध्यम मार्ग ही ठीक होता है। बस फिर क्या था कुछ ही समय बाद ज्ञान प्राप्त हो गया।

- बुध के प्रथम षिश्य उनके पुत्र राहुल बने और महिला में प्रथम उनकी मासी जो उनकी माता के तरह पालन पोशण की थी

- आनंद :– यह बुद्ध और देवदत्त के भाई थे और बुद्ध के दस सर्वश्रेश्ठ षिश्यों में से एक हैं। यह लगातार बीस वर्शों तक बुद्ध की संगत में रहे। इन्हें गुरु का सर्वप्रिय षिश्य माना जाता था। आनंद को बुद्ध के निर्वाण के पष्चात प्रबोधन प्राप्त हुआ। वह अपनी स्मरण षक्ति के लिए प्रसिद्ध थे।

- महाकष्यप : महाकष्यप मगध के ब्राह्मण थे, जो तथागत के नजदीकी षिश्य बन गए थे। इन्होंने प्रथम बौद्ध अधिवेषन की अध्यक्षता की थी।

- रानी खेमा : रानी खेमा सिद्ध धर्मसंघिनी थीं। यह बिंबिसार की रानी थीं और अति सुंदर थीं। आगे चलकर खेमा बौद्ध धर्म की अच्छी षिक्षिका बनीं।

- महाप्रजापति : महाप्रजापति बुद्ध की माता महामाया की बहन थीं। इन दोनों ने राजा षुद्धोदन से विवाह किया था। गौतम बुद्ध के जन्म के सात दिन पष्चात महामाया की मृत्यु हो गई। तत्पष्चात महाप्रजापति ने उनका अपने पुत्र जैसे पालन–पोशण किया। राजा षुद्धोदन की मृत्यु के बाद बौद्ध मठ में पहली महिला सदस्य के रूप में महाप्रजापिता को स्थान मिला था।

पालि साहित्य

मुख्य लेखः पालि साहित्य

त्रिपिटक (तिपिटक) बौद्ध धर्म का मुख्य ग्रंथ है। यह पालिभाशा में लिखा गया है। यह ग्रंथ बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पष्चात बुद्ध के द्वारा दिया गया उपदेषों को सूत्रबद्ध करने का सबसे वष्हद प्रयास है। बुद्ध के उपदेषों को इस ग्रंथ में सूत्र (पालि : सुत्त) के रूप में प्रस्तुत किया गया है। सूत्रों को वर्ग (वग्ग) में बांधा गया है। वग्ग को निकाय (सुत्तपिटक) में व खंड में समाहित किया गया है। निकायों को पिटक (अर्थ : टोकरी) में एकिकृत किया गया है। इस प्रकार से तीन पिटक निर्मित है जिन के संयोजन को त्रि–पिटक कहा जाता है।

पालिभाशा का त्रिपिटक थेरवादी (और नवयान) बुद्ध परंपरा में श्रीलंका, थाइलैंड, बर्मा, लाओस, कंबोडिया, भारत आदि राश्ट्र के बौद्ध धर्म अनुयायी पालना करते है। पालि के तिपिटक को संस्कृत में भी भाशांतरण किया गया है, जिस को त्रिपिटक कहते है। संस्कृत का पूर्ण त्रिपिटक अभी अनुपलब्ध है। वर्तमान में संस्कृत त्रिपिटक प्रयोजन का जीवित परंपरा केवल नेपाल के नेवार जाति में उपलब्ध है। इस के अलावा तिब्बत, चीन, मंगोलिया, जापान, कोरिया, वियतनाम, मलेषिया, रुस आदि देष में संस्कृत मूल मंत्र के साथ में स्थानीय भाशा में बौद्ध साहित्य परंपरा पालना करते है।

बुद्ध की षिक्षाएँ

भगवान बुद्ध की मूल देषना (षिक्षा) क्या थी, इसपर प्रचुर विवाद है। स्वयं बौद्धों में कालांतर में अलग–अलग संप्रदायों का जन्म और विकास हुआ और वे सभी अपने को बुद्ध से अनुप्राणित मानते हैं।

अधिकांष आधुनिक विद्वान पालि त्रिपिटक के अंतर्गत विनयपिटक और सुत्तपिटक में संगष्हीत सिद्धांतों को मूल बुद्धदेषना मान लेते हैं। कुछ विद्वान सर्वास्तिवाद अथवा महायान के सारांष को मूल देषना स्वीकार करना चाहते हैं। अन्य विद्वान मूल ग्रंथों के ऐतिहासिक विष्लेशण से प्रारंभिक और उत्तरकालीन सिद्धांतों में अधिकाधिक विवेक करना चाहते हैं, जिसके विपरीत कुछ अन्य विद्वान इस प्रकार के विवेक के प्रयास को प्रायः असंभव समझते हैं।

आर्यसत्य, अश्टांगिक मार्ग, दस पारमिता, पंचषील आदि के रूप में बुद्ध की षिक्षाएँ समझी जा सकतीं हैं।

चार सत्य

तथागत बुद्ध का पहला धर्मोपदेष, जो उन्होने अपने साथ के कुछ साधुओं को दिया था, इन चार आर्य सत्यों के बारे में था। बुद्ध ने चार आर्य सत्य बताये हैं।

1. दुःख

इस दुनिया में दुःख है। जन्म में, बूढ़े होने में, बीमारी में, मौत में, प्रियतम से दूर होने में, नापसंद चीजों के साथ में, चाहत को न पाने में, सब में दुःख है।

2. दुःख कारण

तष्णा, या चाहत, दुःख का कारण है और फिर से सषरीर करके संसार को जारी रखती है।

3. दुःख निरोध

दुःख–निरोध के आठ साधन बताये गये हैं जिन्हें 'अश्टांगिक मार्ग' कहा गया है। तष्णा से मुक्ति पाई जा सकती है।

4. दुःख निरोध का मार्ग

तष्णा से मुक्ति अश्टांगिक मार्ग के अनुसार जीने से पाई जा सकती है।

अश्टांगिक मार्ग

बौद्ध धर्म के अनुसार, चौथे आर्य सत्य का आर्य अश्टांग मार्ग है दुःख निरोध पाने का रास्ता। गौतम बुद्ध कहते थे कि चार आर्य सत्य की सत्यता का निष्चय करने के लिए इस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए :

1. सम्यक दृश्टि– वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप को जानना ही सम्यक दृश्टि है।

2. सम्यक संकल्प– आसक्ति, द्वेश तथा हिंसा से मुक्त विचार रखना ही सम्यक संकल्प है।

3. सम्यक वाक– सदा सत्य तथा मष्दु वाणी का प्रयोग करना ही सम्यक वाक है।

4. सम्यक कर्मांत– इसका आषय अच्छे कर्मों में संलग्न होने तथा बुरे कर्मों के परित्याग से है।

5. सम्यक आजीव– विषुद्ध रूप से सदाचरण से जीवन–यापन करना ही सम्यक आजीव है।

6. सम्यक व्यायाम– अकुषल धर्मों का त्याग तथा कुषल धर्मों का अनुसरण ही सम्यक व्यायाम है।

7. सम्यक स्मषति– इसका आषय वस्तुओं के वास्तविक स्वरूप के संबंध में सदैव जागरूक रहना है।

8. सम्यक समाधि – चित्त की समुचित एकाग्रता ही सम्यक समाधि है।

कुछ लोग आर्य अश्टांग मार्ग को पथ की तरह समझते है, जिसमें आगे बढ़ने के लिए, पिछले के स्तर को पाना आवष्यक है। और लोगों को लगता है कि इस मार्ग के स्तर सब साथ–साथ पाए जाते है। मार्ग को तीन हिस्सों में वर्गीकृत किया जाता है : प्रज्ञा, षील और समाधि।

पंचषील

भगवान बुद्ध ने अपने अनुयायिओं को पांच षीलों का पालन करने की षिक्षा दी है।

१. अहिंसा

पालि में दृ पाणातिपाता वेरमनी सीक्खापदम् सम्मादीयामी !

अर्थ दृ मैं प्राणि–हिंसा से विरत रहने की षिक्षा ग्रहण करता हूँ।

२. अस्तेय

पालि में दृ आदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदम् समादियामी

अर्थ दृ मैं चोरी से विरत रहने की षिक्षा ग्रहण करता हूँ।

३. अपरिग्रह

पालि में दृ कामेसूमीच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदम् समादियामी

अर्थ दृ मैं व्यभिचार से विरत रहने की षिक्षा ग्रहण करता हूँ।

४. सत्य

पालि नें दृ मुसावादा वेरमणी सिक्खापदम् समादियामी

अर्थ दृ मैं झूठ बोलने से विरत रहने की षिक्षा ग्रहण करता हूँ।

५. सभी नषा से विरत

पालि में दृ सुरामेरय मज्जपमादठटाना वेरमणी सिक्खापदम् समादियामी।

अर्थ दृ मैं पक्की षराब (सुरा) कच्ची षराब (मेरय), नषीली चीजों (मज्जपमादठटाना) के सेवन से विरत रहने की षिक्षा ग्रहण करता हूँ।

बोधि

गौतम बुद्ध ने जिस ज्ञान की प्राप्ति की थी उसे 'बोधि' कहते हैं। माना जाता है कि बोधि पाने के बाद ही संसार से छुटकारा पाया जा सकता है। सारी पारमिताओं (पूर्णताओं) की निश्पत्ति, चार आर्य सत्यों की पूरी समझ और कर्म के निरोध से ही बोधि पाई जा सकती है। इस समय, लोभ, दोश, मोह, अविद्या, तष्णा और आत्मा में विष्वास सब गायब हो जाते हैं। बोधि के तीन स्तर होते हैं : श्रावकबोधि, प्रत्येकबोधि और सम्यकसंबोधि। सम्यकसंबोधि बौध धर्म की सबसे उन्नत आदर्ष मानी जाती है।

दर्षन एवं सिद्धांत

गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, बौद्ध धर्म के अलग–अलग संप्रदाय उपस्थित हो गये हैं, परंतु इन सब के बहुत से सिद्धांत मिलते हैं।

प्रतीत्यसमुत्पाद

प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत कहता है कि कोई भी घटना केवल दूसरी घटनाओं के कारण ही एक जटिल कारण–परिणाम के जाल में विद्यमान होती है। प्राणियों के लिये, इसका अर्थ है कर्म और विपाक (कर्म के परिणाम) के अनुसार अनंत संसार का चक्र। क्योंकि सब कुछ अनित्य और अनात्मं (बिना आत्मा के) होता है, कुछ भी सच में विद्यमान नहीं है। हर घटना मूलतः षुन्य होती है। परंतु, मानव, जिनके पास ज्ञान की षक्ति है, तृश्णा को, जो दुःख का

कारण है, त्यागकर, तृश्णा में नश्ट की हुई षक्ति को ज्ञान और ध्यान में बदलकर, निर्वाण पा सकते हैं।तृश्णा षून्य जीवन केवल विपष्यना से संभव है। आज के इस युग मे प्रतीत्यसमुत्पाद समाज से कही गायब हो ।

क्षणिकवाद

इस दुनिया में सब कुछ क्षणिक है और नष्वर है। कुछ भी स्थायी नहीं। परंतु वैदिक मत से भिन्न है।

अनात्मवाद

आत्मा का अर्थ 'मैं' होता है। किन्तु, प्राणी षरीर और मन से बने है, जिसमे स्थायित्व नहीं है। क्षण–क्षण बदलाव होता है। इसलिए, 'मैं' अर्थात आत्मा नाम की कोई स्थायी चीज नहीं। जिसे लोग आत्मा समझते हैं, वो चेतना का अविच्छिन्न प्रवाह है। आत्मा का स्थान मन ने लिया है।

अनीष्वरवाद

बुद्ध ने ब्रह्म–जाल सुत्त में सषश्टि का निर्माण कैसा हुआ, ये बताया है। सषश्टि का निर्माण होना और नश्ट होना बार–बार होता है। ईष्वर या महाब्रह्मा सषश्टि का निर्माण नहीं करते क्योंकि दुनिया प्रतीत्यसमुत्पाद अर्थात कार्यकरण–भाव के नियम पर चलती है। भगवान बुद्ध के अनुसार, मनुश्यों के दूःख और सुख के लिए कर्म जिम्मेदार है, ईष्वर या महाब्रह्मा नहीं। पर अन्य जगह बुद्ध ने सर्वोच्च सत्य को अवर्णनीय कहा हैं।

षून्यतावाद

यथार्थवाद

बौद्ध धर्म का मतलब निराषावाद नहीं है। दुख का मतलब निराषावाद नहीं है, बल्कि सापेक्षवाद और यथार्थवाद हैख्17,। बुद्ध, धम्म और संघ, बौद्ध धर्म के तीन त्रिरत्न हैं। भिक्षु, भिक्षुणी, उपसका और उपसिका संघ के चार अवयव हैं।ख्18,

बोधिसत्व

दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करने वाला बोधिसत्व कहलाता है। बोधिसत्व जब दस बलों या भूमियों (मुदिता, विमला, दीप्ति, अर्चिश्मती, सुदुर्जया, अभिमुखी, दूरंगमा, अचल, साधुमती, धम्म–मेघा) को प्राप्त कर लेते हैं तब ''बुद्ध'' कहलाते हैं। बुद्ध बनना ही बोधिसत्व के जीवन की पराकाश्ठा है। इस पहचान को बोधि (ज्ञान) नाम दिया गया है। कहा जाता है कि बुद्ध षाक्यमुनि केवल एक बुद्ध हैं – उनके पहले बहुत सारे थे और भविश्य में और होंगे। उनका कहना था कि कोई भी बुद्ध बन सकता है अगर वह दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करते हुए बोधिसत्व प्राप्त करे और बोधिसत्व के बाद दस बलों या भूमियों को प्राप्त करे। बौद्ध ध र्म का अंतिम लक्ष्य है संपूर्ण मानव समाज से दुःख का अंत। ''मैं केवल एक ही पदार्थ सिखाता हूँ – दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख का निरोध है, और दुःख के निरोध का मार्ग है'' (बुद्ध)। बौद्ध धर्म के अनुयायी अश्टांगिक मार्ग पर चलकर न के अनुसार जीकर अज्ञानता और दुःख से मुक्ति और निर्वाण पाने की कोषिष करते हैं।

संप्रदाय

बौद्ध धर्म में संघ का बड़ा स्थान है। इस धर्म में बुद्ध, धम्म और संघ को 'त्रिरत्न' कहा जाता है। संघ के नियम के बारे में गौतम बुद्ध ने कहा था कि छोटे नियम भिक्षुगण परिवर्तन कर सकते है। उन के महापरिनिर्वाण पष्चात संघ का आकार में व्यापक वर्षद्धि हुआ। इस वर्षद्धि के पष्चात विभिन्न क्षेत्र, संस्कृति, सामाजिक अवस्था, दीक्षा, आदि के आधार पर भिन्न लोग बुद्ध धर्म से आबद्ध हुए और संघ का नियम धीरे–धीरे परिवर्तन होने लगा। साथ ही में अंगुत्तर निकाय के कालाम सुत्त में बुद्ध ने अपने अनुभव के आधार पर धर्म पालन करने की स्वतंत्रता दी है। अतः, विनय के नियम में परिमार्जनध्परिवर्तन, स्थानीय सांस्कृतिकध्भाशिक पक्ष, व्यक्तिगत धर्म का स्वतंत्रता, धर्म के निष्चित पक्ष में ज्यादा वा कम जोड़ आदि कारण से बुद्ध धर्म में विभिन्न संप्रदाय व संघ में परिमार्जित हुए। वर्तमान में, इन संघ में प्रमुख संप्रदाय या पंथ थेरवाद, महायान और वज्रयान है। भारत में बौद्ध धर्म का नवयान संप्रदाय है जो भीमराव आंबेडकर द्वारा निर्मित है।

थेरवाद

- श्रावकयान
- प्रत्येकबुद्धयान
- थेरवाद बुद्ध के मौलिक उपदेष ही मानता है।
- श्रीलंका, थाईलैंड, म्यान्मार, कंबोडिया, लाओस, बांग्लादेष, नेपाल आदि देषों में थेरवाद बौद्ध धर्म का प्रभाव हैं।

महायान

- महायान बुद्ध की वास्तविक षिक्षाओं का पालन नहीं करता।
- बुद्ध के अलावा हजारों बोधिसत्व की पूजा करता है।
- बोधिसत्त्वयान
- बोधिसत्त्वसुत्रयान
- बोधिसत्त्वतंत्रयान ध वज्रयान
- महायान बुद्ध की पूजा करता है।
- चीन, जापान, उत्तर कोरिया, वियतनाम, दक्षिण कोरिया आदी देषों में प्रभाव हैं।

वज्रयान

- महायान की षाखा

- वज्रयान को तिब्बती तांत्रिक धर्म भी कहा जाता हैं।
- भूटान में राश्ट्रधर्म
- भूटान, तिब्बत और मंगोलिया में प्रभाव

नवयान

- डॉ. भीमराव आंबेडकर के सिद्धांतों का अनुसरण
- बुद्ध की मूल षिक्षाओं का अनुसरण
- महायान, वज्रयान, थेरवाद से भिन्न सिद्धांत
- भारत में (मुख्यतः महाराश्ट्र में) प्रभाव

प्रमुख तीर्थ

मुख्य लेखः बौद्ध धर्म के तीर्थ स्थल

भगवान बुद्ध के अनुयायीओं के लिए विष्व भर में पाँच मुख्य तीर्थ मुख्य माने जाते हैं :

1. लुंबिनी दृ जहाँ भगवान बुद्ध का जन्म हुआ।
2. बोधगया दृ जहाँ बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त हुआ।
3. सारनाथ दृ जहाँ से बुद्ध ने दिव्यज्ञान देना प्रारंभ किया।
4. कुषीनगर दृ जहाँ बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ।
5. दीक्षाभूमि, नागपुर दृ जहाँ भारत में बौद्ध धर्म का पुनरूत्थान हुआ।

लुंबिनी

माया देवी मंदिर, लुंबिनी, नेपाल

यह स्थान नेपाल की तराई में नौतनवाँ रेलवे स्टेषन से 25 किलोमीटर और गोरखपुर–गोंडा लाइन के सिद्धार्थ नगर स्टेषन से करीब 12 किलोमीटर दूर है। अब तो सिद्धार्थ नगर से लुंबिनी तक पक्की सड़क भी बन गई है। ईसा पूर्व 563 में राजकुमार सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) का जन्म यहीं हुआ था। हालाँकि, यहाँ के बुद्ध के समय के अधिकतर प्राचीन विहार नश्ट हो चुके हैं। केवल सम्राट अषोक का एक स्तंभ अवषेश के रूप में इस बात की गवाही देता है कि भगवान बुद्ध का जन्म यहाँ हुआ था। इस स्तंभ के अलावा एक समाधि स्तूप में बुद्ध की एक मूर्ति है। नेपाल सरकार ने भी यहाँ पर दो स्तूप और बनवाएँ हैं।

बोधगया

महाबोधि विहार, बोधगया

लगभग छह वर्श तक जगह–जगह और विभिन्न गुरुओं के पास भटकने के बाद भी बुद्ध को कहीं परम ज्ञान न मिला। इसके बाद वे गया पहुँचे। आखिर में उन्होंने प्रण लिया कि जब तक असली ज्ञान उपलब्ध नहीं होता, वह पिपल वष्क्ष के नीचे से नहीं उठेंगे, चाहे उनके प्राण ही क्यों न निकल जाएँ। इसके बाद करीब छह साल तक दिन रात एक पीपल वष्क्ष के नीचे भूखे–प्यासे तप किया। आखिर में उन्हें परम ज्ञान या बुद्धत्व उपलब्ध हुआ। जिस पिपल वष्क्ष के नीचे वह बैठे, उसे बोधि वष्क्ष अर्थात 'ज्ञान का वष्क्ष' कहा जाता है। वहीं गया को बोधगया के नाम से जाना जाता है।

सारनाथ

बनारस छावनी स्टेषन से छह किलोमीटर, बनारस–सिटी स्टेषन से साढ़े तीन किलोमीटर और सड़क मार्ग से सारनाथ चार किलोमीटर दूर पड़ता है। यह पूर्वोत्तर रेलवे का स्टेषन है और बनारस से यहाँ जाने के लिए सवारी तांगा और रिक्षा आदि मिलते हैं। सारनाथ में बौद्ध–धर्मषाला है। यह बौद्ध तीर्थ है। लाखों की संख्या में बौद्ध अनुयायी और बौद्ध ध र्म में रुचि रखने वाले लोग हर साल यहाँ पहुँचते हैं। बौद्ध अनुयायीओं के यहाँ हर साल आने का सबसे बड़ा कारण यह है कि भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेष यहीं दिया था। सदियों पहले इसी स्थान से उन्होंने धर्म–चक्र–प्रवर्तन प्रारंभ किया था। बौद्ध अनुयायी सारनाथ के मिट्टी, पत्थर एवं कंकरों को भी पवित्र मानते हैं। सारनाथ की दर्षनीय वस्तुओं में अषोक का चतुर्मुख सिंह स्तंभ, भगवान बुद्ध का प्राचीन मंदिर, धामेक स्तूप, चौखंडी स्तूप, आदि षामिल हैं।

कुषीनगर

कुषीनगर बौद्ध अनुयायीओं का बहुत बड़ा पवित्र तीर्थ स्थल है। भगवान बुद्ध कुषीनगर में ही महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए। कुषीनगर के समीप हिरन्यवती नदी के समीप बुद्ध ने अपनी आखरी साँस ली। रंभर स्तूप के निकट उनका अंतिम संस्कार किया गया। उत्तर प्रदेष के जिला गोरखपुर से 55 किलोमीटर दूर कुषीनगर बौद्ध अनुयायीओं के अलावा पर्यटन प्रेमियों के लिए भी खास आकर्शण का केंद्र है। 80 वर्श की आयु में षरीर त्याग से पहले भारी संख्या में लोग बुद्ध से मिलने पहुँचे। माना जाता है कि लगभग 20 वर्शीय ब्राह्मण सुभद्र ने बुद्ध के वचनों से प्रभावित होकर संघ से जुड़ने की इच्छा जताईं। माना जाता है कि सुभद्र आखरी भिक्षु थे जिन्हें बुद्ध ने दीक्षित किया।

दीक्षाभूमी

दीक्षाभूमि, नागपुर महाराश्ट्र राज्य के नागपुर षहर में स्थित पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण बौद्ध तीर्थ स्थल है। यहीं पर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने 14 अक्टूबर, 1956 को विजयादषमी ध दषहरा के दिन पहले स्वयं अपनी पत्नी डॉ. सविता आंबेडकर के साथ बौद्ध धर्म की दीक्षा ली और फिर अपने 5,00,000 हिंदू दलित समर्थकों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी थी। 1956 से आज तक हर साल यहाँ देष–विदेष से 20 से 25 लाख बुद्ध और बाबासाहेब के बौद्ध अनुयायी दर्षन करने के लिए आते है। इस पवित्र एवं महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थल को महाराश्ट्र सरकार द्वारा 'अ'वर्ग पर्यटन एवं तीर्थ स्थल का दर्जा दिया गया हैं।

Unit- 3

अजमेर शरीफ दरगाहः इतिहास, राजनीति और महत्व

परिचय

अजमेर षरीफ दरगाह, राजस्थान के अजमेर षहर में स्थित एक प्रसिद्ध सूफी तीर्थस्थल है, जो सूफी संत हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिष्ती, जिन्हें गरीब नवाज के नाम से जाना जाता है, की समाधि स्थल है। यह स्थान न केवल मुस्लिमों बल्कि सभी धर्मों के अनुयायियों के लिए श्रद्धा का एक प्रमुख केंद्र है, जो धार्मिक सौहार्द्र का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इतिहास हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिष्ती का जन्म 1143 ईस्वी में सिस्तान (अब ईरान में) हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक षिक्षा और आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के बाद, मानवता, प्रेम और सद्भाव का संदेष फैलाने के उद्देष्य से भारत का रुख किया। वे लगभग 1192 ईस्वी में भारत पहुंचे और अजमेर को अपना आध्यात्मिक केंद्र बनाया।

ख्वाजा साहब ने सूफीवाद के चिष्ती संप्रदाय की स्थापना की और अपने संदेषों के माध्यम से सभी धर्मों के लोगों को एक साथ लाने का प्रयास किया। उनके संदेष सरल, प्रेमपूर्ण और मानवीय थे, जो गरीबों, बेसहारा और वंचित वर्गों के लिए विषेश रूप से आकर्शित करने वाले थे। 1236 ईस्वी में उनकी मष्त्यु के बाद उनके समाधि स्थल को दरगाह षरीफ के रूप में विकसित किया गया, जो बाद में एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल बन गया।

राजनीतिक इतिहासरू दरगाह का राजनीतिक महत्व मुगल साम्राज्य के समय से स्पश्ट रूप से उभरकर सामने आया। अकबर महान सहित कई मुगल षासकों ने अजमेर दरगाह के प्रति गहरी श्रद्धा व्यक्त की। अकबर, जिन्होंने अजमेर में नियमित रूप से यात्रा की, ने दरगाह के विकास में कई योगदान दिए। उन्होंने दरगाह परिसर के विस्तार और संरक्षण के लिए कई आर्थिक प्रावधान किए।

मुगलों के बाद ब्रिटिष काल में भी दरगाह का महत्व बना रहा। औपनिवेषिक काल में यह स्थल हिंदू–मुस्लिम एकता के प्रतीक के रूप में उभरा। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू और मौलाना आजाद जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने राश्ट्रीय आंदोलन के दौरान दरगाह का दौरा किया, जिससे इसका राश्ट्रीय महत्व बढ़ा।

आधुनिक राजनीतिक संदभर्रू स्वतंत्र भारत में, अजमेर दरगाह लगातार राश्ट्रीय राजनीति के केंद्र में रही है। राजनेता, राश्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्ति नियमित रूप से यहां आते रहे हैं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, नरसिम्हा राव, अटल बिहारी वाजपेयी, मनमोहन सिंह और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित कई प्रमुख राजनीतिक हस्तियों ने यहां आषीर्वाद प्राप्त किया है। राजनीतिक दल अक्सर चुनावों के दौरान दरगाह का दौरा करते हैं और धार्मिक एकता एवं सामाजिक समरसता का संदेष देते हैं।

सामाजिक महत्वरू दरगाह की प्रमुख विषेशताओं में से एक इसका सामाजिक समावेष है। हर साल ख्वाजा साहब की पुण्यतिथि पर आयोजित होने वाले ष्उर्सष उत्सव में भारत सहित पूरी दुनिया से लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। इस दौरान विषेश प्रार्थनाएं, कव्वालियां, सूफी संगीत, और गरीबों के लिए विषाल भंडारे आयोजित किए जाते हैं। यह आयोजन सामाजिक समानता और सामंजस्य का जीवंत उदाहरण है, जहाँ हर धर्म और समुदाय के लोग एकसाथ पूजा–अर्चना करते हैं।

सांस्कृतिक महत्वरू अजमेर दरगाह भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का भी अभिन्न अंग है। यहां सूफी कव्वाली की परंपरा काफी पुरानी और समष्द्ध है। संगीतज्ञ और कलाकार पूरी दुनिया से यहां आते हैं और सूफी संगीत प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त दरगाह की स्थापत्य कला, जिसमें मुगल, राजपूत और स्थानीय राजस्थानी षैली का मिश्रण है, भारतीय कला–संस्कृति के इतिहास को प्रतिबिंबित करती है।

सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीकरू दरगाह षरीफ का वातावरण बहुलवाद का प्रतीक है। यह एक ऐसा स्थल है जहाँ हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई, सभी लोग श्रद्धा से आते हैं। यहाँ मन्नतें मांगी जाती हैं और पूरी होने पर श्रद्धालु चादर और फूल चढ़ाते हैं। नारियल चढ़ाना और दीप जलाने जैसे अनेक हिन्दू परंपराएं भी यहां स्वाभाविक रूप से अपनाई गई हैं। इससे भारतीय समाज के बहुधर्मी स्वरूप को मजबूती मिलती है।

आर्थिक महत्वरू दरगाह के आसपास स्थानीय अर्थव्यवस्था काफी हद तक पर्यटन और तीर्थयात्रा पर निर्भर है। यहां आने वाले लाखों पर्यटक स्थानीय दुकानों, होटल, गेस्ट हाउस और परिवहन उद्योग के लिए आर्थिक लाभ का स्रोत होते हैं। इस तीर्थयात्रा से स्थानीय रोजगार और आय में वषद्धि होती है।

अंतरराश्ट्रीय पहचानरू अजमेर षरीफ की प्रसिद्धि वैष्विक स्तर पर है। पाकिस्तान, बांग्लादेष, अफगानिस्तान, ईरान, तुर्की और मध्य–एषिया के विभिन्न देषों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां आते हैं। यह दरगाह विष्व में सूफीवाद के संदेष को फैलाने में प्रमुख भूमिका निभा रही है। भारतीय कूटनीति में दरगाह का सांस्कृतिक महत्व इसे अंतरराश्ट्रीय समझ और सद्भाव को मजबूत करने में सक्षम बनाता है।

चुनौतियां और विवाद दरगाह के प्रषासनिक प्रबंधन को लेकर कुछ विवाद भी सामने आते रहे हैं। विभिन्न समितियों और संगठनों के बीच मतभेद कई बार प्रषासनिक मुद्दों को जन्म देते हैं, लेकिन आमतौर पर ये मामले आपसी बातचीत से सुलझा लिए जाते हैं। कुछ मौकों

पर सांप्रदायिक तनाव के प्रयास भी हुए, लेकिन दरगाह का सामंजस्यपूर्ण स्वरूप और स्थानीय प्रषासन की सक्रियता के कारण ये मामले जल्दी ही नियंत्रित कर लिए गए।

निश्कशर्रू अजमेर षरीफ दरगाह भारत की सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक विरासत का एक अभिन्न हिस्सा है। इसका महत्व केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि व्यापक रूप से राश्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और मानवतावादी सिद्धांतों को सषक्त करने वाला भी है। यह दरगाह इतिहास से लेकर वर्तमान तक सभी समुदायों को जोड़ने का काम करती है, जो भारत की बहुसांस्कृतिक विरासत को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण स्थल है।

हाजी अली दरगाह इतिहास, राजनीति और महत्व

परिचय

हाजी अली दरगाह मुंबई षहर के प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों में से एक है। यह अरब सागर के किनारे पर स्थित है और सूफी संत हाजी अली षाह बुखारी की समाधि स्थल के रूप में प्रसिद्ध है। हाजी अली की दरगाह न केवल मुस्लिम समुदाय के लिए, बल्कि सभी धर्मों के अनुयायियों के लिए एक श्रद्धा का केंद्र है, जो धार्मिक और सांप्रदायिक सौहार्द्र का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करती है।

इतिहास

हाजी अली षाह बुखारी का जन्म 14वीं सदी में हुआ था। वे एक सूफी संत और धार्मिक गुरु थे। कहा जाता है कि हाजी अली षाह बुखारी मक्का से भारत आए थे, और वे एक बार समुद्र के रास्ते मुंबई के पास स्थित अलीबाग आए। अपने जीवन में, हाजी अली षाह बुखारी ने सूफीवाद के सिद्धांतों का पालन किया और विषेश रूप से गरीबों और वंचितों के कल्याण के लिए कार्य किया।

हाजी अली की दरगाह उनकी मष्त्यु के बाद बनाई गई। किंवदंतियों के अनुसार, हाजी अली षाह बुखारी अपनी मष्त्यु से पूर्व यह प्रकट करते हैं कि उनकी समाधि समुद्र के किनारे पर बनाई जानी चाहिए, और आज यह दरगाह समुद्र के द्वीप पर स्थित है। यह स्थल न केवल एक धार्मिक तीर्थस्थल है, बल्कि यह भारतीय मुस्लिम वास्तुकला और संस्कृति का एक उदाहरण भी है।

राजनीतिक महत्व

हाजी अली दरगाह का राजनीतिक महत्व भी अत्यधिक है। भारतीय राजनीति में यह दरगाह एक सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है। मुगलों और ब्रिटिष काल में, हाजी अली की दरगाह के प्रति श्रद्धा रही थी। मुगलों के षासनकाल में, खासकर अकबर के समय में

दरगाह को संरक्षित और प्रचारित किया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, महात्मा गांधी और अन्य नेताओं ने यहां आकर धार्मिक एकता का संदेष दिया।

स्वतंत्रता के बाद, हाजी अली दरगाह भारतीय राजनीति और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में एक महत्वपूर्ण स्थान पर रहा है। यह स्थान भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने वाला स्थल रहा है, और यहां विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता भी आकर अपने समर्थन का प्रतीक व्यक्त करते रहे हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

हाजी अली दरगाह केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक और सामाजिक केंद्र भी है। दरगाह की वास्तुकला भारतीय मुस्लिम संस्कृति और वास्तुकला का उत्कृश्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। यहाँ की मस्जिद और समाधि स्थल भारतीय कला और स्थापत्य के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, जिनमें मुस्लिम, राजपूत और स्थानीय षैलियाँ मिलती हैं।

इस दरगाह का एक विषेश आयोजन है उर्स, जो हाजी अली षाह बुखारी की पुण्यतिथि पर मनाया जाता है। यह आयोजन दुनिया भर से श्रद्धालुओं को आकर्शित करता है, और इसमें कव्वाली, सूफी संगीत, धार्मिक प्रार्थनाएँ और गरीबों के लिए भंडारे आयोजित किए जाते हैं। उर्स के दौरान यहाँ आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या लाखों में होती है, और यह एक ऐसा अवसर है जब विभिन्न समुदायों और धर्मों के लोग एक साथ आते हैं और एकता का संदेष देते हैं।

इसके अलावा, हाजी अली दरगाह मुंबई के पर्यटकों के लिए एक प्रमुख स्थल है, जहाँ स्थानीय लोग और पर्यटक दोनों आते हैं। यहाँ पर स्थित मस्जिद की सफेद संगमरमर से बनी हुई संरचना पर्यटकों को आकर्शित करती है, और यह स्थल मुंबई के महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्रों में षामिल है।

सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक

हाजी अली दरगाह का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उसकी सांप्रदायिक सद्भाव और धार्मिक एकता का प्रतीक होना है। यह स्थल हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है। यहाँ हिंदू श्रद्धालु भी मन्नतें मांगते हैं और मुस्लिम श्रद्धालु भी आते हैं। यह दरगाह भारतीय बहुलवादी समाज का प्रतीक है, जहाँ हर धर्म के लोग अपनी आस्था के अनुसार पूजा अर्चना करते हैं।

हाजी अली की दरगाह पर आयोजित होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों में हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही धर्मों के लोग भाग लेते हैं। यह स्थान भारत की सांप्रदायिक सद्भाव की दिषा में एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है, जो यह दर्षाता है कि विभिन्न धर्मों के अनुयायी एक साथ मिलकर षांति और भाईचारे का संदेष फैला सकते हैं।

आर्थिक और पर्यटन महत्व

हाजी अली दरगाह का आर्थिक महत्व भी अत्यधिक है। यह स्थल मुंबई का एक प्रमुख पर्यटन केंद्र है, जहाँ लाखों लोग हर साल आते हैं। इसके आसपास का इलाका होटल व्यवसाय, परिवहन, और अन्य छोटे व्यवसायों से जुड़ा हुआ है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल प्रदान करता है। यहाँ आने वाले पर्यटक न केवल धार्मिक दृश्टिकोण से, बल्कि वास्तुकला और सांस्कृतिक महत्व के कारण भी यहाँ आते हैं।

मुंबई की संकीर्ण और व्यस्त गलियों के बीच स्थित हाजी अली दरगाह अपने षांत वातावरण और आस्थापूर्ण ऊर्जा से पर्यटकों को आकर्शित करती है। यह स्थल न केवल भारतीय पर्यटकों के लिए, बल्कि अंतरराश्ट्रीय पर्यटकों के लिए भी एक महत्वपूर्ण आकर्शण है।

अंतरराश्ट्रीय पहचान

हाजी अली दरगाह की प्रसिद्धि केवल भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया भर में है। पाकिस्तान, बांग्लादेष, अफगानिस्तान, और मध्य–एषिया के देषों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहाँ आते हैं। यह दरगाह विष्व स्तर पर सूफीवाद और धार्मिक सहिश्णुता के संदेष को फैलाने का एक प्रमुख केंद्र बन चुकी है। इसके अलावा, हाजी अली दरगाह के बारे में अंतरराश्ट्रीय मीडिया में भी लगातार रिपोर्टिंग होती रहती है, जो इसे एक वैष्विक धार्मिक स्थल के रूप में स्थापित करता है।

चुनौतियाँ और विवाद

हालाँकि हाजी अली दरगाह भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है, लेकिन यहाँ कुछ विवाद भी सामने आए हैं। एक प्रमुख विवाद तब हुआ था, जब महिलाओं के प्रवेष पर प्रतिबंध लगने के बाद कई महिलाओं ने इसका विरोध किया। यह मामला अदालत तक पहुंचा और बाद में अदालत ने महिलाओं को भी दरगाह में प्रवेष करने की अनुमति दी।

इसके अलावा, दरगाह के आसपास के इलाके में भूमि उपयोग और विकास के मुद्दे भी समय–समय पर चर्चा का विशय बने हैं। हालांकि, इन मुद्दों का समाधान प्रषासन और स्थानीय समुदाय की साझेदारी से निकाला गया है।

निश्कर्श :

हाजी अली दरगाह एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर है, जो भारतीय समाज के सहिश्णुता और विविधता का प्रतीक है। यहाँ की स्थापत्य कला, धार्मिक अनुश्ठान, और सांस्कृतिक आयोजन भारत की समष्द्ध धरोहर को दर्षाते हैं। यह स्थल न केवल एक धार्मिक तीर्थस्थल है, बल्कि यह राश्ट्रीय और अंतरराश्ट्रीय स्तर पर धार्मिक एकता और सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक है। हाजी अली दरगाह भारतीय समाज को एकता, प्रेम और सहिश्णुता का संदेष देती है, और इसने समय के साथ अपने महत्व को और बढ़ाया है।

हजरतबल श्राइनः इतिहास, राजनीति और महत्व

परिचय

हजरतबल श्राइन, जो श्रीनगर, जम्मू और कष्मीर में डल झील के उत्तरी किनारे पर स्थित है, भारत के सबसे प्रसिद्ध इस्लामी तीर्थस्थलों में से एक है। यह श्राइन हजरतबल के नाम से प्रसिद्ध है, जो पैगंबर मुहम्मद के एक अनुयायी माने जाते हैं। हजरतबल श्राइन खासतौर पर पैगंबर मुहम्मद का एक अवषेश रखने के लिए प्रसिद्ध है, जिसे श्नूरश कहा जाता है। यह अवषेश लाखों श्रद्धालुओं को आकर्शित करता है और इसे एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल बनाता है।

हजरतबल श्राइन केवल एक धार्मिक केंद्र नहीं हैय यह क्षेत्र के समष्द्ध इतिहास, विविध संस्कृति और राजनीतिक महत्व का प्रतीक भी है। वर्शों से, यह एक आध्यात्मिक ज्ञान, राजनीतिक प्रतीक और सांस्कृतिक मिलन का स्थल बना हुआ है। इस विस्तष्त विवरण में, हम हजरतबल श्राइन के ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक महत्व की चर्चा करेंगे।

हजरतबल श्राइन का इतिहास

हजरतबल श्राइन का इतिहास कष्मीर के धार्मिक और सांस्कृतिक ताने–बाने से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है। यह श्राइन 17वीं सदी के मध्य में स्थापित किया गया था, जब इसे एक साधारण इमारत के रूप में बनाया गया था। हालांकि, जब यह पैगंबर मुहम्मद का अवषेश रखने का स्थल बना, तो इसका महत्व बढ़ गया और यह एक प्रमुख धार्मिक केंद्र बन गया।

स्थापना और प्रारंभिक वर्श

हजरतबल श्राइन को पहले सुलतान जैनुल आबिदीन (1420–1470) के षासनकाल में बनाया गया था, जो कष्मीर के प्रमुख षासक थे और जिनके षासन में धार्मिक सहिश्णुता और सांस्कृतिक मिलन को बढ़ावा दिया गया था। हालांकि, मुगल साम्राज्य के दौरान 16वीं सदी में इस श्राइन को एक महत्वपूर्ण इस्लामी षिक्षा और भक्ति केंद्र के रूप में उभारने में मदद मिली।

यह श्राइन कष्मीरी वास्तुकला की विषेशता को दर्षाता है, जिसमें सुंदर सफेद संगमरमर और लकड़ी का काम दिखाई देता है। यह कष्मीर की इस्लामी और स्थानीय षैलियों के मिश्रण का प्रतीक है। हालांकि श्राइन षुरुआत में एक साधारण इमारत थी, लेकिन जब यह अवषेश का घर बना, तब इसका महत्व अत्यधिक बढ़ गया।

पैगंबर मुहम्मद का अवषेश

हजरतबल श्राइन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू वह अवषेश है जो इसमें रखा गया हैरू पैगंबर मुहम्मद की एक बाल की लट, जिसे श्नूरश (रोषनी) कहा जाता है। लोकप्रिय विष्वास के अनुसार, यह अवषेश कष्मीर में मीर सैयद अली हमदानी द्वारा लाया गया था, जो 14वीं सदी में कष्मीर आए थे। अवषेश को श्राइन में रखा गया और कष्मीर के बादषाहों द्वारा संरक्षित किया गया।

अवषेश खुद सार्वजनिक रूप से नहीं दिखाए जाते, सिवाय विषेश अवसरों के। 1964 में अवषेश को सार्वजनिक रूप से प्रदर्षित किया गया था, जिसमें लाखों लोग श्राइन में एकत्रित हुए थे। अवषेश का महत्व केवल धार्मिक दृश्टिकोण से नहीं, बल्कि इसके राजनीतिक प्रतीक के रूप में भी है, क्योंकि यह कष्मीर के संघर्श और असहमति के दौरान एक केंद्र बिंदु रहा है।

अवषेश आज भी हजारों तीर्थयात्रियों और श्रद्धालुओं को आकर्शित करता है, विषेश रूप से धार्मिक घटनाओं जैसे ईद और वार्शिक उर्स समारोह के दौरान, जो हजरतबल श्राइन के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को और बढ़ाता है।

हजरतबल श्राइन का राजनीतिक महत्व

हजरतबल श्राइन का राजनीतिक महत्व जम्मू और कष्मीर के इतिहास में महत्वपूर्ण रहा है। वर्शों से, यह श्राइन धार्मिक भक्ति और राजनीतिक संघर्श दोनों का प्रतीक बना है। इसका प्रभाव कष्मीर के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य पर गहरा रहा है, और यह अक्सर राजनीतिक आंदोलनों और कष्मीर संघर्श के केंद्र में रहा है।

प्रतिरोध और पहचान का प्रतीक

1960 के दषक के दौरान, पैगंबर मुहम्मद का अवषेश कष्मीरी मुस्लिम पहचान का एक षक्तिषाली प्रतीक बन गया। 1963 में अवषेश को अस्थायी रूप से श्राइन से बाहर ले जाया गया था, और इस घटना ने कष्मीर में व्यापक विरोध और हड़तालों को जन्म दिया था। यह घटना इस तथ्य को उजागर करती है कि धार्मिक प्रतीक और क्षेत्रीय राजनीतिक संघर्श गहरे रूप से जुड़े हुए हैं।

इसके बाद, श्राइन ने 1990 के दषक में राजनीतिक आंदोलन और विद्रोह के दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह विरोध और प्रदर्षनों का एक केंद्र बिंदु बन गया, जहाँ हजारों लोग कष्मीर में अधिक स्वायत्तता या स्वतंत्रता की मांग करने के लिए इकट्ठा हुए। इसके साथ ही, यह कष्मीर के राजनीतिक स्थिति के बारे में संवाद का एक प्रमुख स्थल भी बन गया।

आज भी हजरतबल श्राइन का राजनीतिक महत्व अत्यधिक है। यह विभिन्न राजनीतिक समूहों द्वारा अपने संदेष को व्यक्त करने के लिए एक स्थल के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, चाहे वह स्वायत्तता, आत्मनिर्णय या षांति की आवष्यकता से संबंधित हो। हजरतबल श्राइन कष्मीर संघर्श में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है।

राजनीतिक आंदोलनों और संघर्शों का केंद्र

हजरतबल श्राइन ने कई महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलनों को देखा है, विषेश रूप से 20वीं सदी के अंत में कष्मीर के संघर्श के दौरान। यह श्राइन विद्रोह और प्रतिरोध का प्रतीक बना, जहाँ कष्मीरी अलगाववादी आंदोलनों ने अपनी आवाज उठाई।

इसके साथ ही, श्राइन राजनीतिक और सैन्य संघर्शों का भी केंद्र रहा है, जहाँ कष्मीरी लोगों की इच्छाओं और आकांक्षाओं को व्यक्त किया गया। कष्मीर के स्वायत्तता के लिए चल रहे आंदोलनों में हजरतबल का नाम महत्वपूर्ण रहा है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र

हजरतबल श्राइन केवल धार्मिक महत्व का स्थल नहीं है, बल्कि यह कष्मीर के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह एक ऐसा स्थल है जहाँ लोग अपने आध्यात्मिक यात्रा की तलाष में आते हैं, और अपने सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने का प्रयास करते हैं। यह श्राइन कष्मीर के धार्मिक कैलेंडर का अभिन्न हिस्सा है, जहां विषेश अवसरों पर लोग एकत्रित होते हैं।

श्राइन कष्मीर के सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। यहाँ पर श्रद्धालु सिर्फ धार्मिक उद्देष्यों से नहीं, बल्कि कष्मीर की सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव करने के लिए भी आते हैं। कष्मीरी पारंपरिक कलाओं और षिल्प के साथ यहाँ विभिन्न देषों से लोग आते हैं, जो श्राइन के चारों ओर सांस्कृतिक आदान–प्रदान को बढ़ावा देते हैं।

उर्स और त्योहार

हजरतबल श्राइन में सालाना उर्स एक प्रमुख धार्मिक आयोजन है, जो हजरतबल के नामध ारी के पुण्यतिथि पर मनाया जाता है। इस दौरान श्राइन को सजाया जाता है, विषेश प्रार्थनाएँ आयोजित की जाती हैं, और वहां आने वाले श्रद्धालुओं के लिए भोजन और अन्य धार्मिक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। उर्स के दौरान श्राइन के पास का वातावरण आध्यात्मिक उमंग और सामाजिक सौहार्द्र से भरा होता है, जिसमें विभिन्न धर्मों और जातियों के लोग एक साथ आते हैं और एकता का संदेष फैलाते हैं।

ईद के अवसर पर भी हजरतबल में विषेश प्रार्थनाएँ होती हैं, जिसमें हजारों कष्मीरी श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। इन प्रार्थनाओं के माध्यम से लोग षांति, समृद्धि और खुषहाली की कामना करते हैं। हजरतबल के धार्मिक कार्यक्रम कष्मीर के समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाने का कार्य करते हैं।

वास्तुकला और प्राकृतिक सुंदरता

हजरतबल श्राइन की वास्तुकला भी एक प्रमुख आकर्शण है। सफेद संगमरमर से बनी इसकी संरचना आसपास के हरे–भरे परिवेष में बहुत सुंदर दिखाई देती है। यहां के गुंबद और मेहराब कष्मीरी इस्लामी वास्तुकला के अद्भुत उदाहरण हैं। डल झील का दृष्य इसे और भी भव्य बनाता है, और इसके आसपास की षांति और सौंदर्य यहां आने वालों को बहुत आकर्शित करता है।

यह स्थल न केवल धार्मिक दृश्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यहां की प्राकृतिक सुंदरता भी विषेश रूप से आकर्शित करती है। कष्मीर के भव्य पहाड़ों और डल झील के षांत जल के साथ यह स्थल एक आदर्ष स्थान बन गया है, जहाँ लोग ध्यान और प्रार्थना कर सकते हैं।

निश्कर्श

अंततः, हजरतबल श्राइन कष्मीर घाटी का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थल है। पैगंबर मुहम्मद के अवषेश को समेटे यह श्राइन कष्मीर के धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है। इसका ऐतिहासिक महत्व, राजनीतिक निहितार्थ और सांस्कृतिक संपन्नता इसे कष्मीर घाटी के एक केंद्रीय स्थल के रूप में स्थापित करते हैं।

हजरतबल श्राइन कष्मीरी मुस्लिम पहचान का प्रतीक है और कष्मीर संघर्श के राजनीतिक संदर्भ में भी इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। यह षांति, प्रेम और सहिश्णुता का संदेष देता है, और यह कष्मीर के अद्वितीय इतिहास, संस्कृति और संघर्श का प्रतिनिधित्व करता है।

Unit- 4

Jainism

इस यूनिट में हम एक ऐसे धर्म के प्रमुख पहलुओं को कवर करेंगे जो प्राचीन एर्यन काल से हमें प्राप्त हुआ है। इसने दर्षनषास्त्र में कुछ अद्वितीय सिद्धांत दिए हैं। हालांकि हम यहां उन दर्षनषास्त्रों का विस्तष्त विष्लेशण नहीं कर पाएंगे, हम उनके धार्मिक दृश्टिकोणों पर उनके प्रभाव को देखेंगे। सबसे पहले, हम इसके ऐतिहासिक विकास का अवलोकन करेंगे। फिर, हम इसके बुनियादी ग्रंथों और विष्वासों की पहचान करेंगे। तीसरे, हम जैन मोक्ष के मार्ग को समझने की कोषिष करेंगे और अंत में इस प्राचीन धर्म के नैतिक उपदेषों को जानेंगे, जो आज भी एक जीवंत अल्पसंख्यक द्वारा अनुसरण किया जाता है। इस यूनिट के अंत तक आप निम्नलिखित कार्य करने में सक्षम होंगेः

- जैन धर्म के लंबे इतिहास का एक अवलोकन प्राप्त करना
- जैन धर्म के बुनियादी ग्रंथों और विष्वासों की पहचान करना
- जैन मोक्ष के मार्ग को समझना
- जैन नैतिकता पर उपदेषों की सराहना करना

3.1 परिचय

जैन धर्म विष्व का एक सबसे प्राचीन धर्म है, जिसका उदय भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ। जैन धर्म का एक समष्द्ध इतिहास है, न केवल भारत में 2500 वर्शों से अस्तित्व में रहने के कारण, बल्कि इसके भारतीय दर्षनषास्त्र, तर्कषास्त्र, गणित, कला, खगोलषास्त्र और साहित्य में अद्वितीय योगदानों के कारण भी। इसका विषेश जोर नैतिक षुद्धता, धार्मिक सहिश्णुता, आध्यात्मिक संतुश्टि, और पारिस्थितिकी की रक्षा पर है, जो आज की दुनिया के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है।

बुद्धिजीवी रूप से, जैन धर्म भी वेदिक धर्म और उच्च जातियों के प्रभुत्व के खिलाफ उत्पन्न हुआ था। यह भगवान या देवताओं में विष्वास का समर्थन नहीं करता जिनकी पूजा करनी होती है, और न ही यह पादरी वर्ग की मध्यस्थ भूमिका को स्वीकार करता है। यह अपने अनुयायियों को आध्यात्मिक आत्मनिर्भरता प्रदान करता है, और इसका प्रमुख विचार हैरू 'प्रत्येक व्यक्ति अपनी किस्मत का निर्माता होता है'। यही कारण है कि इसे उचित रूप से ष्जैना धर्मष कहा जाता है। श्जैनाश षब्द 'जीतने' (जितने) षब्द से लिया गया है। यह एक महान नायक द्वारा स्थापित किया गया था, जो स्वयं 'स्वयं की विजय' प्राप्त करने वाला था, ताकि वह अपने अनुयायियों को भी ष्आध्यात्मिक विजेताष बना सके।

3.2 ऐतिहासिक अवलोकन

इस खंड में हमारा उद्देष्य जैन धर्म की उत्पत्ति और विकास पर एक संक्षिप्त दृश्टि डालना है। पारंपरिक दावा के अनुसार, हम पहले इसकी उत्पत्ति का उल्लेख करेंगे, फिर महावीर

से जैन धर्म के ऐतिहासिक प्रारंभ पर अधिक समय देंगे। फिर हम इसके विकास का पता लगाएंगे, और अंत में वर्तमान स्थिति पर एक त्वरित दृश्टि डालेंगे।

प्राचीनता से उत्पत्ति

जैन धर्म को षाष्वत और अविनाषी माना जाता है। त्रुटि का अंधकार सत्य को कुछ समय के लिए घेर सकता है, लेकिन तिर्थंकार पुनः प्रकट होंगे और इसे युवा सुंदरता में खिलने देंगे जैसे वसंत। षतिर्थंकारष का षाब्दिक अर्थ होता है ष्पुल बनाने वालाष। धार्मिक दृश्टि से, षतिर्थष वह पवित्र पुल है जिससे लोग जन्म–दुख–मृत्यु (संसार) के समुद्र को पार कर सकते हैं। जैन 24 तिर्थंकारों को पहचानते हैं, जिन्होंने समय–समय पर इस विष्वास को प्रकट किया। पहले तिर्थंकार ऋशभ थे। इनका आखिरी तिर्थंकार महावीर था। जैन इन सभी के नाम जानते हैं और उनके जीवन के कई विवरण भी बताते हैं। लेकिन उनके बारे में कथा–संकीर्णताओं के रूप में बात की जाती है, विषेश रूप से अंतिम दो (पार्ष्व और महावीर) के अलावा। हालांकि, महावीर एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व थे, जैसा कि अन्य स्रोतों द्वारा भी पुश्टि की जाती है। ष्जैना धर्मष जो हमें प्राप्त हुआ है, वह महावीर द्वारा ही प्रस्तुत किया गया था।

महावीर से ऐतिहासिक उत्पत्ति

वर्धमान (599–527 ईसा पूर्व) मगध के एक चोटीदार राजनीतिक कबीले के दूसरे पुत्र थे। उनकी माँ स्थानीय षासक की बहन थीं। जाहिर तौर पर उनका पालन–पोशण भी राजसी था। वह एक सुंदर महिला यषोदा से विवाह किए थे और उनसे एक बेटी भी थी। जब वह 28 वर्श के थे, उनके माता–पिता ने आत्म–निर्वासित उपवास द्वारा मृत्यु को प्राप्त किया, क्योंकि वे पहले से ही पार्ष्व (23वें तिर्थंकार, जो 9वीं सदी ईसा पूर्व में रहे थे) के भक्त थे। संभवतः यह घटना उनके लिए इतनी प्रभावी थी कि उन्होंने घर छोड़ने और तपस्वी जीवन अपनाने का विचार किया। हालांकि, परिवार के सदस्य उन्हें मना करते रहे। अंततः दो वर्शों के बाद, उन्होंने अपने बड़े भाई की अनुमति प्राप्त की, परिवार का त्याग किया और निरग्रंथ (बन्धनों से मुक्त) तपस्वी के आदेष में षामिल हो गए, जो पार्ष्व द्वारा स्थापित था।

महावीर की खोज

कुछ समय बाद महावीर ने महसूस किया कि निरग्रंथों के उपदेष पर्याप्त कठोर नहीं थे। इसलिए उन्होंने उन्हें छोड़ दिया और बिना आश्रय के, मौसम के उतार–चढ़ाव में एक यात्री की तरह जीवन बिताया। उन्होंने कीड़े, चोटों और मनुश्यों द्वारा अपमान का सामना किया, और जो कुछ भी उन्हें दिया गया, वही खाया, अक्सर लंबे उपवासों का पालन करते हुए। उन्होंने यह भी महसूस किया कि सभींजजंबीउमदजे और संपत्ति का त्याग करना आवष्यक है, जिसमें वह एकमात्र वस्त्र भी षामिल था जो उन्होंने पहना था। 12 वर्शों की लंबी खोज के बाद, आखिरकार जब उन्होंने ष्वउदपेबपमदबमष या केवला (अकेलापन) की स्थिति प्राप्त की, तो उन्हें महावीर (महान नायक), जिन (विजेता, जो स्वयं और दुनिया दोनों पर विजय प्राप्त कर चुका है) और अरहंत (एक सम्मानित व्यक्ति) कहा गया।

महावीर का मिषन

उनकी प्राप्ति के तुरंत बाद महावीर ने महसूस किया कि उनका कर्तव्य था कि वह सभी प्राणियों को उनके मुक्ति के मार्ग की घोशणा करें और पार्ष्व के उपदेषों को पुनर्जीवित करें। अब वह भी नंगे पांव यात्रा करते हुए, निर्वस्त्र और भिक्षाटन करते हुए लोगों के बीच जाते थे। उन्होंने सभी को उपदेष दिया, आर्य, बारबारियंस, पुरुशों और महिलाओं को, यहां तक कि मेंढकों जैसे प्राणियों को भी। उन्होंने सभी प्रकार के लोगों को आकर्शित किया, अमीर और गरीब, राजा और आम लोग, पुरुश और महिलाएं, राजकुमार और पुजारी, जातिवादियों और अछूतों को भी। उनके कई अनुयायी भी त्यागी बन गए, जिन्होंने सांसारिक सुखों को छोड़ दिया और यह विष्वास किया कि त्याग ही सभी वासनाओं पर विजय प्राप्त करने का रास्ता है।

महावीर ने अपने अनुयायियों को चारविसक आदेषों में संगठित कियारू दो संन्यासियों के लिए और दो सामान्य लोगों के लिए।

- साधु (संन्यासी) और साध्वी (नन) का आदेष।
- श्रावक (गष्हस्थ पुरुश) और श्राविका (गष्हस्थ महिलाएं) का आदेष।

पारंपरिक रूप से, महावीर ने 14,000 संन्यासियों, 36,000 नन, लाखों गष्हस्थ पुरुशों और महिलाओं को अपना अनुयायी बनाया। अब जब उन्होंने चार षतिर्थष स्थापित किए, तो उन्हें 24वें तिर्थंकार के रूप में जाना गया। महावीर को इतना महान विचारक भी माना गया। उन्होंने अपने समय के जीवन के सभी समस्याओं में गहरी रुचि दिखाई। उनके द्वारा दिए गए उत्तर व्यवस्थित और विष्लेशणात्मक थे। उनका आध्यात्मिक सामर्थ्य और नैतिक महानता उनके समकालीनों द्वारा भी पहचानी गई थी। अंततः 72 वर्श की आयु में उन्होंने आत्म–निर्वासित उपवास द्वारा मष्त्यु को प्राप्त किया। इससे उन्हें एक और उपाधि मिली षसिद्धष (वह व्यक्ति जिसने षुद्ध चेतना प्राप्त की)। उनकी मुक्ति की रात को लोग दीपावली के रूप में मनाते हैं।

संप्रदायों का उदय

महावीर के निर्वाण के कुछ षताब्दियों बाद, जैन समुदाय (संघ) और अधिक जटिल हो गया। संघ के एक हिस्से ने तपस्विता को अधिक कठिन और षुद्धतावादी दृश्टिकोण से देखा। जबकि दूसरा हिस्सा उदार था। इन दो समूहों के बीच मुख्य रूप से मोनास्टिक प्रथाओं पर असहमति ने जैन धर्म में विभाजन को जन्म दिया, जो दूसरे षताब्दी ईसा पूर्व के आसपास षुरू हुआ और पहले षताब्दी ईस्वी में दो संप्रदायों के रूप में पूर्ण रूप से विभाजित हुआ। बाद में कई अन्य असहमति के बिंदु (जैसे, महावीर के जीवनकथाओं, पवित्र ग्रंथों की संहिता, महिलाओं की स्थिति आदि) ने इस विभाजन को और बढ़ाया।

इस प्रकार, जैन धर्म की दो षाखाएं उत्पन्न हुईंरू दिगंबर (षाब्दिक रूप से आसमान में वस्त्रहीन) ने यह दावा किया कि

- संन्यासियों को निर्वस्त्र होना चाहिए क्योंकि निर्वस्त्रता पापों की विजय का प्रमाण है।
- तिर्थंकारों को निर्वस्त्र और आभूशण रहित रूप में चित्रित किया जाना चाहिए।
- महावीर ने कभी विवाह नहीं किया।
- केवल पुरुश ही आत्मज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। परिणामस्वरूप, महिलाएं निर्वस्त्र तपस्वी नहीं बन सकतीं और वे मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकतीं।

ष्वेतांबर (षाब्दिक रूप से श्सफेद वस्त्रधारीश) ने उपर्युक्त सभी दावों का विरोध किया। उन्होंने सरल सफेद वस्त्र पहनने को स्वीकार किया। संभवतः क्षेत्रीय कारकों ने इस विभाजन में योगदान दिया। दिगंबर दक्षिण और मध्य भारत में संस्कृति के मुख्य बल थे और स्थानीय षासकों से राजकीय संरक्षण प्राप्त करते थे। दिगंबरों ने इन क्षेत्रों में स्थानीय भाशाओं के विकास में योगदान दिया। लेकिन ष्वेतांबरों ने उत्तर और पष्चिम भारत में समान भूमिका निभाई।

बाद के विकास

11वीं और 12वीं षताब्दी ईस्वी तक, दिगंबरों को उत्तर की ओर पीछे हटना पड़ा, क्योंकि उन्हें स्थानीय राजाओं से अप्रियता का सामना करना पड़ा, जो स्वयं हिंदू भक्तिवाद आंदोलन के प्रसार के कारण था।

16वीं षताब्दी तक, जैन धर्म ने वर्तमान भौगोलिक स्थिति तक पहुंचने में सफलता प्राप्त की और अब से विभिन्न सुधारात्मक आंदोलनों का समाना हुआ। ष्वेतांबरों में 15वीं षताब्दी के आसपास एक सुधारवादी संप्रदाय ष्स्थाणकवासी संप्रदायष के नाम से उभरा था, जिसने मूर्तिपूजा और मंदिर–पूजा की आलोचना की क्योंकि यह न तो ग्रंथों में उल्लेखित था। इसके विपरीत, लंका साह ने यह बताया कि यह प्रथा कानूनी रूप से अवैध थी। उनके बाद लंका साह संप्रदाय का गठन हुआ।

दिगंबरों में भी 16वीं षताब्दी में दो संप्रदाय उत्पन्न हुएरू विष्वपंथियों ने देवताओं की मूर्तियों को मंदिरों में स्थापित किया, जबकि तेरापंथियों ने इन प्रथाओं को अस्वीकार किया।

वर्तमान स्थिति

जैन धर्म के भीतर कई संप्रदाय उत्पन्न हुए हैं जो छोटे–छोटे अंतर के कारण विभाजित हुए हैं। वे सभी तिर्थंकारों के मुख्य सिद्धांतों पर सहमत होते हैं। आज, जैन धर्म भारत में एक धार्मिक अल्पसंख्यक के रूप में है, जो 3.2 मिलियन की जनसंख्या का हिस्सा है, फिर भी वे अपनी पहचान को बनाए रखने में षक्तिषाली हैं। वे प्राचीन भारतीय धर्म के पुराने अनुयायी हैं जो अभी भी जीवित हैं। वे कृशि से बचते हैं ताकि किसी कीड़े को अनजाने में हानि न हो। वे मुख्य रूप से जौहरी, व्यापारी, ऋणदाता और उद्योगपति बनने की प्राथमिकता रखते हैं। ऐसे में वे आधुनिक राज्यों महाराश्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेष और कर्नाटका में षहरी केंद्रों में रहते हैं। व्यापारियों और उद्योगपतियों के रूप में वे अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हैं। हालांकि जैन धर्म एक संपन्न समुदाय है, वे मानवतावादी कारणों के लिए समर्थन

प्रदान करते हैं और दुखों को कम करने के प्रयास में लगे रहते हैं। वे विषेश रूप से पषुओं के लिए समर्पित केंद्रों के संचालन के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके प्रमुख सिद्धांत जैसे अहिंसा का महात्मा गांधी की नीति पर बहुत प्रभाव पड़ा, जिन्होंने अपनी स्वतंत्रता संग्रामों में अहिंसक प्रतिरोध का उपयोग किया।

3.3 जैन धर्म के पवित्र ग्रंथ

जैन धर्म के ग्रंथों को दो प्रमुख समूहों में बांटा जा सकता हैः (प) प्रारंभिक प्राकृत ग्रंथ और (पप) बाद के संस्कृत ग्रंथ।

महावीर के उपदेषों को पहले मौखिक रूप से लोगों तक पहुँचाया गया था। उनके षिश्यों, गाणधारों ने इन्हें 14 पुरवों (प्रारंभिक ग्रंथों) और फिर 12 अंगों (भागों) के रूप में लिखित रूप में संकलित किया।

3.1 परिचय

जैन धर्म विष्व का एक सबसे प्राचीन धर्म है, जिसका उदय भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ। जैन धर्म का एक समष्द्ध इतिहास है, न केवल भारत में 2500 वर्शों से अस्तित्व में रहने के कारण, बल्कि इसके भारतीय दर्षनषास्त्र, तर्कषास्त्र, गणित, कला, खगोलषास्त्र और साहित्य में अद्वितीय योगदानों के कारण भी। इसका विषेश जोर नैतिक षुद्धता, धार्मिक सहिश्णुता, आध्यात्मिक संतुश्टि, और पारिस्थितिकी की रक्षा पर है, जो आज की दुनिया के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है।

बुद्धिजीवी रूप से, जैन धर्म भी वेदिक ेबतपपिबपंस धर्म और उच्च जातियों के प्रभुत्व के खिलाफ उत्पन्न हुआ था। यह भगवान या देवताओं में विष्वास का समर्थन नहीं करता जिनकी पूजा करनी होती है, और न ही यह पादरी वर्ग की मध्यस्थ भूमिका को स्वीकार करता है। यह अपने अनुयायियों को आध्यात्मिक आत्मनिर्भरता प्रदान करता है, और इसका प्रमुख विचार हैरू 'प्रत्येक व्यक्ति अपनी किस्मत का निर्माता होता है'। यही कारण है कि इसे उचित रूप से ष्जैना धर्मष कहा जाता है। श्जैनाश षब्द 'जीतने' (जितने) षब्द से लिया गया है। यह एक महान नायक द्वारा स्थापित किया गया था, जो स्वयं 'स्वयं की विजय' प्राप्त करने वाला था, ताकि वह अपने अनुयायियों को भी ष्आध्यात्मिक विजेताष बना सके।

3.2 ऐतिहासिक अवलोकन

इस खंड में हमारा उद्देष्य जैन धर्म की उत्पत्ति और विकास पर एक संक्षिप्त दृश्टि डालना है। पारंपरिक दावा के अनुसार, हम पहले इसकी उत्पत्ति का उल्लेख करेंगे, फिर महावीर से जैन धर्म के ऐतिहासिक प्रारंभ पर अधिक समय देंगे। फिर हम इसके विकास का पता लगाएंगे, और अंत में वर्तमान स्थिति पर एक त्वरित दृश्टि डालेंगे।

प्राचीनता से उत्पत्ति

जैन धर्म को षाष्वत और अविनाषी माना जाता है। त्रुटि का अंधकार सत्य को कुछ समय के लिए घेर सकता है, लेकिन तिर्थंकार पुनः प्रकट होंगे और इसे युवा सुंदरता में खिलने देंगे जैसे वसंत। षतिर्थंकारष का षाब्दिक अर्थ होता है ष्पुल बनाने वालाष। धार्मिक दृश्टि से, षतिर्थष वह पवित्र पुल है जिससे लोग जन्म–दुख–मृत्यु (संसार) के समुद्र को पार कर सकते हैं। जैन 24 तिर्थंकारों को पहचानते हैं, जिन्होंने समय–समय पर इस विष्वास को प्रकट किया। पहले तिर्थंकार ऋशभ थे। इनका आखिरी तिर्थंकार महावीर था। जैन इन सभी के नाम जानते हैं और उनके जीवन के कई विवरण भी बताते हैं। लेकिन उनके बारे में कथा–संकीर्णताओं के रूप में बात की जाती है, विषेश रूप से अंतिम दो (पार्ष्व और महावीर) के अलावा। हालांकि, महावीर एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व थे, जैसा कि अन्य स्रोतों द्वारा भी पुश्टि की जाती है। ष्जैना धर्मष जो हमें प्राप्त हुआ है, वह महावीर द्वारा ही प्रस्तुत किया गया था।

महावीर से ऐतिहासिक उत्पत्ति

वर्धमान (599–527 ईसा पूर्व) मगध के एक चोटीदार राजनीतिक कबीले के दूसरे पुत्र थे। उनकी माँ स्थानीय षासक की बहन थीं। जाहिर तौर पर उनका पालन–पोशण भी राजसी था। वह एक सुंदर महिला यषोदा से विवाह किए थे और उनसे एक बेटी भी थी। जब वह 28 वर्श के थे, उनके माता–पिता ने आत्म–निर्वासित उपवास द्वारा मृत्यु को प्राप्त किया, क्योंकि वे पहले से ही पार्ष्व (23वें तिर्थंकार, जो 9वीं सदी ईसा पूर्व में रहे थे) के भक्त थे। संभवतः यह घटना उनके लिए इतनी प्रभावी थी कि उन्होंने घर छोड़ने और तपस्वी जीवन अपनाने का विचार किया। हालांकि, परिवार के सदस्य उन्हें मना करते रहे। अंततः दो वर्शों के बाद, उन्होंने अपने बड़े भाई की अनुमति प्राप्त की, परिवार का त्याग किया और निरग्रंथ (बन्धनों से मुक्त) तपस्वी के आदेष में षामिल हो गए, जो पार्ष्व द्वारा स्थापित था।

महावीर की खोज

कुछ समय बाद महावीर ने महसूस किया कि निरग्रंथों के उपदेष पर्याप्त कठोर नहीं थे। इसलिए उन्होंने उन्हें छोड़ दिया और बिना आश्रय के, मौसम के उतार–चढ़ाव में एक यात्री की तरह जीवन बिताया। उन्होंने कीड़े, चोटों और मनुश्यों द्वारा अपमान का सामना किया, और जो कुछ भी उन्हें दिया गया, वही खाया, अक्सर लंबे उपवासों का पालन करते हुए। उन्होंने यह भी महसूस किया कि सभींजजंबीउमदजे और संपत्ति का त्याग करना आवष्यक है, जिसमें वह एकमात्र वस्त्र भी षामिल था जो उन्होंने पहना था। 12 वर्शों की लंबी खोज के बाद, आखिरकार जब उन्होंने ष्वउदपेबपमदबमष या केवला (अकेलापन) की स्थिति प्राप्त की, तो उन्हें महावीर (महान नायक), जिन (विजेता, जो स्वयं और दुनिया दोनों पर विजय प्राप्त कर चुका है) और अरहंत (एक सम्मानित व्यक्ति) कहा गया।

महावीर का मिषन

उनकी प्राप्ति के तुरंत बाद महावीर ने महसूस किया कि उनका कर्तव्य था कि वह सभी प्राणियों को उनके मुक्ति के मार्ग की घोशणा करें और पार्ष्व के उपदेषों को पुनर्जीवित करें। अब वह भी नंगे पांव यात्रा करते हुए, निर्वस्त्र और भिक्षाटन करते हुए लोगों के बीच जाते

थे। उन्होंने सभी को उपदेष दिया, आर्य, बारबारियंस, पुरुशों और महिलाओं को, यहां तक कि मेंढकों जैसे प्राणियों को भी। उन्होंने सभी प्रकार के लोगों को आकर्शित किया, अमीर और गरीब, राजा और आम लोग, पुरुश और महिलाएं, राजकुमार और पुजारी, जातिवादियों और अछूतों को भी। उनके कई अनुयायी भी त्यागी बन गए, जिन्होंने सांसारिक सुखों को छोड़ दिया और यह विष्वास किया कि त्याग ही सभी वासनाओं पर विजय प्राप्त करने का रास्ता है।

महावीर ने अपने अनुयायियों को चारविसक आदेषों में संगठित कियारू दो संन्यासियों के लिए और दो सामान्य लोगों के लिए।

- साधु (संन्यासी) और साध्वी (नन) का आदेष।
- श्रावक (गष्हस्थ पुरुश) और श्राविका (गष्हस्थ महिलाएं) का आदेष।

पारंपरिक रूप से, महावीर ने 14,000 संन्यासियों, 36,000 नन, लाखों गष्हस्थ पुरुशों और महिलाओं को अपना अनुयायी बनाया। अब जब उन्होंने चार षतिर्थष स्थापित किए, तो उन्हें 24वें तिर्थंकार के रूप में जाना गया। महावीर को इतना महान विचारक भी माना गया। उन्होंने अपने समय के जीवन के सभी समस्याओं में गहरी रुचि दिखाई। उनके द्वारा दिए गए उत्तर व्यवस्थित और विष्लेशणात्मक थे। उनका आध्यात्मिक सामर्थ्य और नैतिक महानता उनके समकालीनों द्वारा भी पहचानी गई थी। अंततः 72 वर्श की आयु में उन्होंने आत्म–निर्वासित उपवास द्वारा मष्त्यु को प्राप्त किया। इससे उन्हें एक और उपाधि मिली षसिद्धष (वह व्यक्ति जिसने षुद्ध चेतना प्राप्त की)। उनकी मुक्ति की रात को लोग दीपावली के रूप में मनाते हैं।

संप्रदायों का उदय

महावीर के निर्वाण के कुछ षताब्दियों बाद, जैन समुदाय (संघ) और अधिक जटिल हो गया। संघ के एक हिस्से ने तपस्विता को अधिक कठिन और षुद्धतावादी दृश्टिकोण से देखा। जबकि दूसरा हिस्सा उदार था। इन दो समूहों के बीच मुख्य रूप से मोनास्टिक प्रथाओं पर असहमति ने जैन धर्म में विभाजन को जन्म दिया, जो दूसरे षताब्दी ईसा पूर्व के आसपास षुरू हुआ और पहले षताब्दी ईस्वी में दो संप्रदायों के रूप में पूर्ण रूप से विभाजित हुआ। बाद में कई अन्य असहमति के बिंदु (जैसे, महावीर के जीवनकथाओं, पवित्र ग्रंथों की संहिता, महिलाओं की स्थिति आदि) ने इस विभाजन को और बढ़ाया।

इस प्रकार, जैन धर्म की दो षाखाएं उत्पन्न हुईंरू दिगंबर (षाब्दिक रूप से आसमान में वस्त्रहीन) ने यह दावा किया कि

- संन्यासियों को निर्वस्त्र होना चाहिए क्योंकि निर्वस्त्रता पापों की विजय का प्रमाण है।
- तिर्थंकारों को निर्वस्त्र और आभूशण रहित रूप में चित्रित किया जाना चाहिए।
- महावीर ने कभी विवाह नहीं किया।

- केवल पुरुश ही आत्मज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। परिणामस्वरूप, महिलाएं निर्वस्त्र तपस्वी नहीं बन सकतीं और वे मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकतीं।

ष्वेतांबर (षाब्दिक रूप से श्सफेद वस्त्रधारीश्) ने उपर्युक्त सभी दावों का विरोध किया। उन्होंने सरल सफेद वस्त्र पहनने को स्वीकार किया। संभवतः क्षेत्रीय कारकों ने इस विभाजन में योगदान दिया। दिगंबर दक्षिण और मध्य भारत में संस्कृति के मुख्य बल थे और स्थानीय षासकों से राजकीय संरक्षण प्राप्त करते थे। दिगंबरों ने इन क्षेत्रों में स्थानीय भाशाओं के विकास में योगदान दिया। लेकिन ष्वेतांबरों ने उत्तर और पष्चिम भारत में समान भूमिका निभाई।

बाद के विकास

11वीं और 12वीं षताब्दी ईस्वी तक, दिगंबरों को उत्तर की ओर पीछे हटना पड़ा, क्योंकि उन्हें स्थानीय राजाओं से अप्रियता का सामना करना पड़ा, जो स्वयं हिंदू भक्तिवाद आंदोलन के प्रसार के कारण था।

16वीं षताब्दी तक, जैन धर्म ने वर्तमान भौगोलिक स्थिति तक पहुंचने में सफलता प्राप्त की और अब से विभिन्न सुधारात्मक आंदोलनों का समाना हुआ। ष्वेतांबरों में 15वीं षताब्दी के आसपास एक सुधारवादी संप्रदाय ष्स्थाणकवासी संप्रदायष के नाम से उभरा था, जिसने मूर्तिपूजा और मंदिर–पूजा की आलोचना की क्योंकि यह न तो ग्रंथों में उल्लेखित था। इसके विपरीत, लंका साह ने यह बताया कि यह प्रथा कानूनी रूप से अवैध थी। उनके बाद लंका साह संप्रदाय का गठन हुआ।

दिगंबरों में भी 16वीं षताब्दी में दो संप्रदाय उत्पन्न हुएरू विष्वपंथियों ने देवताओं की मूर्तियों को मंदिरों में स्थापित किया, जबकि तेरापंथियों ने इन प्रथाओं को अस्वीकार किया।

वर्तमान स्थिति

जैन धर्म के भीतर कई संप्रदाय उत्पन्न हुए हैं जो छोटे–छोटे अंतर के कारण विभाजित हुए हैं। वे सभी तिर्थंकारों के मुख्य सिद्धांतों पर सहमत होते हैं। आज, जैन धर्म भारत में एक धार्मिक अल्पसंख्यक के रूप में है, जो 3.2 मिलियन की जनसंख्या का हिस्सा है, फिर भी वे अपनी पहचान को बनाए रखने में षक्तिषाली हैं। वे प्राचीन भारतीय धर्म के पुराने अनुयायी हैं जो अभी भी जीवित हैं। वे कृशि से बचते हैं ताकि किसी कीड़े को अनजाने में हानि न हो। वे मुख्य रूप से जौहरी, व्यापारी, ऋणदाता और उद्योगपति बनने की प्राथमिकता रखते हैं। ऐसे में वे आधुनिक राज्यों महाराश्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेष और कर्नाटका में षहरी केंद्रों में रहते हैं। व्यापारियों और उद्योगपतियों के रूप में वे अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हैं। हालांकि जैन धर्म एक संपन्न समुदाय है, वे मानवतावादी कारणों के लिए समर्थन प्रदान करते हैं और दुखों को कम करने के प्रयास में लगे रहते हैं। वे विषेश रूप से पषुओं के लिए समर्पित केंद्रों के संचालन के लिए प्रसिद्ध हैं। उनके प्रमुख सिद्धांत जैसे अहिंसा का महात्मा गांधी की नीति पर बहुत प्रभाव पड़ा, जिन्होंने अपनी स्वतंत्रता संग्रामों में अहिंसक प्रतिरोध का उपयोग किया।

3.3 जैन धर्म के पवित्र ग्रंथ

जैन धर्म के ग्रंथों को दो प्रमुख समूहों में बांटा जा सकता हैः

प्रारंभिक प्राकृत ग्रंथ और बाद के संस्कृत ग्रंथ।

महावीर के उपदेषों को पहले मौखिक रूप से लोगों तक पहुँचाया गया था। उनके षिश्यों, गाणधारों ने इ

न्हें 14 पुरवों (प्रारंभिक ग्रंथों) और फिर 12 अंगों (भागों) के रूप में लिखित रूप में संकलित किया।

3.3 जैन धर्म के पवित्र ग्रंथ

जैन धर्म के ग्रंथों को दो प्रमुख समूहों में बांटना सुविधाजनक हो सकता हैरू (प) प्रारंभिक प्राकृत ग्रंथ और (पप) बाद के संस्कृत ग्रंथ।

महावीर के उपदेष पहले मौखिक रूप से लोगों तक पहुँचाए गए। उनके षिश्य, गाणधारों ने इन्हें पहले 14 पुरवों (पूर्व ग्रंथों) के रूप में और फिर 12 अंगों (भागों) के रूप में लिखित रूप में संकलित किया। इन ग्रंथों को समुदाय के नेताओं द्वारा पहले अनुयायियों के बीच सच्चाई से संरक्षित किया गया। हालांकि, इस कानून के कुछ हिस्सों को लेकर सवाल उठे थे।

इसलिए लगभग 300 ठब्म में पाटलिपुत्र में एक काउंसिल बुलाई गई ताकि क< ानून को फिर से संकलित किया जा सके। वहाँ उन्हें यह पता चला कि 12वां अंग, जिसमें पुरवों का संग्रह था, प्रामाणिक नहीं था। भद्रबाहु जो इस बारे में पूरी जानकारी रखते थे, काउंसिल में उपस्थित नहीं हो पाए क्योंकि उस समय वे नेपाल में 12 वर्शों का तपस्या व्रत ले रहे थे। इसलिए, स्थूलभद्र को वहाँ भेजा गया था ताकि वे अन्य कई भिक्षुओं के साथ जाकर पुरवों को उनसे सीखें। और उनका मिषन सफल भी रहा। हालांकि, स्थूलभद्र के बाद सात पीढ़ियों के दौरान, पुरवों के 10 ग्रंथ पूरी तरह से खो गए।

ष्वेतांबरों का क< ानून

इस संदर्भ में ष्वेतांबरों ने 5वीं षताब्दी ईस्वी में गुजरात के वालभी में एक काउंसिल बुलाकर जो कुछ पवित्र ग्रंथ बच गए थे, उन्हें संपादित और संरक्षित किया। जैन धर्म के पहले हिस्से का संबंध 400 ठब्म से 200 ब्म के बीच है। ये सभी प्राकृत या अर्धमागधी भाशा में हैं। इस ष्वेतांबर क< ानून में 45 पुस्तकें षामिल हैं। इसमें 11 अंग, 12 उपांग (पूरक हिस्से), 10 प्रकिरण (विभिन्न विशयों पर बिखरे हुए टुकड़े), 4 मूल सूत्र, 6 चेदसूत्र (आचार्य का अनुषासन), और 2 सूत्र ज्ञान पर हैं। ये निष्चित रूप से जैन नैतिकता, योग, धर्म, दर्षनषास्त्र और पुरानी कथाओं के स्रोत ग्रंथ हैं।

दिगंबरों का संस्कृत क< ानून

हालांकि ष्वेतांबर क< ानून के धर्मषास्त्रीय सामग्री से दिगंबरों ने विवाद नहीं किया, लेकिन दिगंबरों का मानना था कि ष्वेतांबर क< ानून की भाशा और रूप प्रामाणिक नहीं है। इसके विपरीत, उनके पास दो बहुत पुरानी प्राकृत ग्रंथ थे जो ष्वेतांबर क< ानून के संकलन से पहले के थे। इन दो प्राचीन ग्रंथों के साथ, दिगंबरों ने इनका पूरक के रूप में टिप्पणी और अन्य कार्यों के साथ इसे बढ़ाया और यह दावा किया कि ये जैन धर्म के प्रामाणिक खाते हैं। उन्होंने अपने क< ानून को श्अनुयोगश (व्याख्याएँ) कहा।

यह श्रेणी के ग्रंथ मुख्य रूप से 700 से 900 ईस्वी तक संस्कृत में लिखे गए थे। ये पुराने खोए हुए क< ानून की स्थिति को ले आते हैं। इन्हें चार समूहों में विभाजित किया गया और इन्हें श्चार वेदश कहा गया। (1) पहला वेद इतिहास से संबंधित है। (2) दूसरा वेद ब्रह्मांडविज्ञान से संबंधित है। (3) तीसरा वेद दर्षनषास्त्र से संबंधित है। (4) अंतिम वेद आचार और अनुश्ठानों से संबंधित है।

इस कानून की एक महत्वपूर्ण विषेशता यह है कि इसका अधिकांष हिस्सा गष्हस्थ समुदाय से संबंधित है, और इसमें वह लेखन षामिल हैं जो जैनों को दुनिया के पूर्व इतिहास और मानव संस्थाओं और रोजाना के धार्मिक क्रियाकलापों की उत्पत्ति का दृश्टिकोण देते हैं। यह दिखाता है कि गष्हस्थ जीवन के व्यवस्थितकरण में एक महत्वपूर्ण विकास हुआ था।

3.4 जैन धर्म के मूल विष्वास

जैन धर्म के बुनियादी उपदेषों के बारे में, यह सुविधाजनक होगा कि उन्हें कुछ प्रस्तावों के रूप में प्रस्तुत किया जाए। हम केवल उन बुनियादी उपदेषों की सूची देंगे जो सामान्य रूप से प्रकृत होते हैं। जो कुछ भी मोक्ष और नैतिकता के मार्ग से संबंधित है, उसे निम्नलिखित खंडों में विस्तार से इमींदकमसज किया जाएगा।

सभी ग्रंथों का एकत्व

जैन परंपरा का पारंपरिक दृश्टिकोण यह है कि तिर्थंकारों के समय से पवित्र ग्रंथों को एक–दूसरे से मेल खाना चाहिए। केवल नामों में भिन्नता होनी चाहिए। जैसे कि पहले तिर्थंकारों के उपदेषों की तरह, महावीर के उपदेष भी जैन ग्रंथों में दर्ज किए गए हैं। हालांकि विभिन्न क< ानूनों का उदय हुआ है, फिर भी महावीर के बारे में बुनियादी विष्वासों पर सवाल नहीं उठाए गए हैं।

ईष्वर में विष्वास का अभाव

जैन धर्म एक नास्तिक धर्म है। यह एक सष्श्टिकर्ता ईष्वर में विष्वास नहीं करता। इसके अनुसार, ब्रह्मांड का वास्तविकता छह पदार्थों से समझाया जा सकता हैरू जीव (चेतना), पदार्थ, स्थान, गति–आकाष, विश्राम आकाष, और समय। ये सभी षाष्वत हैं, जिनका समय के संदर्भ में न कोई आरंभ है, न कोई अंत। इसके अनुसार, ब्रह्मांड को सष्श्टि या उसके

मामलों को प्रबंधित करने के लिए किसी भगवान की आवष्यकता नहीं है। ब्रह्मांड अपने स्वभाव और अपने ब्रह्मांडीय नियमों द्वारा चलता है।

कर्म में विष्वास

जैन धर्म का केंद्रीय विष्वास पुनर्जन्म और कर्म (पुण्य और पाप) में है। आत्मा कर्मों के कणों से प्रदूशित होती है, जो एक व्यक्ति के कर्मों द्वारा उत्पन्न होते हैं और आत्मा से जुड़ जाते हैं, जिससे आत्मा कई जन्मों के माध्यम से भौतिक षरीरों में बंध जाती है। कर्मों की आठ श्रेणियाँ हैं। पहले चार कर्मों को घाती कर्म कहा जाता है क्योंकि ये आत्मा के स्वाभाविक गुणों को अस्पश्ट करते हैं। अंतिम चार कर्मों को अगाती कर्म कहा जाता है क्योंकि वे आत्मा के षरीर से संबंधित होते हैं। यदि कोई सभी आठ कर्मों को नश्ट करने में सफल हो जाता है, और जब कर्मकणों को आत्मा से हटा दिया जाता है, तो वह बंधन से मुक्ति प्राप्त करता है। एक बार उसे प्रबुद्धता प्राप्त हो जाती है, तो आत्मा पुनर्जन्म का सामना नहीं करती।

जैन देवता

आध्यात्मिक प्रगति के मार्ग में, यदि कोई सभी आठ कर्मों को नश्ट करता है, तो वह पूरी तरह से मुक्त हो जाता है, कोई षरीर नहीं होता, कोई जन्म और मृत्यु का चक्र नहीं होता, न ही सुख और दुख, या आनंद और दुःख की अनुभूति होती है। वह ऐसी मुक्ति प्राप्त करता है कि वह एक षुद्ध आत्मा बन जाता है, अब, उसके पास सर्वज्ञता, सर्वषक्तिमत्ता, पूर्ण दृश्टि, एक षाष्वत आनंदमयी स्थिति होती है। वह अब सिद्ध है, लोकाकाष के षीर्श पर स्थित है जिसे मोक्ष कहते हैं। सभी सिद्धों के पास एक ही गुण की आत्मा होती है, और उनके गुण समान होते हैं। हालांकि, वे फिर भी अपनी विषिश्ट पहचान बनाए रखते हैं।

लेकिन, यदि किसी ने केवल चार ष्घातीष कर्मों को नश्ट किया है, तो उसने अपनी आत्मा के मूल गुणों को पुनः प्राप्त कर लिया है जैसे सर्वज्ञता, सर्वषक्तिमत्ता, दृश्टि, षक्ति और आनंद। लेकिन वह अभी भी एक मानव है। वह धर्म का प्रचार करता है और अपनी पूरी जीवन के लिए आनंदमयी स्थिति में रहता है। वह जिणा (वह जिसने अपनी आंतरिक षत्रुओं (क्रोध, लालच, काम, घृणा, अहंकार) को जीत लिया है) कहलाता है। निरग्रंथ (जो सभी।जजंबीउमदजे से मुक्त हो गया है)। इसलिए, उसे अरिहंत कहा जाता है, उसने केवल–ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

अब, दो प्रकार के अरिहंत होते हैंरू यदि एक अरिहंत ने संन्यासियों और ननों का आदेष स्थापित किया है, तो उसे तिर्थंकार कहा जाता है। यदि कोई अरिहंत धार्मिक आदेष स्थापित नहीं करता, तो वह बस एक केवली रहता है। लेकिन वह केवल–ज्ञान प्राप्त करने के बाद अपनी पूरी जीवन के लिए पूर्ण, आनंदमयी स्थिति में रहता है। अब, सभी अरिहंत (तिर्थंकार और सामान्य केवली) और सिद्धों को जैन धर्म के देवता माना जाता है।

जैन प्रार्थना

जैन देवताओं, तिर्थंकारों या संन्यासियों और ननों से कोई भी भौतिक लाभ या कृपा नहीं मांगते। वे किसी विषेश तिर्थंकार या संन्यासी से नाम से प्रार्थना नहीं करते। उन्हें प्रणाम

करके, जैन लोग पांच करुणामय से प्रेरणा प्राप्त करते हैं जो सत्य सुख और जीवन के दुःख से पूर्ण स्वतंत्रता के सही मार्ग के लिए मार्गदर्षन देते हैं। इसलिए नवकार मंत्र (नमस्कार मंत्र) एक सार्वभौमिक प्रार्थना है जिसे जैनों को हर दिन कहना चाहिए, सिर झुका कर, और जब वे अच्छे कार्य और घटनाएं षुरू करते हैंरू

- नमो अरिहंतान – मैं अरिहंतों को प्रणाम करता हूँ, जो षाष्वत आध्यात्मिक विजेता हैं।
- नमो सिद्धान – मैं सिद्धों को प्रणाम करता हूँ, जो मुक्त आत्माएं हैं।
- नमो आयरियाणं – मैं आचार्यों को प्रणाम करता हूँ, जो जैन आदेष के नेता हैं।
- नमो उवज्जायाण – मैं उपाध्यायों को प्रणाम करता हूँ, जो ज्ञानी आचार्य हैं।
- नमो लोए सव्व साहुणं – मैं दुनिया भर के सभी संतों और साधुओं को प्रणाम करता हूँ।
- एशो पंच नमुकारो – ये पांच प्रणाम,
- सव्व पवपणासनो – सभी पापों का नाष करते हैं।
- मंगलंच सव्वेसिन – सभी षुभ कार्यों में,
- पद्मं हवई मंगलम – यह सर्वोत्तम है।

अनेकान्तवाद का अद्वितीय सिद्धांत

यह कहता है कि वास्तविकता को कई (अनेक) दृश्टिकोणों (अंत) से देखा जा सकता है। कम से कम सात दृश्टिकोणों (सप्तभंगी) का उपयोग किया जा सकता है किसी चीज को समझाने के लिए। और सभी दृश्टिकोण समान रूप से सत्य हो सकते हैं। यह जीवन के प्रति वास्तव में एक सार्वभौमिक दृश्टिकोण है। यह वास्तव में बौद्धिक अहिंसा है, जो अन्य दृश्टिकोणों का सम्मान करती है। यह विभिन्न विचारधाराओं के बीच विरोधी दृश्टिकोणों के प्रति सहिश्णुता को बढ़ावा देता है। यह हमारे जैसे बहु–धार्मिक समाज के लिए विषेश रूप से प्रासंगिक है।

3.5 जैन धर्म का मानव कर्तव्य का विचार

एक धार्मिक सुधारक के रूप में महावीर ने वेदों और ब्राह्मणों की आलोचना की। उन्होंने पुजारी वर्ग और उनके बलि अनुश्ठानों की कोई प्रासंगिकता नहीं देखी। जैन धर्म इस बात में अद्वितीय है कि यह मानव मस्तिश्क से भगवान को सषश्टिकर्ता, रक्षक और संहारक के रूप में मान्यता को समाप्त करता है, और इस प्रकार देवताओं और देवियों की पूजा को मोक्ष प्राप्ति का एक साधन मानने से इनकार करता है।

जो उन्होंने नकारा, उसके विकल्प के रूप में महावीर ने धर्म को सरल और स्वाभाविक बनाया, जो जटिल अनुश्ठानिक प्रक्रियाओं से मुक्त था। उन्होंने आत्मा की आंतरिक सुंदरता

और सामंजस्य की ओर जन सामान्य के प्रवषत्ति को बढ़ावा दिया। उन्होंने आत्मा के षुद्ध रूप की विषेशताएँ स्पश्ट कीं। महावीर ने कहारू "एक जीवित षरीर केवल अंगों और मांस का एक संगठित रूप नहीं है, बल्कि यह आत्मा का निवास स्थान है, जिसमें संभावित रूप से पूर्ण दृश्टि (अनंत–दर्षन), पूर्ण ज्ञान (अनंत–ज्ञान), पूर्ण षक्ति (अनंत–विर्य), और पूर्ण सुख (अनंत–सुख) हैं।"

इसके विपरीत, उन्होंने अनुभवजन्य आत्मा की दयनीय स्थितियों का गहरा विष्लेशण किया। इस प्रकार उन्होंने आत्मा को षुद्ध करने और जन्म, जीवन, पीड़ा, दुख और मृत्यु के चक्र से पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए वासनाओं और षारीरिक इंद्रियों से लड़ने की आवष्यकता को स्थापित किया, जो जैन धर्म का उद्देष्य है, जिसे ष्केवला–ज्ञानष कहा जाता है। मानवता की श्रेश्ठता और पूर्ण षक्ति, ज्ञान और सुख प्राप्त करने की संभावना यही जैन धर्म का मानव कर्तव्य का सार है।

आत्म–प्रकाषन की प्रक्रिया में पहला कदम है अंधविष्वासी विष्वासों को त्यागना और जीवन में एक तर्कसंगत दृश्टिकोण अपनाना। जैन धर्म एक स्पश्ट रूप से व्यावहारिक नैतिक अनुषासन, उच्चतम सत्य पर ध्यान और इनके प्रकाष में जीवन की पुनर्निर्माण की प्रक्रिया निर्धारित करता है ताकि अंतिम वास्तविकता या सत्य को प्राप्त किया जा सके।

जैन मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग का पूरा विवरण तीन षब्दों में संक्षेपित किया जा सकता है, जिन्हें जैन साहित्य में श्रत्नत्रयश (तीन रत्न) कहा जाता हैरू

1. सत्य दृश्टि (सम्यक दर्षन)रू ब्रह्मांड के प्रत्येक पदार्थ, अपने स्वयं के आत्मा, धार्मिक लक्ष्य और मार्ग के सत्य स्वभाव का ज्ञान। व्यावहारिक दृश्टिकोण से, इसका अर्थ है तिर्थंकारों के उपदेषों और उनके ग्रंथों (अगमों) पर पूर्ण विष्वास रखना।

2. सत्य ज्ञान (सम्यक ज्ञान)रू छह सार्वभौमिक पदार्थों और नौ तत्त्वों के साथ, अनेकोंतवाद (अपरमाणवाद) के दो विषिश्ट सिद्धांतों को स्वीकारने की आवष्यकता होती है। स्यात्वाद ज्ञान की सीमाओं को स्पश्ट करता है और किसी भी प्रकार के दावे से बचने की आवष्यकता को दर्षाता है।

3. सही आचार (सम्यक आचरण)रू उचित क्रिया और उचित आचरण के द्वारा आत्म–संलग्नता (राग) और घष्णा (द्वेश) से मुक्त होने का उद्देष्य और पूर्ण समता की स्थिति प्राप्त करना। व्यावहारिक दृश्टिकोण से, किसी को नैतिक कोड, नियम और अनुषासन का पालन करना आवष्यक है।

ये तीन रत्न यदि एक साथ अभ्यास किए जाते हैं तो यह मोक्ष की प्राप्ति सुनिष्चित करते हैं। लेकिन यदि इनमें से प्रत्येक का अभ्यास अन्य दो से अलग किया जाए, तो इससे संघर्श या तनाव हो सकता है। व्यक्तिगत रूप से, ये अपूर्ण और अपर्याप्त होते हैं क्योंकि ये एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। सही विष्वास और सही ज्ञान के बिना सही आचरण संभव नहीं हैय और सही आचरण के लिए कर्तव्यों का पालन सही दर्षन और ज्ञान को बनाए रखता

है। कर्तव्यों को उनके स्वभाव और उन्हें पूरा करने के दृढ़ संकल्प के साथ लिया जाना चाहिए।

3.6 जैन नैतिकता

जैन धर्म में एक कड़ा ष्आचार संहिताष निर्धारित किया गया है, जिसका उद्देष्य नैतिकता नहीं, बल्कि मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। वास्तव में, जैन धर्म धर्म को केवल नैतिक अभ्यास का विज्ञान मानता है। यह मानव षरीर को एक रथ के रूप में मानता है, जिस पर आत्मा मोक्ष की ओर जाती है। वर्तमान जीवन का आचरण इस उद्देष्य को प्राप्त करने के लिए होना चाहिए, ताकि जन्म और मृत्यु के चक्र से पूरी तरह मुक्त हुआ जा सके। प्रत्येक आत्मा अपनी आंतरिक षुद्धता और परिपूर्णता को महसूस करके देवत्व प्राप्त कर सकती है, अर्थात् सर्वोच्च आध्यात्मिक व्यक्तित्व।

जैन धर्म के मोक्ष के मार्ग का समग्र रूप रत्नत्रय (तीन रत्न) है, जैसा कि आप पिछले खंड में देख चुके हैंरू सही ज्ञान, सही दर्षन और सही आचरण। अब, अंतिम रत्न के प्रकाष में पांच महान व्रत (महापंचव्रत) होते हैं। यहां संस्कृत षब्द ष्व्रतष ष्व्रीष से लिया गया है, जिसका अर्थ है "चयन करना"। तकनीकी रूप से इसका अर्थ है (1) सही आचार्य का चयन करना, (2) यह निर्णय लेना कि कौन सा मार्ग सबसे उचित है, और (3) उस मार्ग पर चलने का दृढ़ संकल्प। ये व्रत निम्नलिखित हैंरू

- अहिंसा (ीपउें)रू किसी भी जीवन रूप को हानि न पहुंचाना।
- सत्य ैंजल)रू केवल हानिरहित सत्य बोलना।
- अस्तेय (ेजमल)रू वह चीज न लेना जो उचित तरीके से न दी गई हो।
- ब्रह्मचर्य (ठतीउंबींतल)रू संवेदी आनंद में संलिप्त न होना।
- अपरिग्रह (।चंतपहतीं)रू लोगों, स्थानों और भौतिक वस्तुओं से पूरी तरह से वियोग।

अहिंसा

अहिंसा सभी जीवों के प्रति प्रेम और करुणा पर आधारित है। जैन धर्म में अहिंसा कोई नकारात्मक गुण नहीं है। यह सार्वभौमिक प्रेम और करुणा की सकारात्मक गुणवत्ता पर आधारित है। जैन धर्म के अनुसार, सभी जीव, उनके आकार, रूप, या आध्यात्मिक विकास के बावजूद समान हैं। कोई भी जीव अन्य जीव को हानि, चोट, या मारने का अधिकार नहीं रखता, जिसमें जानवर, कीड़े और पौधे षामिल हैं। प्रत्येक जीव को अस्तित्व का अधिकार है और यह आवष्यक है कि हर जीव के साथ पूर्ण सामंजस्य और षांति में जिया जाए।

सत्य

क्रोध, लालच, भय, मजाक आदि झूठ के जन्मस्थान होते हैं। सत्य बोलने के लिए नैतिक साहस की आवष्यकता होती है। केवल वे लोग जो लालच, भय, क्रोध, ईर्श्या, अहंकार,

हल्केपन आदि पर काबू पा चुके हैं, ही सत्य बोल सकते हैं। जैन धर्म का कहना है कि किसी को केवल झूठ से बचना नहीं चाहिए, बल्कि हमेषा ऐसा सत्य बोलना चाहिए जो षुद्ध और सुखकारी हो। यदि सत्य बोलने से किसी को दुख, चोट, क्रोध या किसी जीव की मृत्यु होती है, तो एक को चुप रहना चाहिए।

अस्तेय

चोरी में किसी अन्य की संपत्ति बिना अनुमति के लेना या अन्यायपूर्ण या अनैतिक तरीकों से लेना षामिल है। इसके अलावा, किसी को अपनी चीज के अलावा कुछ भी नहीं लेना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि किसी बेकार चीज को भी बिना स्वीकृति के लिया जाए। इस व्रत का पालन बहुत सख्ती से करना चाहिए, और किसी भी बेकार चीज को छूने से भी बचना चाहिए जो आपकी नहीं है।

ब्रह्मचर्य षुद्धता

संवेदी आनंद से पूरी तरह से बचने को ब्रह्मचर्य कहते हैं। संवेदी आनंद एक ऐसी आकर्शक षक्ति है जो सभी गुणों और तर्क को नश्ट कर देती है। संवेदी भोग पर नियंत्रण रखने का यह व्रत बहुत कठिन है। कोई षारीरिक भोग से बच सकता है, लेकिन यदि वह फिर भी संवेदी आनंद के विचारों में फंसा रहता है, तो यह जैन धर्म में निशिद्ध है।

अपरिग्रह संलग्नता से मुक्ति

जैन धर्म का मानना है कि जितनी अधिक सांसारिक संपत्ति किसी व्यक्ति के पास होती है, उतना ही अधिक वह उसे प्राप्त करने के लिए पाप करता है, और अंततः लंबे समय में वह अधिक असंतुश्ट हो सकता है। सांसारिक संपत्ति संलग्नताएँ पैदा करती है जो लगातार लालच, ईर्श्या, स्वार्थ, अहंकार, घष्णा, हिंसा आदि को जन्म देती हैं। महावीर ने कहा कि इच्छाएँ और इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं, और केवल आकाष ही उनकी सीमा होती है। सांसारिक वस्तुओं से संलग्नता जन्म और मष्त्यु के चक्र में बंधन का कारण बनती है। इसलिए, जो लोग आध्यात्मिक मुक्ति की इच्छा रखते हैं, उन्हें सभी संलग्नताओं से छुटकारा पाना चाहिए, जो सभी पांच इंद्रियों के सुखदायक वस्त्रों से संबंधित हैं।

सम्मेदषिखर, गिरनार, पावापुरी और दिलवाड़ा जैन धर्म के चार प्रमुख तीर्थ स्थल हैं, जो अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन स्थानों के बारे में विस्तष्त जानकारी निम्नलिखित है

1. सम्मेदषिखर

सम्मेदषिखर, जिसे समेतषिखर भी कहा जाता है, झारखंड राज्य के गिरिडीह जिले में स्थित एक प्रमुख जैन तीर्थ स्थल है। यह पर्वत श्रष्खला पारसनाथ पहाड़ी के नाम से भी जानी जाती है, जो राज्य की सबसे ऊँची चोटी है, जिसकी ऊँचाई 1,370 मीटर (4,480 फीट) है। सम्मेदषिखर को जैन धर्म में अत्यंत पवित्र स्थान माना जाता है, क्योंकि यहाँ 24 में से 20

तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया था। इनमें भगवान पार्ष्वनाथ और महावीर स्वामी षामिल हैं ॅपापचमकपं

इतिहास

सम्मेदषिखर का ऐतिहासिक संदर्भ जैन धर्म के प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। जैन परंपरा के अनुसार, यहाँ भगवान पार्ष्वनाथ ने 772 ईसा पूर्व में मोक्ष प्राप्त किया था। मुगल सम्राट अकबर ने 1583 में एक फरमान जारी किया था, जिसमें षिखरजी पहाड़ी के प्रबंधन का अधिकार जैन समुदाय को सौंपा गया था, ताकि यहाँ जानवरों की हत्या को रोका जा सके। ळवसकमद ज्तपंदहसम ज्वनत

पर्यटन महत्व

सम्मेदषिखर तीर्थयात्रियों के लिए एक प्रमुख आकर्शण है। यहाँ पहुँचने के लिए गिरिडीह से टैक्सी या बस सेवा उपलब्ध है। पर्वतारोहण के षौकिनों के लिए षिखरजी की चढ़ाई एक रोमांचक अनुभव प्रदान करती है। यहाँ स्थित मंदिरों की वास्तुकला और षांत वातावरण पर्यटकों को आकर्शित करते हैं।

2. गिरनार

गुजरात के जूनागढ़ षहर में स्थित गिरनार पर्वत जैन धर्म का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यह पर्वत श्रृंखला 1,100 मीटर (3,609 फीट) ऊँची है और यहाँ कई प्राचीन जैन मंदिर स्थित हैं। गिरनार पर्वत को जैन परंपरा में विषेश स्थान प्राप्त है, क्योंकि यहाँ भगवान नेमिनाथ, जो कि 22वें तीर्थंकर हैं, ने मोक्ष प्राप्त किया था।

इतिहास

गिरनार का ऐतिहासिक महत्व प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित है। स्कंद पुराण में इसे एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में वर्णित किया गया है। यहाँ के मंदिरों का निर्माण विभिन्न कालों में हुआ था, जो जैन धर्म के समष्द्ध इतिहास को दर्षाते हैं।

पर्यटन महत्व

गिरनार पर्वत पर चढ़ाई एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, जिसमें लगभग 10,000 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। यह चढ़ाई तीर्थयात्रियों और साहसिक पर्यटकों के लिए आकर्शण का केंद्र है। पर्वत की चोटी से जूनागढ़ और उसके आसपास के क्षेत्रों का सुंदर दृष्य दिखाई देता है। यहाँ स्थित मंदिर उनकी वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं।

3. पावापुरी

बिहार के नवादा जिले में स्थित पावापुरी जैन धर्म का एक प्रमुख तीर्थ स्थल है। यहाँ भगवान महावीर स्वामी ने 527 ईसा पूर्व में निर्वाण प्राप्त किया था। पावापुरी में स्थित जलमंदिर विषेश

आकर्शण का केंद्र है, जो एक तालाब के बीच में बना हुआ है और भगवान महावीर की मूर्ति यहाँ स्थापित है।

इतिहास

पावापुरी का ऐतिहासिक उल्लेख जैन ग्रंथों में मिलता है। यहाँ भगवान महावीर ने अपने अंतिम समय में उपदेष दिए थे। पावापुरी में भगवान महावीर के निर्वाण स्थल पर जलमंदिर का निर्माण किया गया है, जो श्रद्धालुओं के लिए महत्वपूर्ण स्थान है।

पर्यटन महत्व

पावापुरी षांत वातावरण और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु जलमंदिर में भगवान महावीर की पूजा अर्चना करते हैं। पावापुरी राजगीर और नालंदा जैसे प्रमुख पर्यटन स्थलों के निकट स्थित है, जिससे पर्यटकों के लिए यात्रा करना सुविधाजनक होता है।

4. दिलवाड़ा

राजस्थान के सिरोही जिले में माउंट आबू के निकट स्थित दिलवाड़ा जैन मंदिर अपनी वास्तुकला के लिए विष्व प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों का निर्माण 11वीं से 13वीं षताब्दी के बीच हुआ था। दिलवाड़ा मंदिरों में संगमरमर से बनी जटिल नक्काषी और मूर्तिकला विषेश आकर्शण का केंद्र हैं।

इतिहास

दिलवाड़ा मंदिरों का निर्माण विभिन्न समयों में हुआ था। विमल वासाही मंदिर का निर्माण 1031 ईस्वी में हुआ था, जबकि लूणा वासाही मंदिर का निर्माण 1230 ईस्वी में हुआ था। इन मंदिरों का निर्माण जैन धर्म के समष्द्ध इतिहास और कला को प्रदर्षित करता है।

पर्यटन महत्व

दिलवाड़ा मंदिर माउंट आबू में स्थित होने के कारण यहाँ पहुँचने के लिए सड़क मार्ग से यात्रा की जा सकती है। मंदिरों की वास्तुकला, मूर्तिकला और षांत वातावरण पर्यटकों को आकर्शित करते हैं। यह स्थान जैन धर्म के कला प्रेमियों और इतिहास उत्सुकों के लिए विषेश महत्व रखता है।

Sikhism

सिख धर्म भारतीय उपमहाद्वीप में उत्पन्न होने वाला एक नया धर्म है, लेकिन इसका प्रभाव भारतीय समाज और विष्वास प्रणाली पर गहरा पड़ा है। यह धर्म हिंदू वैश्णव भक्ति परंपरा और इस्लामी सूफी रहस्यवाद से प्रभावित है। इस अध्याय में सिख धर्म के इतिहास, गुरु नानक की भूमिका, गुरु परंपरा, सिख ग्रंथ, गुरुद्वारा की अवधारणा, खालसा आंदोलन, अनुश्ठान और त्योहार, नैतिक षिक्षाएँ और सिख धर्म के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा की गई

है, ताकि विद्यार्थी अन्य धार्मिक परंपराओं को समझे और उन्हें खुले मन और सम्मान के साथ स्वीकार सके।

सिख धर्म की स्थापना गुरु नानक (1469–1539) ने 15वीं षताबदी में पंजाब में की थी। श्सिखश षब्द का अर्थ षिश्य है और यह संस्कृत षब्द षिश्य से आया है। सिख धर्म ने इस्लाम और हिंदू धर्म के विचारों को अपने में समाहित किया है, और यह धर्म अन्य धर्मों और संस्कृतियों के प्रति उदार दृश्टिकोण रखता है।

गुरु नानक का जन्म एक हिंदू परिवार में हुआ था, लेकिन उन्होंने अपने जीवन में जातिवाद और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ संघर्श किया। वे न केवल हिंदू और मुसलमानों के बीच एकता की बात करते थे, बल्कि उन्होंने धर्म के बंधनों को पार करने की आवष्यकता को महसूस किया। उनका कहना था कि श्न कोई हिंदू है, न कोई मुसलमान है।श

गुरु नानक के बाद उनकी गुरु परंपरा का विस्तार हुआ और गुरु अंगद से लेकर गुरु गोबिंद सिंह तक, प्रत्येक गुरु ने सिख समुदाय को एकजुट करने, सामाजिक सुधार लाने और सिख धर्म के सिद्धांतों को मजबूती से स्थापित करने का कार्य किया। गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की, जिससे एक सषक्त और समान समाज की परिकल्पना की गई।

सिख धर्म के ग्रंथ आदि ग्रंथ (अब गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में जाना जाता है) में गुरु नानक और अन्य गुरुओं के ीलउदे और भक्ति गीत षामिल हैं। यह ग्रंथ धर्म का मूल ग्रंथ है और सिखों के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

गुरुद्वारा, जिसका अर्थ श्गुरु का द्वारश है, सिख धर्म का पूजा स्थल है। सबसे प्रसिद्ध गुरुद्वारा श्हरमंदिर साहिबश (स्वर्ण मंदिर) है, जो अमृतसर में स्थित है और यह सिखों के लिए एक पवित्र स्थल है। खालसा पंथ के सदस्य पांच क श्कश (केष, कड़ा, कच्छा, कंघा, और कृपाण) का पालन करते हैं।

सिख धर्म के सिद्धांत और षिक्षाएँ कार्य, पूजा और दान पर आधारित हैं। गुरु नानक ने सत्य, दया और सेवा का महत्व बताया और जातिवाद और महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई। सिख धर्म ने सामाजिक समानता और बुराइयों से मुक्ति की दिषा में कई सुधार किए हैं।

यह अध्याय सिख धर्म के सिद्धांतों और इतिहास को समझने के लिए एक व्यापक दृश्टिकोण प्रदान करता है, जो आज भी सिख समाज के जीवन में प्रासंगिक हैं।

पटना सिख धर्म का एक ऐतिहासिक और धार्मिक पर्यटन स्थल

पटना, बिहार राज्य की राजधानी, भारत के सबसे प्राचीन और ऐतिहासिक षहरों में से एक है। यह षहर न केवल भारतीय इतिहास और संस्कृति का प्रमुख केंद्र है, बल्कि सिख धर्म के लिए भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल है। पटना में सिख धर्म के कई महत्वपूर्ण स्थान हैं, जो इसके धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास को उजागर करते हैं। यहाँ सिख धर्म के

अनुयायी न केवल अपने धार्मिक कर्तव्यों को निभाते हैं, बल्कि पटना का दौरा करते हुए इसके इतिहास, संस्कृति और सिख धर्म के महत्व को समझते हैं।

इस लेख में हम पटना के सिख धर्म से जुड़े प्रमुख स्थल, उनके ऐतिहासिक महत्व, धार्मिक परंपराओं और यहाँ आने वाले पर्यटकों के अनुभवों पर चर्चा करेंगे।

पटना का ऐतिहासिक संदर्भ

पटना का इतिहास बहुत पुराना है और यह षहर प्राचीन मगध साम्राज्य के तहत एक महत्वपूर्ण व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है। महाभारत, रामायण और बौद्ध धर्म के साथ जुड़ी घटनाओं के कारण यह षहर धार्मिक दृश्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। लेकिन सिख धर्म के संदर्भ में पटना का विषेश महत्व है, क्योंकि यह षहर गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म स्थान है। गुरु गोविंद सिंह जी सिखों के दसवें गुरु थे, जिन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की और सिख धर्म को एक नई दिषा दी।

गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म और पटना का महत्व

गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म 22 दिसंबर 1666 को पटना साहिब में हुआ था, जो उस समय पटना नगर का एक हिस्सा था। उनका जन्म ऐसे समय हुआ था जब भारत में मुगलों का षासन था, और सिख समुदाय को लगातार धार्मिक अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा था। गुरु गोविंद सिंह जी का जीवन और उनके उपदेष आज भी सिख धर्म के अनुयायियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। पटना में गुरु गोविंद सिंह जी के जन्म स्थल पर स्थित गुरुद्वारा पटना साहिब को उनके योगदान और बलिदान की याद में बनाया गया है। यह गुरुद्वारा आज सिखों का एक प्रमुख तीर्थ स्थल बन चुका है और यहाँ हर साल लाखों श्रद्धालु आते हैं।

पटना साहिब गुरुद्वारा

पटना साहिब गुरुद्वारा, जो गुरु गोविंद सिंह जी के जन्म स्थल पर स्थित है, सिख धर्म के सबसे पवित्र और ऐतिहासिक स्थलों में से एक है। यह गुरुद्वारा पटना षहर के उत्तर–पष्चिमी भाग में स्थित है और इसका ऐतिहासिक महत्व अत्यधिक है। इस गुरुद्वारे को विषेश रूप से गुरु गोविंद सिंह जी की षहीदी, उनके जीवन, और उनके द्वारा सिखों के लिए किए गए योगदानों के कारण माना जाता है।

गुरुद्वारा पटना साहिब का निर्माण 1950 में किया गया था और इसे भारतीय और मुगल वास्तुकला का मिश्रण माना जाता है। इसका मुख्य भवन सफेद संगमरमर से बना हुआ है, और इसमें पवित्र गुरु ग्रंथ साहिब स्थापित है। गुरुद्वारे के भीतर बहुत ही सुंदर नक्काषी और दीवारों पर धार्मिक चित्रकला देखने को मिलती है। यहाँ पर हर साल गुरु गोविंद सिंह जी के जन्मोत्सव और अन्य धार्मिक आयोजनों का आयोजन धूमधाम से किया जाता है।

गुरुद्वारे के आसपास का क्षेत्र बहुत ही षांत और धार्मिक वातावरण से भरा हुआ है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु न केवल पूजा करते हैं, बल्कि इस पवित्र स्थान पर अपने दुखों और

परेषानियों से मुक्ति पाने के लिए अरदास भी करते हैं। पटना साहिब गुरुद्वारा में स्थित ष्लंगरष (सामूहिक रसोई) में श्रद्धालु बिना किसी भेदभाव के एक साथ भोजन करते हैं, जो सिख धर्म की समानता और भाईचारे की भावना का प्रतीक है।

गुरुद्वारा गुरुनानक जी

पटना साहिब के पास स्थित गुरुद्वारा गुरुनानक जी भी सिखों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है। इस गुरुद्वारे में गुरु नानक देव जी के योगदान को सम्मानित किया गया है। यहाँ पर गुरु नानक के जीवन और उपदेषों से जुड़ी घटनाओं की नक्काषी की गई है, जो सिख ध र्म के इतिहास को दर्षाती हैं।

गुरुद्वारा गुरुनानक जी में प्रतिदिन कीर्तन और अर्चना होती है, और यह स्थान स्थानीय लोगों के लिए एक महान श्रद्धा स्थल बन चुका है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु गुरु नानक देव जी के उपदेषों पर अमल करने और अपने जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

गुरुद्वारा हरमंदिर जी

पटना में स्थित गुरुद्वारा हरमंदिर जी सिख धर्म का एक और ऐतिहासिक स्थल है। यह गुरुद्वारा सिखों के धार्मिक जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है और सिख धर्म के सिद्धांतों को जीवित रखता है। यहाँ सिखों के धार्मिक आयोजन, कीर्तन, पाठ, और अन्य धार्मिक कार्य होते हैं, जो श्रद्धालुओं को एक गहरी आध्यात्मिक समझ प्रदान करते हैं।

पटना में सिख धर्म के अन्य प्रमुख स्थल

1. गुरुद्वारा महात्मा गांधी मार्ग

यह गुरुद्वारा पटना के महात्मा गांधी मार्ग पर स्थित है और यहाँ गुरु नानक देव जी के उपदेषों का पालन किया जाता है। यहाँ की धार्मिक गतिविधियाँ सिख धर्म के अनुयायियों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

2. गुरुद्वारा कच्ची घाटी

यह गुरुद्वारा पटना षहर के बाहरी इलाके में स्थित है और इसका महत्व इसलिए है क्योंकि यह गुरु गोविंद सिंह जी से जुड़ा हुआ है। यहाँ आने वाले श्रद्धालु गुरु गोविंद सिंह जी की याद में पूजा करते हैं और उनके द्वारा सिखों को दिए गए उपदेषों का पालन करते हैं।

3. गुरुद्वारा सुखसागर

यह गुरुद्वारा पटना षहर के प्रमुख इलाकों में से एक में स्थित है और यहाँ सिख धर्म के सिद्धांतों को फैलाने के लिए कई आयोजन होते हैं। यह गुरुद्वारा धार्मिक और सांस्कृतिक दृश्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

पटना में सिख धर्म का सांस्कृतिक प्रभाव

पटना न केवल सिख धर्म का धार्मिक केंद्र है, बल्कि यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर भी अत्यधिक समृद्ध है। यहाँ के गुरुद्वारे, धार्मिक स्थल और स्थानीय लोग सिख धर्म की गहरी समझ और अनुभव को साझा करते हैं। पटना में आयोजित होने वाले सिख धर्म से जुड़े धार्मिक और सांस्कृतिक समारोह, जैसे कि गुरु गोविंद सिंह जी के जन्मोत्सव, बैसाखी और दीवाली, इस षहर के सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

पटना का पर्यटन महत्व

1. धार्मिक पर्यटन

पटना में स्थित गुरुद्वारे और धार्मिक स्थल सिख धर्म के अनुयायियों के लिए एक तीर्थ स्थल के रूप में काम करते हैं। यहाँ आने वाले श्रद्धालु गुरु ग्रंथ साहिब के उपदेषों का पालन करते हैं और अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

2. सांस्कृतिक पर्यटन

पटना का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व पर्यटकों को आकर्शित करता है। यहाँ के गुरुद्वारों, मंदिरों और अन्य धार्मिक स्थलों पर जाकर पर्यटक सिख धर्म की जड़ों और इसके सिद्धांतों को जान सकते हैं।

3. धार्मिक त्योहार

पटना में सिख धर्म से जुड़े कई प्रमुख त्योहार मनाए जाते हैं, जिनमें गुरु गोविंद सिंह जी का जन्मोत्सव, बैसाखी, और गुरु नानक जयंती प्रमुख हैं। इन त्योहारों के दौरान पटना में धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन होते हैं, जो पर्यटकों के लिए एक अद्भुत अनुभव होते हैं।

निश्कर्श

पटना एक ऐतिहासिक और धार्मिक षहर है, जो सिख धर्म के अनुयायियों के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में जाना जाता है। यहाँ के गुरुद्वारे, धार्मिक स्थल और सांस्कृतिक आयोजन सिख धर्म के सिद्धांतों को जीवित रखते हैं और श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक उन्नति की ओर प्रेरित करते हैं। पटना न केवल सिख धर्म के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है, बल्कि यह भारतीय इतिहास, संस्कृति और धर्म का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है।

Unit– 5

सिख धर्म

सिख धर्म (खालसा या सिखमतय पंजाबीः) 15वीं सदी में जिसकी षुरुआत गुरु नानक देव जी ने की थी। सिखों के धार्मिक ग्रन्थ श्री आदि ग्रंथ साहिब या गुरु ग्रन्थ साहिब तथा दसम ग्रन्थ हैं। सिख धर्म में इनके धार्मिक स्थल को गुरुद्वारा कहते हैं। आमतौर पर सिखों के दस सतगुरु माने जाते हैं, लेकिन सिखों के धार्मिक ग्रंथ में छः गुरुओं सहित तीस भगतों की बानी है, जिन की सामान षिक्षाओं को सिख मार्ग पर चलने के लिए महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

1469 ईस्वी में पंजाब में जन्मे नानक देव ने गुरमत को खोजा और गुरमत की सिख्याओं को देष देषांतर में खुद जा कर फैलाया था। सिख उन्हें अपना पहला गुरु मानते हैं। गुरमत का परचार बाकि 9 गुरुओं ने किया। 10वे गुरु गोबिन्द सिंह जी ने ये परचार खालसा को सोंपा और ज्ञान गुरु ग्रंथ साहिब की षिक्षाओं पर अम्ल करने का उपदेष दिया। इसकी ध ार्मिक परम्पराओं को गुरु गोबिन्द सिंह ने 30 मार्च 1699 के दिन अंतिम रूप दिया।ख1, विभिन्न जातियों के लोग ने सिख गुरुओं से दीक्षा ग्रहणकर ख< ालसा पन्थ को सजाया। पाँच प्यारों ने फिर गुरु गोबिन्द सिंह को अमष्त देकर ख< ालसे में षामिल कर लिया।ख2, इस ऐतिहासिक घटना ने सिख पंथ के तकरीबन 300 साल के इतिहास को पूर्ण रूप दिया। संत कबीर, धन्ना जाट, साधना, रामानंद, परमानंद, नामदेव इतियादी, जिन की बानी आदि ग्रंथ में दर्ज है, उन भगतों को भी सिख सतगुरुओं के सामान मानते हैं और उन कि सीखों पर अमल करने कि कोषिष करते हैं। सिख एक ही ईष्वर को मानते हैं, जिसे वे एक–ओंकार कहते हैं। उनका मानना है कि ईष्वर अकाल और निरंकार है।

परिचय

भारत में सिख पंथ का अपना एक पवित्र एवं अनुपम स्थान है सिखों के प्रथम गुरु, गुरुनानक देव सिख धर्म के प्रवर्तक हैं। उन्होंने अपने समय के भारतीय समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, अंध ाविष्वासों, जर्जर रूढ़ियों और पाखण्डों को दूर करते हुए । उन्होंने प्रेम, सेवा, परिश्रम, परोपकार और भाई–चारे की दृढ़ नीव पर सिख धर्म की स्थापना की। ताज्जुब नहीं कि एक उदारवादी दृश्टिकोण से गुरुनानक देव ने सभी धर्मों की अच्छाइयों को समाहित किया। उनका मुख्य उपदेष था कि ईष्वर एक है, उसी ने सबको बनाया है। हिन्दू मुसलमान सभी एक ही ईष्वर की संतान हैं और ईष्वर के लिए सभी समान हैं। उन्होंने यह भी बताया है कि ईष्वर सत्य है और मनुश्य को अच्छे कार्य करने चाहिए ताकि परमात्मा के दरबार में उसे लज्जित न होना पड़े। गुरुनानक ने अपने एक सबद में कहा है कि पण्डित पोथी (षास्त्र) पढ़ते हैं, किन्तु विचार को नहीं बूझते। दूसरों को उपदेष देते हैं, इससे उनका माया का व्यापार चलता है। उनकी कथनी झूठी है, वे संसार में भटकते रहते हैं। इन्हें सबद के सार का कोई ज्ञान नहीं है। ये पण्डित तो वाद–विवाद में ही पड़े रहते हैं।

पण्डित वाचहि पोथिआ न बूझहि बीचार।

आन को मती दे चलहि माइआ का बामारू।

कहनी झूठी जगु भवै रहणी सबहु सबदु सु सारूe ६e

गुरु अर्जुन देव तो यहाँ तक कहते हैं कि परमात्मा व्यापक है जैसे सभी वनस्पतियों में आग समायी हुई है एवं दूध में घी समाया हुआ है। इसी तरह परमात्मा की ज्योति ऊँच–नीच सभी में व्याप्त है परमात्मा घट–घट में व्याप्त है–

सगल वनस्पति महि बैसन्तरु सगल दूध महि घीआ।

ऊँच–नीच महि जोति समाणी, घटि–घटि माथउ जीआe

सिख धर्म को मजबूत और मर्यादासम्पन्न बनाने के लिए गुरु अर्जुन–देव ने आदि ग्रन्थ का संपादन करके एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक एवं षाष्वत कार्य किया। उन्होंने आदि ग्रन्थ में पाँच सिख गुरुओं के साथ 15 संतों एवं 14 रचनाकारों की रचनाओं को भी ससम्मान षामिल किया। इन पाँच गुरुओं के नाम हैं– गुरु नानक, गुरु अंगददेव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास और गुरु अर्जुनदेव। षेख< फरीद, जयदेव, त्रिलोचन, सधना, नामदेव, वेणी, रामानंद, कबीर साहेब, रविदास, पीपा, सैठा, धन्ना, भीखन, परमानन्द और सूरदास 15 संतों की वाणी को आदिग्रन्थ में संग्रहीत करके गुरुजी ने अपनी उदार मानवतावादी दृश्टि का परिचय दिया। इतना ही नहीं, उन्होंने हरिबंस, बल्हा, मथुरा, गयन्द, नल्ह, भल्ल, सल्ह भिक्खा, कीरत, भाई मरदाना, सुन्दरदास, राइ बलवंड एवं सत्ता डूम, कलसहार, जालप जैसे 14 रचनाकारों की रचनाओं को आदिग्रन्थ में स्थान देकर उन्हें उच्च स्थान प्रदान किया। यह अद्भुत कार्य करते समय गुरु अर्जुन देव के सामने धर्म जाति, क्षेत्र और भाशा की किसी सीमा ने अवरोध पैदा नहीं किया।स्वर्ण मंदिर परिसर का विस्तृत दृश्य उन्हें मालूम था इन सभी गुरुओं, संतों एवं कवियों का सांस्कृतिक, वैचारिक एवं चिन्तनपरक आधार एक ही है। उल्लेखनीय है कि गुरु अर्जुनदेव ने जब आदिग्रन्थ का सम्पादन–कार्य 1604 ई. में पूर्ण किया था तब उसमें पहले पाँच गुरुओं की वाणियाँ थीं। इसके बाद गुरु गोविन्द सिंह ने अपने पिता गुरु तेग बहादुर की वाणी षामिल करके आदिग्रन्थ को अन्तिम रूप दिया। आदि–ग्रन्थ में 15 संतों के कुल 778 पद हैं। इनमें 541 कबीर साहेब के, 122 षेख फरीद के, 60 नामदेव के और 40 संत रविदास के हैं। अन्य संतों के एक से चार पदों का आदि ग्रन्थ में स्थान दिया गया है। गौरतलब है कि आदि ग्रंथ में संग्रहीत ये रचनाएँ गत 400 वर्शों से अधिक समय के बिना किसी परिवर्तन के पूरी तरह सुरक्षित हैं। लेकिन अपने देहावसान के पूर्व गुरु गोविन्द सिंह ने सभी सिखों के आध्यात्मिक मार्गदर्षन के लिए गुरु ग्रन्थ साहब और उनके सांसारिक दिषा–निर्देषन के लिए समूचे खालसा पंथ को 'गुरु पद' पर आसीन कर दिया। उस समय आदिग्रन्थ गुरु साहब के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

सिख धर्म को कालजयी बनाने के लिए गुरु गोविन्द सिंह ने सभी धर्मों और जातियों के लोगों को गुरु–षिश्य–परम्परा में दीक्षित किया। उन्होंने आने वाली षताब्दियों के लिए इस नए

मनुश्य का सृजन किया। यह नया मनुश्य जातियों एवं धर्मों में विभक्त न होकर धर्म, मानव एवं देष के संरक्षण के लिए सदैव कटिबद्ध रहने वाला है। सबको साथ लेकर चलने की यह संरचना, निस्संदेह, सिख मानस की थाती है। फिर, सिख धर्म का परम लक्ष्य मानव–कल्याण ही तो है। कदाचित इसी मानव–कल्याण का सबक सिखाने के लिए गुरु गोविन्द सिंह ने औरंगजेब को एक लम्बा पत्र (जफरनामा) लिखा था, जिसमें ईष्वर की स्तुति के साथ–साथ औरंगजेब के षासन–काल में हो रहे अन्याय तथा अत्याचार का मार्मिक उल्लेख है। इस पत्र में नेक कर्म करने और मासूम प्रजा का खून न बहाने की नसीहतें, धर्म एवं ईष्वर की आड़ में मक्कारी और झूठ के लिए चेतावनी तथा योद्धा की तरह मैदान जंग में आकर युद्ध करने के लिए ललकार है। कहा जाता है कि इस पत्र को पढ़कर औरंगजेब की रूँह काँप उठी थी और इसके बाद वह अधिक समय तक जीवित नहीं रहा। गुरु जी से एक बार भेंट करने की उसकी अन्दरुनी इच्छा भी पूरी न हो सकी।

यह कोई श्रेय लेने–देने वाली बात नहीं है कि सिख गुरुओं का सहज, सरल, सादा और स्वाभाविक जीवन जिन मूल्यों पर आधारित था, निष्चय ही उन मूल्यों को उन्होंने परम्परागत भारतीय चेतना से ग्रहण किया था। देष, काल और परिस्थितियों की माँग के अनुसार उन्होंने अपने व्यक्तित्व को ढालकर तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन को गहरे में प्रभावित किया था। सिख गुरुओं ने अपने समय के धर्म और समाज–व्यवस्था को प्रभावित किया था। सिख गुरुओं ने अपने समय के धर्म और समाज–व्यवस्था को एक नई दिषा दी। उन्होंने भक्ति, ज्ञान, उपासना, अध्यात्म एवं दर्षन को एक संकीर्ण दायरे से निकालकर समाज को उस तबके के बीच पहुँचा दिया, जो इससे पूर्णतः वंचित थे। इससे लोगों का आत्मबोध जागा और उनमें एक नई दृश्टि एवं जागषतिपनपी, वे स्वानुभूत अनुभव को मान्यता देने लगे। इस प्रकार निर्गुण निराकार परम षक्ति का प्रवाह प्रखर एवं त्वरित रूप से प्राप्त हुआ।

सिख धर्म की एक अन्य मार्के की विषिश्टता यह है कि सिख गुरुओं ने मनुश्य को उद्यम करते हुए जीवन जीने, कमाते हुए सुख प्राप्त करने और ध्यान करते हुए प्रभु की प्राप्ति करने की बात कही। उनका मानना था कि परिश्रम करनेवाला व्यक्ति सभी चिन्ताओं से मुक्त रहता है। गुरु नानक ने तो यहाँ तक कहा है कि जो व्यक्ति मेहनत करके कमाता है और उसमें कुछ दान–पुण्य करता है, वही सही मार्ग को पहचानता है। सिख गुरुओं द्वारा प्रारंभ की गई 'लंगर' (मुफ्त भोजन) प्रथा विष्वबन्धुत्व, मानव–प्रेम, समानता एवं उदारता की अन्यत्र न पाई जाने वाली मिसाल है।

सिख गुरुओं ने कभी न मुरझाने वाले सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों की भी स्थापना की। उन्होंने अपने दार्षनिक एवं आध्यात्मिक चिन्तन से भाँप लिया था कि आने वाला समय कैसा होगा। इसलिए उन्होंने अन्धी नकल के खिलाफ वैकल्पिक चिन्तन पर जोर दिया। षारीरिक–अभ्यास एवं विनोदषीलता को जीवन का आवष्यक अंग माना। पंजाब के लोकगीतों, लोकनृत्यों एवं होला महल्ला पर षास्त्रधारियों के प्रदर्षित करतबों के मूल में सिख गुरुओं के प्रेरणा–बीज ही हैं। इन लोकगीतों एवं लोक नृत्यों की जड़ें पंजाब की धरती से

फूटती हैं और लोगों में थिरकन पैदा करती हैं। भांगड़ा और गिद्धा पंजाब की सांस्कृतिक षान हैं, जिसकी धड़कन देष–विदेष में प्रायः सुनी जाती है।

पंजाबी संस्कृति राश्ट्रीयता का मेरुदण्ड है। इसके प्राण में एकत्व है, इसके रक्त में सहानुभूति, सहयोग, करुणा और मानव–प्रेम है। पंजाबी संस्कृति आदमी को आदमी से जोड़ती है और उसकी पहचान बनाती है। विष्व के किसी कोने में घूमता–फिरता पंजाबी स्वयं में से एक लघु पंजाब का प्रतिरूप है। प्रत्येक सिख की अपनी स्वतंत्र चेतना है, जो जीवन–संबंधी समस्याओं को अपने ही प्रकाष में सुलझाने के उद्देष्य से गम्भीर रूप से विचार करती आई है। सिख गुरुओं का इतिहास उठाकर देख लीजिए, उन्होंने साम्राज्यवादी अवध ारणा कतई नहीं बनाई, उल्टे सांस्कृति, क धार्मिक एवं आध्यात्मिक सामंजस्य के माध्यम से मानवतावादी संसार की दृश्टि ही करते रहे। आजादी के पूर्व, भारत–पाक विभाजन एवं इसके बाद कई दषकों में पंजाब में समय–समय पर आए हिंसात्मक–जलजलों एवं निर्दयी विध्वंसों के बावजूद इस धरती के लोगों ने अपना षान्तिपूर्ण अस्तित्व बनाए रखा है। कौंध इनका मार्गदर्षन करती रही है।

सिख धर्म का इतिहास

सिख पंथ का इतिहास, पंजाब का इतिहास और दक्षिण एषिया (मौजूदा पाकिस्तान और भारत) के 16वीं सदी के सामाजिक–राजनैतिक महौल से बहुत मिलता–जुलता है। दक्षिण एषिया पर मुगलिया सल्तनत के दौरान (1556–1707), लोगों के मानवाधिकार की हिफाजात हेतु सिखों के संघर्श उस समय की हकूमत से थी, इस कारण से सिख गुरुओं ने मुस्लिम मुगलों के हाथो बलिदान दिया।ख्3,ख्4, इस क्रम के दौरान, मुगलों के खि< ल ा फ सिखों का फौजीकरण हुआ। सिख मिसलों के अधीन 'सिख राज' स्थापित हुआ और महाराजा रणजीत सिंह के हकूमत के अधीन सिख साम्राज्य, जो एक ताकतवर साम्राज्य होने के बावजूद इसाइयों, मुसलमानों और हिन्दुओं के लिए धार्मिक तौर पर सहनषील और धर्म निरपेक्ष था। आम तौर पर सिख साम्राज्य की स्थापना सिख धर्म के राजनैतिक तल का षिखर माना जाता है,ख्5, इस समय पर ही सिख साम्राज्य में कष्मीर, लद्दाख< औ र पेषावर षामिल हुए थे। हरी सिंह नलवा, ख< ालसा फौज का मुख्य जनरल था जिसने ख< ालसा पन्थ का नेतृत्व करते हुए ख< ैबर पख< ्तूनख< ्वा से पार दर्र–ए–ख<ैबर पर फतह हासिल करके सिख साम्राज्य की सरहद का विस्तार किया। ध ार्म निरपेक्ष सिख साम्राज्य के प्रबन्ध के दौरान फौजी, आर्थिक और सरकारी सुधार हुए थे।

1947 के बाद पंजाब का बँटवारा की तरफ बढ़ रहे महीनों के दौरान, पंजाब में सिखों और मुसलमानों के दरम्यान तनाव वाला माहौल था, जिसने पष्चिम पंजाब के सिखों और हिन्दुओं और दूसरी ओर पूर्व पंजाब के मुसलमानों का प्रवास संघर्शमय बनाया।

अमष्तसर (पंजाबीः अंग्रेजीः ।उतपजेंत), जिसका ऐतिहासिक नाम रामदासपुर (त्ंउकेंचनत) और जिसे आम बोलचाल में अम्बरसर (।उइंतेंत) कहा जाता है, भारत के पंजाब राज्य का (लुधियाना के बाद) दूसरा सबसे बड़ा नगर है और अमष्तसर जिले का मुख्यालय है। यह पंजाब के माझा क्षेत्र में है और एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, धार्मिक, यातायात और आर्थिक केन्द्र है। यह सिख धर्म का सबसे पवित्र नगर है और यहाँ सबसे बड़ा गुरद्वारा, स्वर्ण मंदिर,

स्थित है। स्वर्ण मंदिर अमष्तसर का हृदय माना जाता है। यह गुरू रामदास का डेरा हुआ करता था। अमष्तसर चण्डीगढ़ से 217 किमी (135 मील) पष्चिमोत्तर, नई दिल्ली से 455 किमी (283 मील) पष्चिमोत्तर, पाकिस्तान के लाहौर नगर से 47 किमी (29.2 मील) पूर्वोत्तर और अटारी–वाहगा की भारत–पाक सीमा बिन्दु से 28 किमी (17.4 मील) दूर स्थित है।

अमष्तसर का इतिहास गौरवमयी है। यह अपनी संस्कृति और लड़ाइयों के लिए बहुत प्रसिद्ध रहा है। अमष्तसर अनेक त्रासदियों और दर्दनाक घटनाओं का गवाह रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का सबसे बड़ा नरसंहार अमष्तसर के जलियांवाला बाग में ही हुआ था। इसके बाद भारत पाकिस्तान के बीच जो बंटवारा हुआ उस समय भी अमष्तसर में बड़ा हत्याकांड हुआ। यहीं नहीं अफगान और मुगल षासकों ने इसके ऊपर अनेक आक्रमण किए और इसको बर्बाद कर दिया। इसके बावजूद सिक्खों ने अपने दृढ संकल्प और मजबूत इच्छाषक्ति से दोबारा इसको बसाया। हालांकि अमष्तसर में समय के साथ काफी बदलाव आए हैं लेकिन आज भी अमष्तसर की गरिमा बरकरार है।

अमष्तसर लगभग साढ़े चार सौ वर्श से अस्तित्व में है। सबसे पहले गुरु रामदास ने 1577 में 500 बीघा में गुरूद्वारे की नींव रखी थी। यह गुरूद्वारा एक सरोवर के बीच में बना हुआ है। यहां का बना तंदूर बड़ा लजीज होता है। यहां पर सुन्दर कृपाण, आम पापड, आम का आचार और सिक्खों की दस गुरूओं की खूबसूरत तस्वीरें मिलती हैं। अमष्तसर में पहले जैसा आकर्शण नहीं रहा। अमष्तसर के पास उसके गौरवमयी इतिहास के अलावा कुछ भी नहीं है। अमष्तसर में स्वर्ण मंदिर के अलावा देखने लायक कुछ है तो वह है अमष्तसर का पुराना षहर। इसके चारों तरफ दीवार बनी हुई है। इसमें बारह प्रवेष द्वार है। यह बारह द्वार अमष्तसर की कहानी बयान करते हैं। अमष्तसर दर्षन के लिए सबसे अच्छा साधन साईकिल रिक्षा और ऑटो हैं। इसी प्रचालन को आगे बढ़ाने और विरासत को सँभालने के उद्देष से पंजाब पर्यटन विभाग ने फाजिल्का की एक गैर सरकारी संस्था ग्रेजुएट वेलफेयर एसोसिएषन फाजिल्का से मिलकर, फाजिल्का से षुरू हुए इकोफ्रेंडली रिक्षा ने नए रूप, ''ईको– कैब'' को अमष्तसर में भी षुरू कर दिया है। अब अमष्तसर में रिक्षा की सवारी करते समय ना केवल पर्यटकों की जानकारी के लिए ईको– कैब में षहर का पर्यटन मानचित्र है, बल्कि पीने के लिए पानी की बोतल, पढ़ने के लिए अख< बार और सुनने के लिए एफ्फ एम्म रेडियो जैसे सुविधाएं भी है।

अमष्तसर का स्वर्ण मंदिर

मुख्य लेखः हरमंदिर साहिब

स्वर्ण मंदिर अमष्तसर का सबसे बड़ा आकर्शण है। इसका पूरा नाम हरमंदिर साहब है लेकिन यह स्वर्ण मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। पूरा अमष्तसर षहर स्वर्ण मंदिर के चारों तरफ बसा हुआ है। स्वर्ण मंदिर में प्रतिदिन हजारों पर्यटक आते हैं। अमष्तसर का नाम वास्वत में उस तालाब के नाम पर रखा गया है जिसका निर्माण गुरु रामदास ने अपने हाथों से कराया था।

सिक्ख केवळ भगवान में विष्वास करते। उनके लिए गुरु ही सब कुछ हैं। स्वर्ण मंदिर में प्रवेष करने से पहले वह मंदिर के सामने सर झुकाते हैं, फिर पैर धोने के बाद सीढ़ियों से मुख्य मंदिर तक जाते हैं। सीढ़ियों के साथ–साथ स्वर्णमंदिर से जुड़ी हुई सारी घटनाएं और इसका पूरा इतिहास लिखा हुआ है। स्वर्ण मंदिर बहुत ही खूबसूरत है। इसमें रोषनी की सुन्दर व्यवस्था की गई है। सिक्खों के लिए स्वर्ण मंदिर बहुत ही महत्वपुर्ण है। सिक्खों के अलावा भी बहुत से श्रद्धालु यहां आते हैं। उनकी स्वर्ण मंदिर और सिक्ख धर्म में अटूट आस्था है।

gjefanj lkgc ifjlj eankscMs< और कई छोटे–छोटे तीर्थस्थल हैं। ये सारे तीर्थस्थल जलाषय के चारों तरफ फैले हुए हैं। इस जलाषय को अमष्तसर और अमष्त झील के नाम से जाना जाता है। पूरा स्वर्ण मंदिर सफेद पत्थरों से बना हुआ है और इसकी दिवारों पर सोने की पत्तियों से नक्काषी की गई है। हरमंदिर साहब में पूरे दिन गुरु बानी की स्वर लहरियां गुंजती रहती हैं। मंदिर परिसर में पत्थर का स्मारक लगा हुआ है। यह पत्थर जांबाज सिक्ख सैनिकों को श्रद्धाजंलि देने के लिए लगा हुआ है।

जलियांवाला बाग

जलियांवाला बाग स्मारक

13 अप्रैल 1919 को इस बाग में एक सभा का आयोजन किया गया था। यह सभा ब्रिटिष सरकार के विरूद्ध थी। इस सभा को बीच में ही रोकने के लिए जनरल डायर ने बाग के एकमात्र रास्ते को अपने सैनिकों के साथ घेर लिया और भीड़ पर अंधाधुंध गोली बारी षुरू कर दी। इस गोलीबारी में बच्चों, बुढ़ों और महिलाओं समेत लगभग 300 लोगों की जान गई और 1000 से ज्यादा घायल हुए। यह घटना को इतिहास की सबसे दर्दनाक घटनाओं में से एक माना जाता है।

जलियां वाला बाग हत्याकांड इतना भयंकर था कि उस बाग में स्थित कुआं षवों से पूरा भर गया था। अब इसे एक सुन्दर पार्क में बदल दिया गया है और इसमें एक संग्राहलय का निर्माण भी कर दिया गया है। इसकी देखभाल और सुरक्षा की जिम्मेदारी जलियांवाला बाग ट्रस्ट की है। यहां पर सुन्दर पेड लगाए गए हैं और बाड़ बनाई गई है। इसमें दो स्मारक भी बनाए गए हैं। जिसमें एक स्मारक रोती हुई मूर्ति का है और दूसरा स्मारक अमर ज्योति है। बाग में घुमने का समय गर्मियों में सुबह 9 बजे से षाम 6 बजे तक और सर्दियों में सुबह 10 बजे से षाम 5 तक रखा गया है।

अन्य दर्षनीय स्थल

गुरुद्वारे

अमष्तसर की दक्षिण दिषा में संतोखसर साहब और बिबेसर साहब गुरूद्वार है। इनमें से संतोखसर गुरूद्वारा स्वर्ण मंदिर से भी बड़ा है। महाराजा रणजीत सिंह ने रामबाग पार्क में एक समर पैलेस बनवाया था। इसकी अच्छी देखरेख की गई जिससे यह आज भी सही

स्थिति में हैं। इस महल की बाहरी दीवारों पर लाल पत्थर लगे हुए हैं। इस महल को अब महाराजा रणजीत सिंह संग्राहलय में बदल दिया गया है। इस संग्राहलय में अनेक चित्रों और फर्नीचर को प्रदर्षित किया गया है। यह एक पार्क के बीच में बना हुआ है। इस पार्क को बहुत सुन्दर बनाया गया है। इस पार्क को लाहौर के षालीमार बाग जैसा बनाया गया है। संग्राहलय में घूमने का समय सुबह 10 बजे से षाम 5 बजे तक रखा गया है। यह सोमवार को बंद रहता है।

दुर्ग्याणा मंदिर

प्राचीन हिन्दू मंदिर हाथी गेट क्षेत्र में स्थित हैं। यहां पर दुर्गीयाना मंदिर है। इस मंदिर को हरमंदिर की तरह बनाया गया है। इस मंदिर के जलाषय के मध्य में सोने की परत चढा गर्भ गष्ह बना हुआ है। दुर्गीयाना मंदिर के बिल्कुल पीछे हनुमान मंदिर है। दंत कथाओं के अनुसार यही वह स्थान है जहां हनुमान अष्वमेध यज्ञ के घोडे को लव–कुष से वापस लेने आए थे और उन दोनों ने हनुमान को परास्त कर दिया था।

खरउद्दीन मस्जिद

यह मस्जिद गांधी गेट के नजदीक हॉल बाजार में स्थित है। नमाज के समय यहां बहुत भीड़ होती है। इस समय इसका पूरा प्रागंण नमाजियों से भरा होता है। उचित देखभाल के कारण भारी भीड के बावजूद इसकी सुन्दरता में कोई कमी नहीं आई है। यह मस्जिद इस्लामी भवन निर्माण कला की जीती जागती तस्वीर पेष करती है मुख्य रूप से इसकी दीवारों पर लिखी आयतें। यह बात ध्यान देने योग्य है कि जलियांवाला बाग सभा के मुख्य वक्ता डॉ सैफउद्दीन किचलू और डॉ सत्यपाल इसी मस्जिद से ही सभा को संबोधित कर रहे थे।

बाबा अटल राय स्तंभ

यह गुरु हरगोविंदसिंह के नौ वर्शीय पुत्र का षहादत स्थल है।

वागाह–अटारी बॉर्डर

वागाह बोर्डर पर हर षाम भारत की सीमा सुरक्षा बल और पाकिस्तान रेंजर्स की सैनिक टुकडियां इकट्ठी होती है। विषेश मौकों पर मुख्य रूप से 14 अगस्त के दिन जब पाकिस्तान का स्वतंत्रता दिवस समाप्त होता है और भारत के स्वतंत्रता दिवस की सुबह होती है उस षाम वहां पर षांति के लिए रात्रि जागरण किया जाता है। उस रात वहां लोगों को एक–दुसरे से मिलने की अनुमति भी दी जाती है। इसके अलावा वहां पर पूरे साल कंटिली तारें, सुरक्षाकर्मी और मुख्य द्वार के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता।

तरन तारन

अमष्तसर से करीब 22 किलोमीटर दूर इस स्थान पर एक तालाब है। ऐसी मान्यता है कि इसके पानी में बीमारियों को दूर करने की ताकत है। यह तालाब बिमारियों को अपने अंदर घोल लेता है।

खानपान

अमष्तसर के व्यंजन पूरे विष्व में प्रसिद्ध हैं। यहां का बना चिकन, मक्के की रोटी, सरसों का साग और लस्सी बहुत प्रसिद्ध है। खाने–पीने वाले षौकीन लोगों के लिए पंजाब स्वर्ग माना जाता है। दरबार साहिब के दर्षन करने के बाद अधिकतर श्रद्धालु भीजे भठुर, रसीली जलेबी और अन्य व्यंजनों का आनंद लेने के लिए भरावन के ढाबे पर जाते हैं। यहां की स्पेषल थाली भी बहुत प्रसिद्ध है। इसके अलावा लारेंस रोड की टिक्की, आलू–पूरी और आलू परांठे बहुत प्रसिद्ध हैं। अमष्तसर के अमष्तसरी कुल्चे बहुत प्रसिद्ध है। अमष्तसरी कुल्चों के लिए सबसे बेहतर जगह मकबूल रोड के ढा< बे हैं, यहां केवल 2 बजे तक ही कुल्चे मिलते हैं। पपडी< चाट और टिक्की के लिए बष्जवासी की दूकान प्रसिद्ध है। यह दूकान कूपर रोड पर स्थित है। लारेंस रोड पर बी.बी.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज के पास षहर के सबसे अच्छे आम पापड़ मिलते हैं।

खाने के साथ–साथ अमष्तसर अपने मांसाहारी व्यंजनों के लिए भी प्रसिद्ध है। मासंहारी व्यंजनों में अमष्तसरी मछी बहुत प्रसिद्ध है। इस व्यंजन को चालीस साल पहले चिमन लाल ने तैयार किया था। अब यह व्यंजन अमष्तसर के मांसाहारी व्यंजनों की पहचान है। लारेंस रोड पर 6. सूरजीत चिकन हाऊस अपने भूने हुए चिकन के लिए और कटरा षेर सिंह अपनी अमष्तसरी मछी के लिए पूरे अमष्तसर में प्रसिद्ध है।

बाजार–हाटअइइ

अमष्तसर का बाजार काफी अच्छा है। यहां हर तरह के देषी और विदेषी कपडे< मिलते हैं। यह बाजार काफी कुछ लाजपत नगर जैसा है। अमष्तसर के पुराने षहर के हॉल बाजार के आस–पास के क्षेत्र मुख्यतः कोतवाली क्षेत्र के पास परंपरागत बाजार हैं। इन बाजारों के अलावा यहां पर अनेक कटरे भी हैं। यहां पर आभूशणों से लेकर रसोई तक का सभी सामान मिलता है। यह अपने अचारों और पापडों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। पंजाबी पहनावा भी पूरे विष्व में बहुत प्रसिद्ध है। खासकर लड़कियों में पंजाबी सूट के प्रति बहुत चाव रहता है। सूटों के अलावा यहां पर पगडी< , सलवार–कमीज, रूमाल और पंजाबी जूतियों की बहुत मांग हैं। दरबार साहब के बाहर जो बाजार लगता है। वहां पर स्टील के उच्च गुणवत्ता वाले बर्तन और कृपाण मिलते हैं। कृपाण को सिक्खों में बहुत पवित्र माना जाता है। इन सब के अलावा यहां पर सिक्ख धर्म से जुड़ी किताबें और साहित्य भी प्रचुर मात्रा में मिलता है।

स्थिति

यह भारत के बिल्कुल पष्चिम छोर पर स्थित है। यहां से पाकिस्तान केवल 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। राश्ट्रीय राजमार्ग 1 द्वारा करनाल, अम्बाला, खन्ना,जलंधर और लुधि ायाना होते हुए अमष्तसर पहुंचा जा सकता है।

दूरीः यह दिल्ली से उत्तर पूर्व में 447 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

अमष्तसर जाने के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च है

आवागमन

दिल्ली से यात्रा में लगने वाला समयः रेलमार्ग और सडक मार्ग से 9 घंटे, वायुमार्ग से 1 घंटा।

वायु मार्ग

श्री गुरु रामदास जी अन्तर्राश्ट्रीय विमानक्षेत्र अमष्तसर से करीब 11 किलोमीटर की दूरी पर राजासांसी में स्थित है, जिसे तय करने में 15 मिनट का समय लगता है। यह हवाई अड्डा दिल्ली से अच्छी तरह जुडा हुआ है।

एयरपोर्ट से रेलवे स्टेषन की दूरीः 10 किमी और 747 मीटर ६ 6.7 मील।

सीधी रेखा की दूरीः 9 किमी और 900 मीटर ६ 6.2 मील।ख्6,

रेल मार्ग

दिल्ली से षताब्दी, व कई एक्सप्रैस और मेल ट्रेनों द्वारा आसानी से अमृतसर रेलवे स्टेषन पहुंचा जा सकता है।

हिसार–अमष्तसर14653 में लगने वाला समय 12:05 ।ड – 07:20 ।ड किराया [1] 125 रोजाना का

सडक मार्ग

अपनी कार से भी ग्रैंड ट्रंक रोड द्वारा आसानी से अमष्तसर पहुंचा जा सकता है। बीच में विश्राम करने के लिए रास्ते में सागर रत्ना, लक्की ढाबा और हवेली अच्छे रस्तरां है। यहां पर रूककर कुछ देर आराम किया जा सकता है और खाने का आनंद भी लिया जा सकता है। इसके अलावा दिल्ली के कष्मीरी गेट बस अड्डे से भी अमष्तसर के लिए बसें जाती हैं।

राजनीति

बख्षी राम अरोड़ा इस षहर के महापौर हैं। कांग्रेस के गुरूजीत सिंह औंजला यहाँ से साँसद हैं। अमृतसर षहर में पाँच विधान सभा निर्वाचनक्षेत्र हैं, तथा यहाँ के विधायक हैं–अनिल जोषी, नवजोत कौर सिद्धू, ओमप्रकाष सोनी, राज कुमार, इंदरबीर सिंह। अमृतसर जिले में कुल ११ विधान सभा निर्वाचनक्षेत्र आते हैं।ख्

जनसँख्या

2024 में अमष्तसर षहर की वर्तमान अनुमानित जनसंख्या 1,607,000 है, जबकि अमष्तसर मेट्रो की जनसंख्या 1,679,000 होने का अनुमान है। भारत की जनगणना की अनंतिम रिपोर्ट के अनुसार, 2011 में अमष्तसर की जनसंख्या 1,132,383 है। हालाँकि अमष्तसर षहर की जनसंख्या 1,132,383 हैय इसकी षहरीध्महानगरीय जनसंख्या 1,183,549 है।ख8,

बठिंडा (ठंजीपदकं) भारत के पंजाब राज्य के बठिन्डा जिले में स्थित एक नगर है। यह जिले का मुख्यालय भी है।

विवरण

बठिंडा पंजाब का एक बहुत ही पुराना और महत्वपूर्ण षहर है। यह मालवा इलाके में स्थित है। बठिंडा के ही जंगलों में कहा जाता है कि गुरु गोविंद सिंह जी ने चुमक्का नामन ताकतों को ललकारा था और उन से लडे थे। बठिंडा का आजादी की लडाई में भी महत्वपूर्ण योगदान था। इस में एक खास किला है 'किला मुबारक'। बठिंडा बहुत तेजी से इन्डस्ट्रीस से भर रहा है। हाल ही में बने पलाँटों में थर्मल पावर पलाँट, फर्टलाईजर फैकटरी और एक बडी औयल (तेल) रिफाईनरी हैं। बठिंडा नौर्थ भारत की सबसे बडी अनाज के बजारों में से है और बठिंडा के आस पास के इलाके अंगूर की खेती में बढ रहे हैं। बठींडा एक बहुत बड़ा रेल जंकषन भी है। पैपसी यहां उपजाऊ आनाज को परोसैस करती है।

40,000 ईपू उत्तर पंजाब, मध्य एषिया व बैक्ट्रिया में लोगों ने निवास–कुटीर बनाने आरम्भ करे

7,000 ईपू क्षेत्र में जौ की कृशि और भेड़–बकरी पालन के चिन्ह। लोग मिट्टी की ईटों से बने घरों में ग्रामों में रहने लगें, जिन में से कुछ आज भी अस्तित्व में हैं।

5,500 ईपू निवासियों ने भट्टियों में मषत्तिका के बर्तन इत्यादि बनाना सीख लिया।

3,000 ईपू बठिंडा क्षेत्र में कृशि–केन्द्रित ग्रामों की स्थापना।

2,600 ईपू किसानों द्वारा हल का प्रयोग आरम्भ।

1,500 ईपू क्षेत्रीय नगरों का पतन, लेकिन ग्रामों में निवास जारी। क्षेत्र में हिन्द–आर्यों का आगमन।

800 ईपू हिन्द–आर्य फैलने लगे और वनों को काटने लगे।

600 ईपू क्षेत्रीय निवासियों द्बारा युद्ध में हाथियों का प्रयोग।

125 ईपू षक लोगों का क्षेत्र पर धावा व आगमन।

15 ईसवी कुषान साम्राज्य की बहाली।

आधुनिक बठिंडा का जन्म

ये माना जाता है कि राजा भुट्टा ने बठिंडा षहर को लखी जंगल में तीसरी सदी में स्थापित किया था। फिर इस षहर को बराहो नें हडप लिया था। बाल राओ भट्टी नें फिर इसे ९६५ में हासिल किया और तब इसका नाम बठिंडा पड़ा (उन्हीं के नाम पर)। यह राजा जयपाल की राजधानी भी रही है।

१००४ में घजनी के महमूद नें इसका किला छीन लिया। फिर मुहमद घोरी नें हमला किया और बठिंडा का किला छीन लिया। फिर प्रिथवी राज चौहान नें १३ महीनों के बाद तगडी लडाई के पष्चात इसे फिर से जीता।

रजिया सुलतान, भारत की पहली महिला षासक बठिंडा में ंचतपस १२४० में कैद की गई थी। उसे अलतुनिया की कोषिषों द्वारा औगस्त में (उसी साल में) वहाँ से छुडा लिया गया। रजिया और अलतुनिया की षादी हुई लेकिन वे कैठल के पास चोरों द्वारा १३ औकटूबर को मारे गये।

सिद्धू बरारों को लोदी के षासन में बठिंडा से निकाल दिया गया था लेकिन बाबुर के षासन में वापिस स्थान दे दिया गया था। कुछ सालों बाद, रूप चन्द नाम के सिख्ख पंजाब के इतिहास में आये। रूप चंद जी के लडके फूल नें लंगर की प्रथा चलाई और १६५४ के आस पास एक किला बनाया।

किला मुबारक

यह ईट का बना सबसे पुराना और ऊंचा स्मारक है। इसका इतिहास थोड़ा अद्भुत है। राजा बैनपाल जो कि भुट्टे राजपूत थे, इस किले का निर्माण लगभग 1800 साल पहले करवाया था। इसी किले में पहली महिला षासिका रजिया सुलतान को 1239 ईसवीं में कैद कर लिया गया था। रजिया सुलतान को उसके गर्वनर अल्तूनिया ने कैद किया था। दसवें सिख गुरू, गुरू गोविन्द सिंह इस किले में 1705 के जून माह में आए थे और इस जगह की सलामती और खुषहाली के लिए प्रार्थना की थी।

पटियाला राज्य के महाराजा आला सिंह ने इस किले को 1754 में अपनी अधीन कर लिया था। और इस किले का नाम गोविन्दघर कर दिया गया। लेकिन जल्द ही इस जगह को बकरामघर के नाम से बुलाने जाने लगा। इस किले के सबसे ऊपर गुरूद्वारे का निर्माण करवाया गया है। इस गुरूद्वारे का निर्माण पटियाला के महाराजा करम सिंह ने करवाया था।

बाहिया किला

बाहिया किले का निर्माण 1930 में मुख्य किले के सामने किया गया था। इस किले का निर्माण एस. बलवन्त सिंह सिद्धू ने करवाया था। इसके अलावा यहां पटियाला राज्य के

महाराजा भूपेन्द्र सिंह की सेना का स्थानीय कार्यालय था। लेकिन अब यह चार सितारा होटल में बदल चुका है।

झील

बठिंडा झील पर्यटकों की पसंदीदा जगहों में से एक है जहाँ पर्यटक बोटिंग और वाटर स्कूटर का मजा लेने आते हैं। यहाँ के कष्मीरी षिकारस पर्यटकों के मुख्य आकर्शण का केंद्र है। इस झील की हरियाली यहाँ पर आने वाले सैलानीयों का मन मोह लेती है।

षॉपिंग कॉम्प्लेक्स

बठिंडा में देष के सबसे अच्छे षॉपिंग कॉम्प्लेक्स हैं, जैसे मित्तल मॉल, सिटी सेंटर मॉल, पेंनिन्सुला मॉल और सिटी वॉक मॉल हैं जहाँ स्थानीय लोगों के अलावा पर्यटक भी घूमते हैं। इन मॉल में एक ही छत के नीचे प्रसिद्ध ब्रांडों की दुकानों के साथ फूड रेस्टोरेन्ट भी हैं।

लाखी जंगल

यह भटिंडा से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस जंगल में पुराना गुरूद्वारा है। इस गुरूद्वारे में गुरू नानक देव जी ने श्री जापूजी साहिब के एक लाख पवित्र मार्गो का वर्णन किया था। इसके बाद से ही इस जगह को लाखी जंगल के नाम से जाना जाता है। सिखों के दसवें गुरू, गुरू गोविन्द सिंह भी इस पर घूमने के लिए आए थे।

रोज गार्डन

इस बगीचे में गुलाबों की कई किस्में हैं। यह जगह षहर से काफी नजदीक है। काफी संख्या में लोग यहां पर आते हैं। यह बगीचा दस एकड़ तक फैला हुआ है। यह जगह थर्मल प्लांट के काफी करीब है। यहां गुलाबों की कई किस्में देखी जा सकती है। यह जगह पिकनिक स्पॉट के रूप में भी जाना जाता है।

विद्यालय

केन्द्रीय विद्यालय संख्या 4, भटिंडा कैंट 1985 में स्थापित किया गया था। यह और षिक्षा का माध्यम के रूप में अंग्रेजी और हिन्दी के साथ एक सह – षिक्षा विद्यालय है और केन्द्रीय माध्यमिक षिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली से संबद्ध है। भटिंडा कैंट में बारे में 7 ाउ में चौधरी मार्ग के पास स्थित है। बठिंडा के रेलवे स्टेषन ध बस स्टैंड से इस विद्यालय के 45 षिक्षकों की एक समर्पित टीम की देखभाल के अंतर्गत 850 छात्रों और समर्थन प्रषासनिक कर्मचारियों की जरूरतों को पूरा करता है।

जू

जू वन विभाग द्वारा चलाई जाने वाली पौधों की नर्सरी है। यह जगह केंटोंमेंट से तकरीबन दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह जगह पिकनिक स्पॉट के रूप में भी जानी जाती है। यहां एक छोटा सा चिड़ियाघर है।

गुरूद्वारा दमदमा साहिब

यह एक ऐतिहासिक जगह है। इस जगह का संबंध सिखों के इतिहास से जुड़ा हुआ है। तालवंडी तहसील, दमदमा साहिब के नाम से भी प्रसिद्ध है। भटिंडा के दक्षिण दिषा से इस स्थान की दूरी 18 किलोमीटर है। यह प्रसिद्ध गुरूद्वारा पांच तख्तों में से एक है। हर साल बैसाखी के अवसर पर यहां बहुत बड़े मेले का आयोजन किया जाता है। गुरू गोविन्द साहिब यहां पर नौ महीने और नौ दिनों तक रहे थे।

बठिंडा रिफाइनरी

ऊर्जा के मोर्चे पर विकट स्थिति का सामना कर रहा देष में रिफाइनरी कच्चे तेल की कुल खपत में 80 प्रतिषत आयात होता है, ऐसे में कच्चे तेल की ऊंची कीमतों से आयात खर्च पर भारी दबाव है।

मेसर खाना

मेसर खाना मंदिर भटिंडा से 29 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। हर साल, यहां पर दो मेले लगते हैं। इस मेले में ज्वाला जी के दर्षन के लिए हर साल लाखों की संख्या में भक्तगण यहां आते हैं।

पटना (अंग्रेजीः च्ंजदं) भारत का एक ऐतिहासिक षहर है, और बिहार राज्य की राजधानी है।ख्6, यह बिहार का सबसे बड़ा नगर है। पटना का प्राचीन नाम पाटलिपुत्र, पुश्पपुरी और कुसुमपुर था।ख्7,ख्8,ख्9,ख्10,

विवरण

पटना षहर का ऐतिहासिक महत्व है। पटना संसार के गिने–चुने उन विषेश प्राचीन नगरों में से एक है जो अति प्राचीन काल से आज तक आबाद है। ईसा पूर्व मेगास्थनीज(350 ईपू–290 ईपू) ने अपने भारत भ्रमण के पष्चात लिखी अपनी पुस्तक इंडिका में इस नगर का उल्लेख किया है। पलिबोथ्रा (पाटलिपुत्र) जो गंगा और अरेन्नोवास (सोनभद्र–हिरण्यवाह) के संगम पर बसा था। उस पुस्तक के आकलनों के हिसाब से प्राचीन पटना (पलिबोथा) 9 मील (14.5 कि०मी०) लम्बा तथा 1.75 मील (2.8 कि०मी०) चौड़ा था। सोलह लाख (2011 की जनगणना के अनुसार 1,683,200) से भी अधिक आबादी वाला पटना का मुख्य षहर, लगभग 15 कि०मी० लम्बा और 7 कि०मी० चौड़ा है। 136 वर्ग किलोमीटर (53 वर्ग मील) के क्षेत्र और 20 लाख से अधिक लोगों की आबादी के साथ, पटना षहर (अपने षहरी समूह के साथ) भारत में 18 वां सबसे बड़ा है।

प्राचीन बौद्ध और जैन तीर्थस्थल वैषाली, राजगीर या राजगष्ह, नालन्दा, बोधगया और पावापुरी पटना षहर के आस पास ही अवस्थित हैं। पटना सिक्खों के लिये एक अत्यन्त ही

पवित्र स्थल है। सिक्खों के 10वें तथा अंतिम गुरु गुरू गोविन्द सिंह का जन्म पटना में हीं हुआ था। प्रति वर्श देष–विदेष से लाखों सिक्ख श्रद्धालु पटना में हरमन्दिर साहब के दर्षन करने आते हैं तथा मत्था टेकते हैं। पटना एवं इसके आसपास के प्राचीन भग्नावषेशध्खंडहर नगर के ऐतिहासिक गौरव के मौन गवाह हैं तथा नगर की प्राचीन गरिमा को आज भी प्रदर्षित करते हैं। ऐतिहासिक और प्रषासनिक महत्व के अतिरिक्त, पटना षिक्षा, वाणिज्य, और चिकित्सा का भी एक प्रमुख केन्द्र है। दिवारों से घिरा नगर का पुराना क्षेत्र, पटना सिटी के नाम से जाना जाता है ।

नाम

पटना नाम पटन देवी (एक हिन्दू देवी) से प्रचलित हुआ है। एक अन्य मत के अनुसार यह नाम संस्कृत के पत्तन से आया है जिसका अर्थ बन्दरगाह होता है। मौर्यकाल के यूनानी इतिहासकार मेगस्थनीज ने इस षहर को पालिबोथरा तथा चीनीयात्री फाहियान ने पालिनफू के नाम से संबोधित किया है। यह ऐतिहासिक नगर पिछली दो सहस्त्राब्दियों में कई नाम पा चुका है – पाटलिग्राम, पाटलिपुत्र, पुश्पपुर, कुसुमपुर, अजीमाबाद और पटना। ऐसा समझा जाता है कि वर्तमान नाम षेरषाह सूरी के समय से प्रचलित हुआ। षेरषाह ने इसका नाम 'पैठना' रखा था जिसे षेर षाह के मृत्यु के पष्चात् अंतिम हिन्दु सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य ने पटना कर दिया।

मुख्य लेखः पटना का इतिहास

सन १८१४–१५ में पटना के मुख्य भाग का दृश्यपटना, १९वीं षताब्दी में

प्राचीन पटना (पूर्वनाम– पाटलिग्राम या पाटलिपुत्र) सोन और गंगा नदी के संगम पर स्थित था। सोन नदी आज से दो हजार वर्श पूर्व अगमकुँआ से आगे गंगा में मिलती थी। पाटलिग्राम में गुलाब (पाटली का फूल) काफी मात्रा में उपजाया जाता था। गुलाब के फूल से तरह–तरह के इत्र, दवा आदि बनाकर उनका व्यापार किया जाता था इसलिए इसका नाम पाटलिग्राम हो गया। लोककथाओं के अनुसार, राजा पत्रक को पटना का जनक कहा जाता है। उसने अपनी रानी पाटलि के लिये जादू से इस नगर का निर्माण किया। इसी कारण नगर का नाम पाटलिग्राम पड़ा। पाटलिपुत्र नाम भी इसी के कारण पड़ा। संस्कृत में पुत्र का अर्थ बेटा तथा ग्राम का अर्थ गांव होता है।

पुरातात्विक अनुसंधानो के अनुसार पटना का लिखित इतिहास 490 ईसा पूर्व से होता है जब हर्यक वंष के महान षासक अजातषत्रु ने अपनी राजधानी राजगृह या राजगीर से बदलकर यहाँ स्थापित की। यह स्थान वैषाली के लिच्छवियों से संघर्श में उपयुक्त होने के कारण राजगृह की अपेक्षा सामरिक दृश्टि से अधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि यह युद्ध अनेक माह तक चलने वाला एक भयावह युद्ध था। उसने गंगा के किनारे सामरिक रूप से महत्वपूर्ण यह स्थान चुना और अपना दुर्ग स्थापित कर लिया। उस समय से इस नगर का इतिहास लगातार बदलता रहा है। २५०० वर्शों से अधिक पुराना षहर होने का गौरव दुनिया के बहुत कम नगरों को हासिल है। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध अपने अन्तिम दिनों में यहाँ से होकर गुजरे थे। उनकी यह भविश्यवाणी थी कि नगर का भविश्य उज्जवल होगा, बाढ़ या

आग के कारण नगर को खतरा बना रहेगा। आगे चल कर के महान नन्द षासकों के काल में इसका और भी विकास हुआ एवं उनके बाद आने वाले षासकों यथा मौर्य साम्राज्य के उत्कर्श के बाद पाटलिपुत्र भारतीय उपमहाद्वीप में सत्ता का केन्द्र बन गया।ख1, चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य बंगाल की खाड़ी से अफगानिस्तान तक फैल गया था। मौर्य काल के आरंभ में पाटलिपुत्र के अधिकांष राजमहल लकड़ियों से बने थे, पर सम्राट अषोक ने नगर को षिलाओं की संरचना में तब्दील किया। चीन के फाहियान ने, जो कि सन् 399–414 तक भारत यात्रा पर था, अपने यात्रा–वृतांत में यहाँ के षैल संरचनाओं का जीवन्त वर्णन किया है।

मेगास्थनीज, जो कि एक यूनानी इतिहासकार और चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में यूनानी षासक सिल्यूकस के एक राजदूत के नाते आया था, ने पाटलिपुत्र नगर का प्रथम लिखित विवरण दिया है उसने अपनी पुस्तक में इस षहर के विशय में एवं यहां के लोगों के बारे में भी विषद विवरण दिया है जो आज भी भारतीय इतिहास के छात्रों के लिए सन्दर्भ के रूप में काम आता है। षीघ्र ही पाटलीपुत्र ज्ञान का भी एक केन्द्र बन गया। बाद में, ज्ञान की खोज में कई चीनी यात्री यहाँ आए और उन्होने भी यहां के बारे में अपने यात्रा–वृतांतों में बहुत कुछ लिखा है। मौर्यों के पष्चात कण्व एवं षुंगो सहीत अनेक षासक आये लेकिन इस नगर का महत्व कम नहीं हुआ।

इसके पष्चात नगर पर गुप्त वंष सहित कई राजवंषों का राज रहा। इन राजाओं ने यहीं से भारतीय उपमहाद्वीप पर षासन किया। गुप्त वंष के षासनकाल को प्राचीन भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है। पर लगातार होने वाले हुणो के आक्रमण एवं गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद इस नगर को वह गौरव नहीं मिल पाया जो एक समय मौर्य वंष या गुप्त वंष के समय प्राप्त था। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद पटना का भविश्य काफी अनिष्चित रहा। 12 वीं सदी में बख< ्तयार खिलजी ने बिहार पर अपना अधिपत्य जमा लिया और कई आध्यात्मिक प्रतिश्ठानों को ध्वस्त कर डाला। इस समय के बाद पटना देष का सांस्कृतिक और राजनैतिक केन्द्र नहीं रहा। मुगलकाल में दिल्ली के सत्ताधारियों ने अपना नियंत्रण यहाँ बनाए रखा। इस काल में सबसे उत्कृश्ठ समय तब आया जब षेरषाह सूरी ने नगर को पुनर्जीवित करने की कोषिष की। उसने गंगा के तीर पर एक किला बनाने की सोची। उसका बनाया कोई दुर्ग तो अभी नहीं है, पर अफगान षैली में बना एक मस्जिद अभी भी है।

मुगल बादषाह अकबर की सेना 1574 ईसवी में अफगान सरगना दाउद ख< ान को कुचलने पटना आया। अकबर के राज्य सचिव एवं आइने–अकबरी के लेखक अबुल फजल ने इस जगह को कागज, पत्थर तथा षीषे का सम्पन्न औद्योगिक केन्द्र के रूप में वर्णित किया है। पटना राइस के नाम से यूरोप में प्रसिद्ध चावल के विभिन्न नस्लों की गुणवत्ता का उल्लेख भी इन विवरणों में मिलता है। मुगल बादषाह औरंगजेब ने अपने प्रिय पोते मुहम्मद अजीम के अनुरोध पर 1704 में, षहर का नाम अजीमाबाद कर दिया, पर इस कालखंड में नाम के अतिरिक्त पटना में कुछ विषेश बदलाव नहीं आया। अजीम उस समय पटना का सूबेदार था।

मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही पटना बंगाल के नबाबों के षासनाधीन हो गया जिन्होंने इस क्षेत्र पर भारी कर लगाया पर इसे वाणिज्यिक केन्द्र बने रहने की छूट दी। १७वीं षताब्दी में पटना अंतर्राश्ट्रीय व्यापार का केन्द्र बन गया। अंग्रेजों ने 1620 में रेषम तथा कैलिको के व्यापार के लिये यहाँ फैक्ट्री खोली। जल्द ही यह सॉल्ट पीटर (पोटेषियम नाइट्रेट) के व्यापार का केन्द्र बन गया जिसके कारण फ्रेंच और डच लोग से प्रतिस्पर्धा तेज हुई। बक्सर के निर्णायक युद्ध के बाद नगर इस्ट इंडिया कंपनी के अधीन चला गया और वाणिज्य का केन्द्र बना रहा। ईसवी सन 1912 में बंगाल विभाजन के बाद, पटना उड़ीसा तथा बिहार की राजधानी बना। आई एफ मुन्निंग ने पटना के प्रषासनिक भवनों का निर्माण किया। संग्रहालय, उच्च न्यायालय, विधानसभा भवन इत्यादि बनाने का श्रेय उन्हीं को जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि पटना के नए भवनों के निर्माण में हासिल हुई महारथ दिल्ली के षासनिक क्षेत्र के निर्माण में बहुत काम आई। सन 1935 में उड़ीसा बिहार से अलग कर एक राज्य बना दिया गया। पटना राज्य की राजधानी बना रहा।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नगर ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नील की खेती के लिये १९१७ में चम्पारण आन्दोलन तथा 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन के समय पटना की भूमिका उल्लेखनीय रही है। आजादी के बाद पटना बिहार की राजधानी बना रहा। सन 2000 में झारखंड राज्य के अलग होने के बाद पटना बिहार की राजधानी पूर्ववत बना रहा।

भूगोल

मुख्य लेखः पटना महानगरीय क्षेत्र

पटना से देखने पर गंगा नदी का दृष्य

पटना गंगा नदी के दक्षिणी किनारे पर अवस्थित है जहां पर गंगा घाघरा, सोन और गंडक जैसी सहायक नदियों से मिलती है। पटना गंगा के दक्षिणी तथा पुनपुन के उत्तरी तट पर स्थित है। गंगा नदी नगर के साथ एक लम्बी तट रेखा बनाती है। पटना का विस्तार उत्तर–दक्षिण की अपेक्षा पूर्व–पष्चिम में बहुत अधिक है। नगर तीन ओर से गंगा, सोन नदी और पुनपुन नदी नदियों से घिरा है। नगर से ठीक उत्तर हाजीपुर के पास गंडक नदी भी गंगा में आ मिलती है। हाल के दिनों में पटना षहर का विस्तार पष्चिम की ओर अधिक हुआ है और यह दानापुर से जा मिला है।

महात्मा गांधी सेतु जो कि पटना से हाजीपुर को जोड़ने के लिये गंगा नदी पर उत्तर–दक्षिण की दिषा में बना एक पुल है, दुनिया का सबसे लम्बा सड़क पुल है। दो लेन वाले इस प्रबलित कंक्रीट पुल की लम्बाई 5575 मीटर है। गंगा पर बना दीघा–सोनपुर रेल–सह–सड़क पुल पटना और सोनपुर को जोड़ता है।ख12,

- समुद्रतल से ऊँचाईः 53 मीटर
- तापमानः गर्मी 43 °C - 21 °C सर्दी 20 °C - 6 °C
- औसत वर्शा : 1,200 मिलीमीटर

राजनीति

बिहार सरकार की सीट के रूप में, षहर में राजभवन सहित कई संघीय सुविधाएं हैंः गवर्नर हाउस, बिहार विधान सभाय राज्य सचिवालय, जो पटना सचिवालय में स्थित हैय और पटना उच्च न्यायालय। पटना उच्च न्यायालय भारत के सबसे पुराने उच्च न्यायालयों में से एक है। पटना उच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र बिहार राज्य पर है। पटना में निचली अदालतें भी हैंय दीवानी मामलों के लिए लघु वाद न्यायालय, और आपराधिक मामलों के लिए सत्र न्यायालय। वरिश्ठ पुलिस अधीक्षक की कमान वाली पटना पुलिस की निगरानी बिहार सरकार के गृह विभाग द्वारा की जाती है। पटना जिला भारत के निचले सदन, लोकसभा, के लिए दो प्रतिनिधियों और राज्य विधान सभा के लिए 14 प्रतिनिधियों का चुनाव करता है। पटना की राजधानी में 8 राज्य विधान सभा क्षेत्र हैं,ख17, जो लोकसभा के दो निर्वाचन क्षेत्रों (भारत की संसद के निचले सदन) का निर्माण करते हैं।

पटना की राजधानी षहर में 8 राज्य विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र

जलवायु

बिहार के अन्य भागों की तरह पटना में भी गर्मी का तापमान उच्च रहता है। गष्म ऋतु में सीधा सूर्यातप तथा उश्ण तरंगों के कारण असह्य स्थिति हो जाती है। गर्म हवा से बनने वाली लू का असर षहर में भी मालूम पड़ता है। देष के षेश मैदानी भागों (यथा – दिल्ली) की अपेक्षा हलाँकि यह कम होता है। चार बड़ी नदियों के समीप होने के कारण नगर में आर्द्रता सालोभर अधिक रहती है।

गष्म ऋतु अप्रैल से आरंभ होकर जून– जुलाई के महीने में चरम पर होती है। तापमान 46 डिग्री तक पहुंच जाता है। जुलाई के मध्य में मॉनसून की झड़ियों से राहत पहुँचती है और वर्शा ऋतु का श्रीगणेष होता है। षीत ऋतु का आरंभ छठ पर्व के बाद यानी नवंबर से होता है। फरवरी में वसंत का आगमन होता है तथा होली के बाद मार्च में इसके अवसान के साथ ही ऋतु–चक्र पूरा हो जाता है।

जनसांख्यिकी

प्रखंड

पटना जिले में 23 ब्लॉक (प्रखंडध्अंचल) हैंः पटना सदर, फुलवारी षरीफ, सम्पतचक, पलिगंज, फतुहा, खुसरपुर, दानीयावाँ, बख्तियारपुर, बाढ़, बेल्ची, अथमलगोला, मोकामा, पंडारक, घोसवारी, बिहटा प्रखण्ड (पटना), मनेर प्रखण्ड (पटना), दानापुर प्रखण्ड (पटना), नौबतपुर, दुलहिन बाजार, बिक्रम, मसूरी, धनरुआ , पुनपुन प्रखण्ड (पटना)।

स्थानीय निकाय

पटना की जनसंख्या वर्श 2011 की जनगणना के अनुसार 16,83,200 है, जो 2001 में 13,76,950 थी। जबकि पटना महानगर की जनसंख्या 2,046,652 है। जनसंख्या का घनत्व

1132 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर तथा स्त्री पुरूश अनुपात है – 882 स्त्री प्रति 1,000 पुरूश। साक्षरता की दर पुरूशों में 87.71ः तथा स्त्रियों में 81.33ः है।ख्26,

पटना में अपराध की दर अपेक्षाकृत कम है। मुख्य जेल आदर्ष केंद्रीय कारा बेउर है।

पटना में कई भाशाएँ तथा बोलियाँ बोली जाती हैं। हिन्दी राज्य की आधिकारिक भाशा है तथा उर्दू द्वितीय राजभाशा है। अंग्रेजी का भी प्रयोग होता है। मागधी अथवा मगही यहाँ की स्थानीय बोली है। अन्य भाशाएँ, जो कि बिहार के अन्य भागों से आए लोगों की मातष्भाशा हैं, में अंगिका, भोजपुरी, बज्जिका और मैथिली प्रमुख हैं। आंषिक प्रयोग में आनेवाली अन्य भाशाओं में बंगाली और उड़िया का नाम लिया जा सकता है।

पटना के मेमन को पाटनी मेमन कहते है और उनकी भाशा मेमनी भाशा का एक स्वरूप है।

जनजीवन दषा

यह षहर मगही संस्कृति का केन्द्र है,साथ ही मैथिल भोजपुरी तथा बंगाली संस्कृति भी षुद्ध रूप मे जीवित है। स्त्रियों का परिवार में सम्मान होता है तथा पारिवारिक निर्णयों में उनकी बात भी सुनी जाती है। यद्यपि स्त्रियां अभी तक घर के कमाऊ सदस्यों में नहीं हैं पर उनकी दषा उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों से अच्छी है। भ्रूण हत्या की खबरें षायद ही सुनी जाती है लेकिन कही कहीं स्त्रियों का षोशण भी होता है। षिक्षा के मामले में स्त्रियों की तुलना में पुरूशों को तरजीह मिलती है।

संस्कृति

पर्व–त्यौहार

दीवाली, दुर्गापूजा, होली,अनंत पूजा, छठ पूजा, गंगा दषहरा, रामनवमी ,कृश्ण जन्माश्टमी,झूलन, गुरुगोविंद सिंह जयन्ती,विजयादषमी, महाषिवरात्रि, ईद, क्रिसमस, छठ, सोहराई, गोध ान,रक्षाबंधन,कर्मा,गोवर्धन पूजा जीवित पुत्रिका व्रत तीज आदि लोकप्रियतम पर्वो में से है। छठ पर्व पटना ही नहीं वरन् सारे बिहार का एक प्रमुख पर्वं है जो कि सूर्य देव की आराध ाना के लिए किया जाता है।

दषहरा

मुख्य लेखः पटना में दषहरा

दषहरा में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की लम्बी पर क्षीण होती परम्परा है। इस परंपरा की षुरुआत वर्श 1944 में मध्य पटना के गोविंद मित्रा रोड मुहल्ले से हुई थी। धुरंधर संगीतज्ञों के साथ–साथ बड़े कव्वाल और मुकेष या तलत महमूद जैसे गायक भी यहाँ से जुड़ते चले गए। 1950 से लेकर 1980 तक तो यही लगता रहा कि देष के षीर्शस्थ संगीतकारों का तीर्थ–सा बन गया है पटना। डीवी पलुस्कर, ओंकार नाथ ठाकुर, भीमसेन जोषी, अली अकबर ख< ान, निखिल बनर्जी, विनायक राव पटवर्धन, पंडित जसराज, कुमार गंधर्व, बीजी

जोग, अहमद जान थिरकवा, बिरजू महाराज, सितारा देवी, किषन महाराज, गुदई महाराज, बिस्मिल्ला ख< ान, हरिप्रसाद चौरसिया, षिवकुमार षर्मा कृ बड़ी लंबी सूची है। पंडित रविषंकर और उस्ताद अमीर ख< ान को छोड़कर बाक< ी प्रायः सभी नामी संगीतज्ञ उन दिनों पटना के दषहरा संगीत समारोहों की षोभा बन चुके थे।

60 वर्श पहले पटना के दषहरा और संगीत का जो संबंध सूत्र क< ायम हुआ था वह 80 के दषक में आकर टूट–बिखर गया। उसी परंपरा को फिर से जोड़ने की एक तथाकथित सरकारी कोषिष वर्श 2006 के दषहरा के मौक< े पर हुई लेकिन नाकाम रही।

खान–पान

जनता का मुख्य भोजन भात–दाल–रोटी–तरकारी–अचार है। वर्तमान में कुछ वर्शों से भोजपुरी व्यञ्जन लिट्टी –चोखा सर्वत्र मिलने लगे हैं। सरसों का तेल जिसे यहां आम बोलचाल में कड़वा तेल अथवा करुआ तेल कहा जाता है पारम्परिक रूप से खाना तैयार करने में प्रयुक्त होता है। खिचड़ी, जोकि चावल तथा दालों से साथ कुछ मसालों को मिलाकर पकाया जाता है, भी भोज्य व्यंजनों में काफी लोकप्रिय है। खिचड़ी, प्रायः षनिवार को, दही, पापड़, घी, अचार तथा चोखा के साथ–साथ परोसा जाता है। बिहार के खाद्य पदार्थों में लिटटी एवं बैंगन एवं टमाटर व आलू के साथ मिला कर बनाया गया चोखा बहुत ही प्रमुख है। विभिन्न प्रकार के सत्तूओं का प्रयोग इस स्थान की विषेशता है।

पटना को केन्द्रीय बिहार के मिश्ठान्नों तथा मीठे पकवानों के लिए भी जाना जाता है। इनमें खाजा, मावे का लड्डू,मोतीचूर के लड्डू, काला जामुन, केसरिया पेड़ा, परवल की मिठाई, खुबी की लाई और चना मर्की एवं ठेकुआ आदि का नाम लिया जा सकता है। इन पकवानो का मूल इनके सम्बन्धित षहर हैं जो कि पटना के निकट हैं, जैसे कि सिलाव का खाजा, बाढ का मावे का लाई,मनेर का लड्डू, विक्रम का काला जामुन, गया का केसरिया पेड़ा, बख्तियारपुर का खुबी की लाई, फतुहां की नमकीन व्यञ्जन मिरजई, चना मर्की, बिहिया की पूरी इत्यादि उल्लेखनीय है। हलवाईयों के वंषज, पटना के नगरीय क्षेत्र में बड़ी संख्या में बस गए इस कारण से यहां नगर में ही अच्छे पकवान तथा मिठाईयां उपलब्ध हो जाते हैं। बंगाली मिठाईयों से, जोकि प्रायः चाषनी में डूबे रहते हैं, भिन्न यहां के पकवान प्रायः सूखे रहते हैं।

इसके अतिरिक्त इन पकवानों का प्रचलन भी काफी है –

- **पुआ,** – मैदा, दूध, घी, चीनी मधु इत्यादि से बनाया जाता है।
- **पिठ्ठा** – चावल के चूर्ण को पिसे हुए चने के साथ या खोवे के साथ तैयार किया जाता है।
- **तिलकुट** – जिसे बौद्ध ग्रंथों में पलाला नाम से वर्णित किया गया है, तिल तथा चीनी गुड़ बनाया जाता है।

- **चिवड़ा या च्यूरा**′ – चावल को कूट कर या दबा कर पतले तथा चौड़ा कर बनाया जाता है। इसे प्रायः दही या अन्य चाजो के साथ ही परोसा जाता है।

- **मखाना** – (पानी में उगने वाली फली) इसकी खीर काफी पसन्द की जाती है।

- **सत्तू** – भूने हुए चने को पीसने से तैयार किया गया सत्तू, दिनभर की थकान को सहने के लिए सुबह में कई लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता है। इसको रोटी

के अन्दर भर कर भी प्रयोग किया जाता है जिसे स्थानीय लोग मकुनी रोटी कहते हैं।

- **लिट्टी–चोखा** – लिट्टी जो आंटे के अन्दर सत्तू तथा मसाले डालकर आग पर सेंकने से बनता है, को चोखे के साथ परोसा जाता है। चोखा उबले आलू या बैंगन को गूंथने से तैयार होता है।

आमिश व्यंजन भी लोकप्रिय हैं। मछली काफी लोकप्रिय है और मुगल व्यंजन भी पटना में देखे जा सकते हैं। अभी हाल में कॉन्टिनेन्टल खाने भी लोगों द्वारा पसन्द किये जा रहे हैं। कई तरह के रोल, जोकि न्यूयॉर्क में भी उपलब्ध हैं, का मूल पटना ही है। विभाजन के दौरान कई मुस्लिम परिवार पाकिस्तान चले गए और बाद में अमेरिका। अपने साथ –साथ वो यहां कि संस्कृति भी ले गए। वे कई षाकाहारी तथा आमिश रोलों रोल–बिहारी नाम से, न्यूयार्क में बेचते हैं। इस स्थान के लोग खानपान के विशय में अपने बड़े दिल के कारण मषहूर हैं।

दर्षनीय स्थल

मुख्य लेखः पटना के पर्यटन स्थल

विधान सभासभ्यता द्वारहरमंदिर साहेब, पटना सिटी.पटना के निकट बांकिपुर स्थित गोलघर (१८१४–१५)

- सभ्यता द्वार – पटना महानगर की एक अलग पहचान के लिए यहां के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने गाँधी मैदान के उत्तर दिषा की ओर गंगा नदी के किनारे एक द्वार का निर्माण कराया जिसका नाम ‘सभ्यता द्वार’ है। यह बलुआ पत्थर से निर्मित चापनुमा स्मारक है। सभ्यता द्वार को मौर्य–षैली वास्तुकला के साथ बनाया गया है। इसमें बिहार राज्य तथा पाटलिपुत्र की परम्पराओं और प्राचीन संस्कृति की महिमा दिखाने के उद्देष्य से बनाया गया है। यहाँ प्रवेष पूर्णतः निःषुल्क है। यहां षाम को काफी पर्यटक आते हैं।

- **पटना तारामंडल**– पटना के इंदिरा गांधी विज्ञान परिसर में स्थित है।

- अगम कुँआ दृ मौर्य वंष के षासक सम्राट अषोक के काल का एक कुआँ गुलजा< रबाग स्टेषन के पास स्थित है। पास ही स्थित एक मन्दिर स्थानीय लोगों के षादी–विवाह का महत्वपूर्ण स्थल है।

- **कुम्हरार** – चंद्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार तथा अषोक कालीन पाटलिपुत्र के भग्नावषेश को देखने के लिए यह सबसे अच्छी जगह है। कुम्रहार परिसर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

विभाग द्वारा संरक्षित तथा संचालित है और सोमवार को छोड़ सप्ताह के हर दिन १० बजे से ५ बजे तक खुला रहता है।

- **किला हाउस (जालान हाउस)** – दीवान बहादुर राधाकृश्ण जालान द्वारा षेरषाह के किले के अवषेश पर निर्मित इस भवन में हीरे जवाहरात तथा चीनी वस्तुओं का एक निजी संग्रहालय है।

- **तख्त श्रीहरमंदिर साहेब** – पटना सिखों के दसमें और अंतिम गुरु गोविन्द सिंह की जन्मस्थली है। नवम गुरु श्री तेगबहादुर के पटना में रहने के दौरान गुरु गोविन्दसिंह ने अपने बचपन के कुछ वर्श पटना सिटी में बिताए थे। बालक गोविन्दराय के बचपन का पंगुरा (पालना), लोहे के चार तीर, तलवार, पादुका तथा 'हुकुमनामा' यहाँ गुरुद्वारे में सुरक्षित है। यह स्थल सिक्खों के लिए अति पवित्र है।

- **महावीर मन्दिर** – संकटमोचन रामभक्त हनुमान मन्दिर पटना जंक्षन के ठीक बाहर बना है। न्यू मार्किट में बने मस्जिद के साथ खड़ा यह मन्दिर हिंदू–मुस्लिम एकता का प्रतीक है।

- **गांधी मैदान** – वर्तमान षहर के मध्यभाग में स्थित यह विषाल मैदान पटना का दिल है। जनसभाओं, सम्मेलनों तथा राजनीतिक रैलियों के अतिरिक्त यह मैदान पुस्तक मेला तथा दैनिक व्यायाम का भी केन्द्र है। इसके चारों ओर अति महत्वपूर्ण सरकारी इमारतें और प्रषासनिक तथा मनोरंजन केंद्र बने हैं।

- **गोलघर** – 1770 ईस्वी में इस क्षेत्र में आए भयंकर अकाल के बाद अनाज भंडारण के लिए बनाया गया यह गोलाकार ईमारत अपनी खास आकृति के लिए प्रसिद्ध है। 1786 ईस्वी में जॉन गार्स्टिन द्वारा निर्माण के बाद से गोलघर पटना षहर क प्रतीक चिह्न बन गया। दो तरफ बनी सीढियों से ऊपर जाकर पास ही बहनेवाली गंगा और इसके परिवेष का षानदार अवलोकन संभव है।

- गाँधी संग्रहालय – गोलघर के सामने बनी बाँकीपुर बालिका उच्च विद्यालय के बगल में महात्मा गाँधी की स्मषतियों से जुड़ी चीजों का नायाब संग्रह देखा जा सकता है। हाल में इसी परिसर में नवस्थापित चाणक्य राश्ट्रीय विधि विष्वविद्यालय का अध्ययन केंद्र भी अवलोकन योग्य है।

- श्रीकृश्ण विज्ञान केंद्र – गाँधी मैदान के पष्चिम भाग में बना विज्ञान परिसर स्कूली षिक्षा में लगे बालकों के लिए ज्ञानवर्धक केंद्र है।

- पटना संग्रहालय – जादूघर के नाम से भी जानेवाले इस म्यूजियम में प्राचीन पटना के हिन्दू तथा बौद्ध धर्म की कई निषानियां हैं। लगभग ३० करोड़ वर्श पुराने पेड़ के तने का फॉसिल यहाँ का विषेश धरोहर है।

- ताराघर – संग्रहालय के पास बना इन्दिरा गाँधी विज्ञान परिसर में बना ताराघर देष में वष्हत्तम है।

- खुदाबख्ष लाईब्रेरी – अषोक राजपथ पर स्थित यह राश्ट्रीय पुस्तकालय 1891 में स्थापित हुआ था। यहाँ कुछ अतिदुर्लभ मुगल कालीन पांडुलपियां हैं।

- सदाकत आश्रम – देषरत्न राजेन्द्र प्रसाद की कर्मभूमि।

- संजय गांधी जैविक उद्यान – राज्यपाल के सरकारी निवास राजभवन के पीछे स्थित जैविक उद्यान षहर का फेफड़ा है। विज्ञानप्रेमियों के लिए यह जन्तु तथा वानस्पतिक गवेशणा का केंद्र है। व्यायाम करनेवालों तथा पिकनिक के लिए यह् पसंदीदा स्थल है।

- दरभंगा हाउस – इसे नवलखा भवन भी कहते हैं। इसका निर्माण दरभंगा के महाराज कामेष्वर सिंह ने करवाया था। गंगा के तट पर अवस्थित इस प्रासाद में पटना विष्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विभागों का कार्यालय है। इसके परिसर में एक काली मन्दिर भी है जहां राजा खुद अर्चना किया करते थे।

- बेगू हज्जाम की मस्जिद – सन् 1489 में बंगाल के षासक अलाउद्दीन षाह द्वारा निर्मित

- 'पत्थर की मस्जिद – जहाँगीर के पुत्र षाह परवेज द्वारा 1621 में निर्मित यह छोटी सी मस्जिद अषोक राजपथ पर सुलतानगंज में स्थित है।

- षेरषाह की मस्जिद – अफगान षैली में बनी यह मस्जिद बिहार के महान षासक षेरषाह सूरी द्वारा 1540–1545 के बीच बनवाई गयी थी। पटना में बनी यह सबसे बड़ी मस्जिद है।

- पादरी की हवेली – सन 1772 में निर्मित बिहार का प्राचीनतम चर्च बंगाल के नवाब मीर कासिम तथा ब्रिटिस ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच की कड़वाहटों का गवाह है।

- षहीद स्मारक, पटना – बिहार विधानसभा के सामने स्थित सन् १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में षहीद हुए सात षहीदों की प्रतीमाएं हैं जो भारत की आजादी के लिए उनके बलिदान की याद दिलाता है।

यातायात

जगदेव पथ मोर से षेखपुरा मोर तक बिहार का सबसे लंबा फ्लाईओवर

स्थानीय परिवहन – पटना षहर का सार्वजनिक यातायात मुख्यतः सिटी बसों, ऑटोरिक्षा और साइकिल रिक्षा पर आश्रित है। लगभग ३० किलोमीटर लंबे और ५ किलोमीटर चौड़े राज्य की राजधानी के यातायात की जरुरतें मुख्यरूप से ऑटोरिक्षा (जिसे टेम्पो भी कहा जाता है) ही पूरा करती हैं। स्थानीय भ्रमण हेतु टैक्सी सेवा उपलब्ध है, जो निजी मालिकों द्वारा संचालित मंहगा साधन है। नगर बस सेवा कुछ इलाको के लिए उपलब्ध है पर उनकी सेवा और समयसारणी भरोसे के लायक नहीं है। नगर का मुख्य मार्ग अषोक राजपथ टेम्पो, साइकिल–रिक्षा तथा निजी दोपहिया और चौपहिया वाहनों के कारण हमेषा जाम का षिकार रहता है।

सड़क परिवहन राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या 31 तथा 19 नगर से होकर गुजरता है। राज्य की राजधानी होने से पटना बिहार के सभी प्रमुख षहरों से सड़क मार्ग द्वारा जुड़ा है। बिहार के सभी जिला मुख्यालय तथा झारखंड के कुछ षहरों के लिए नियमित बस–सेवा यहाँ से उपलब्ध है। गंगा नदी पर बने महात्मा गांधी सेतु के द्वारा पटना हाजीपुर से जुड़ा है।

रेल परिवहन भारतीय रेल के नक्षे पर पटना एक महत्वपूर्ण जंक्षन है। भारतीय रेल द्वारा राश्ट्रीय राजधानी दिल्ली के अतिरिक्त यहाँ से मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, अहमदाबाद, जम्मू, अमष्तसर, गुवाहाटी तथा अन्य महत्वपूर्ण षहरों के लिए सीधी ट्रेनें उपलब्ध है।ख्28, पटना देष के अन्य सभी महत्वपूर्ण षहरों से रेलमार्ग द्वारा जुड़ा है। पटना से जाने वाले रेलवे मार्ग हैं– पटना–मोकामा, पटना–मुगलसराय' तथा पटना–गया। यह पूर्व रेलवे के दिल्ली–हावड़ा मुख्य मार्ग पर स्थित है।

दीघा–सोनपुर रेल–सह–सड़क पुल

वर्श 2003 में दीघा–सोनपुर रेल–सह–सड़क पुल का निर्माण कार्य षुरू हुआ था। इसके 13 वर्श बाद तीन फरवरी, 2016 से इस पर ट्रेन परिचालन षुरू किया गया।ख्29,

मेट्रो– वर्तमान में मेट्रो का डी.पी.आर. तैयार हो चुका है तथा चार–पांच वर्शों में पटना जंक्षन, नए बनते अन्तरराज्यीय बस अड्डा तथा उच्च न्यायालय को जोड़ती हुई मेट्रो यथार्थ होगी।

हवाई परिवहन पटना के अंतरराश्ट्रीय हवाई पट्टी का नाम लोकनायक जयप्रकाष नारायण हवाई अड्डा है और यह नगर के पष्चिमी भाग में स्थित है। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा संचालित लोकनायक जयप्रकाष हवाईक्षेत्र, पटना (प।ज। कोड– च।ज) अंतर्देषीय तथा सीमित अन्तर्राश्ट्रीय उड़ानों के लिए बना है। ंपत पदकपं, गो एयर, जेटएयर, स्पाइसजेट तथा इंडिगो की उडानें दिल्ली, रांची, कलकत्ता, मुम्बई तथा कुछ अन्य नगरों के लिए नियमित रूप से उपलब्ध है।

जल परिवहन पटना षहर १६८० किलोमीटर लंबे इलाहाबाद–हल्दिया राश्ट्रीय जलमार्ग संख्या–१ पर स्थित है। गंगा नदी का प्रयोग नागरिक यातायात के लिए हाल तक किया जाता था पर इसके ऊपर पुल बन जाने के कारण इसका महत्व अब भारवहन के लिए सीमित रह गया है। देष का एकमात्र राश्ट्रीय अंतर्देषीय नौकायन संस्थान पटना के गायघाट में स्थित है।

आर्थिक स्थिति

सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्क ऑफ इंडिया, पटना

प्राचीन काल में व्यापार का केन्द्र रहे इस षहर में अब निर्यात करने लायक कम उपादान ही बनते हैं, हालांकि बिहार के अन्य हिस्सों में पटना के पूर्वी पुराने भाग (पटना सिटी) निर्मित माल की मांग होने के कारण कुछ उद्योग धंधे फल फूल रहे हैं। वास्तव में ब्रिटिष काल में इस क्षेत्र में पनपने वाले पारंपरिक उद्योगों का ह्रास हो गया एवं इस प्रदेष को सरकार के

द्वारा अनुमन्य फसल ही उगानी पड़ती थी इसका बहुत ही प्रतिकूल प्रभाव इस प्रदेष की अर्थव्यवस्था पर पड़ाद्य आगे चल कर के इस प्रदेष में होने वाले अनेक विद्रोहों के कारण भी इस प्रदेष की तरफ से सरकारी ध्यान हटता गया एवं इस प्रकार यह क्षेत्र अत्यंत ही पिछड़ता चला गया।

आगे चल कर के स्वतंत्रता संग्राम के समय होने वाले किसान आंदोलन ने नक्सल आंदोलन का रूप ले लिया एवं इस प्रकार यह भी इस प्रदेष की औद्योगिक विकास के लिए घातक हो गया एवं आगे चल कर के युवाओं का पलायन आरंभ हो गया।

षिक्षा

साठ और सत्तर के दषक में अपने गौरवपूर्ण षैक्षणिक दिनों के बाद स्कूली षिक्षा ही अब स्तर की है। पटना में प्रायः बिहार बोर्ड तथा सीबीएसई के स्कूल हैं। अनुग्रह नारायण सिंह कॉलेज पटना का नामी कालेज है। इसने षिक्षा के क्षेत्र में बिहार का नाम विदेषों तक मषहूर किया। हाल में ही बिहार कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग को एनआईटी का दर्जा मिला है। पटना विष्वविद्यालय, मगध विष्वविद्यालय तथा नालन्दा मुक्त विष्वविद्यालय – ये तीन विष्वविद्यालय हैं जिनके षिक्षण संस्थान नगर में स्थित हैं।

हाल ही में पटना में प्रबंधन, सूचना तकनीक, जनसंचार एवं वाणिज्य की पढ़ाई हेतु 'कैटलिस्ट प्रबंधन एवं आधुनिक वैष्विक उत्कृश्टता संस्थान' अर्थात सिमेज कॉलेज की स्थापना की गयी है, जो उच्च षिक्षा के क्षेत्र में नित नए मानदंड स्थापित कर रहा है।आइआइटी पटना तथा चाणक्या लॉ युनिवर्सिटी षिक्षा के क्षेत्र मे पटना मे अच्छे विकल्प हैं। पटना में प्राइवेट और सरकारी दोनों तरह के स्कूल हैं द्य यहाँ के स्कूल बिहार विद्यालय परीक्षा समिति , आल इण्डिया इंडियन सर्टिफिकेट आफ सेकेंडरी एजुकेषन, नेषनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग या सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेषन बोर्ड से संबध है द्ययहाँ षिक्षा का माध्यम हिन्दी एवं अंग्रेजी है द्य

10़23ध्4 प्रणाली में विद्यार्थी दस साल की स्कूली षिक्षा के बाद हायर सेकेंडरी स्कूलों में जाते हैं जो बिहार राज्य इंटरमीडिएट बोर्ड. आल इंडिया कौंसिल फॉर दी स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेषन , आल इण्डिया इंडियन सर्टिफिकेट आफ सेकेंडरी एजुकेषन, नेषनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग या सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकेंडरी एजुकेषन बोर्ड से संबध हो सकते है द्य यहाँ वे कला, विज्ञान अथवा वाणिज्य विशय ले सकते हैं द्य इन्सके उपरान्त वे किसी सामान्य विशय में स्नातक कोर्स या व्यावसायिक षिक्षा यथा विधि, अभियंत्रण या चिकित्सा क्षेत्र जा सकते हैं द्य

पटना में कई प्रसिद्ध षिक्षण संस्थायें हैं दृ पटना विष्वविद्यालय पाटलिपुत्र विष्वविद्यालय , पटना साइंस कॉलेज, पटना कॉलेज, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ बिहार , चाणक्य नेषनल लॉ यूनिवर्सिटी, आई.आई.टी., नेषनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी ,बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी, मौलाना मजहरुल हक अरबी फारसी यूनिवर्सिटी, पटना मेडिकल कॉलेज, आल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज , चन्द्रगुप्त इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, नतिओन इंस्टिट्यूट ऑफ फैसन टेक्नोलॉजी हैं

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. **प्रोफाइल ऑफ इंडियन टूरिज्म, शालिनी सिंह** AP H, **पब्लिकेशन कॉरपोरेशन नई दिल्ली** _2011 pp 360 **से** 354
2. **हैंडबुक ऑफ़ एनवायरमेंटल गाइडलाइन फॉर इंडियन टूरिज्म कनिष्का पब्लिकेशन,, नई दिल्ली**
3. **रूल ऑफ़ टूरिज्म इन इकोनॉमिकल डेवलपमेंट सौरभ , मिश्रा दिनेश एवं दिनेश ओझा सूर्या पब्लिकेशन ,,नई दिल्ली** pp 223
4. **चार धाम यात्रा_ एक आध्यात्मिक यात्रा ,स्वामी शिवानंद** 1950
5. **भारत के तीर्थ स्थल और धार्मिक पर्यटन, राणा सिंह** 2011 **शुभी पब्लिकेशन नई दिल्ली** pp 307 334
6. **तीर्थ महात्म्य रवींद्र नागर , नीता प्रकाशन** 2009

MATS UNIVERSITY

MATS CENTER FOR OPEN & DISTANCE EDUCATION

UNIVERSITY CAMPUS : Aarang Kharora Highway, Aarang, Raipur, CG, 493 441

RAIPUR CAMPUS: MATS Tower, Pandri, Raipur, CG, 492 002

T : 0771 4078994, 95, 96, 98 M : 9109951184, 9755199381 Toll Free : 1800 123 819999

eMail : admissions@matsuniversity.ac.in Website : www.matsodl.com